YouTube kanwhizztimes
Facebook @kanwhizztimes lucknow
Twitter @kanwhizztimes
www.kanwhizztimes.com

कैनविज टाइम्स
सिर्फ सच

वर्ष-13 | अंक-299 | शुक्रवार, 29 नवम्बर 2024 | नगर संस्करण | लखनऊ से प्रकाशित एवं दिल्ली, पंजाब और उत्तराखंड में प्रसारित | मूल्य- ₹ 3.00 | पृष्ठ-12

यात्री सुविधाओं में स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली 'कवच', तेज गति, पूरी तरह से सीलबंद गैंगवे, स्वचालित प्लग डोर, बेहतर आरामदेह सवारी, हॉट केस के प्रावधान के साथ मिनी पेंट्री, बोतल कूलर, डीप फ्रीजर और गर्म पानी बॉयलर आदि हैं। **अश्विनी वैष्णव**

बदलते परिदृश्य में हर स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहे सेना : द्रौपदी मुर्मु 11

इजरायल की तरह हिंदुओं को भी बनाना चाहिए सनातन वैदिक राष्ट्र : नरसिंहानंद 12

संक्षेप

रेरा अपीलीय अधिकरण में देविंदर सदस्य बने

लखनऊ। राज्य सरकार ने भू-संपदा अपीलीय अधिकरण लखनऊ में सदस्य तकीनकी पद पर देविंदर सिंह को नियुक्त किया है। प्रमुख सचिव आवास पी गुरुप्रसाद ने इस संबंध में गुरुवार को अधिसूचना जारी की। रेरा अपीलीय अधिकरण में बिल्डरों के मामले की सुनवाई में तकनीकी पक्षों की सुनवाई करेंगे।

लश्कर-ए-तैयबा आतंकी सलमान खान प्रत्यर्पित कर लाया गया भारत

नई दिल्ली। लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) के एक प्रमुख भगोड़े आतंकी सलमान रहमान खान को राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) सीबीआई के साथ समन्वय करते हुए गुरुवार को रवांडा से प्रत्यर्पित कर भारत ले आई। एनआईए के मुताबिक सलमान को 27 नवंबर को रवांडा जांच ब्यूरो (आरआईबी), इंटरपोल और एनसीबी की सहायता से एनआईए ने हिरासत में लिया और आज सुबह भारत लाया गया। बेंगलुरु की एनआईए स्पेशल कोर्ट ने उनके खिलाफ गिरफ्तारी का गैर-जमानती वारंट जारी किया था। इंटरपोल के रेड नोटिस के बाद सलमान को किगाली, रवांडा में अधिकारियों ने पकड़ा था। एनआईए जांच से पता चला था कि सलमान पहले पोक्सो मामले में (2018-2022) जेल में बंद रहा। यहां आतंकी मामले में आजीवन कारावास की सजा पाए टी. नसीर ने उसे कट्टरपंथी बनने और भर्ती होने के प्रेरित किया। इसके बाद उसने अन्य आतंकियों के लिए विस्फोटक जुटाने और वितरण करने में मदद की। आतंकी साजिश व मॉड्यूल का भंडाफोड़ होने के बाद सलमान देश छोड़कर भाग गया था।

भारतीय संस्कृति विश्व स्तर पर गूंज रही है: मोदी

नयी दिल्ली। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने विभिन्न देशों में भारतीय संस्कृति की प्रस्तुतियों का एक वीडियो संकलन साझा करते हुए बृहस्पतिवार को कहा कि भारतीय संस्कृति विश्व स्तर पर गूंज रही है।
प्रधानमंत्री मोदी की विदेश यात्राओं के दौरान अक्सर पारंपरिक भारतीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों की प्रस्तुति की झलक देखने को मिलती है।
उन्होंने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में कहा, ''भारतीय संस्कृति विश्व स्तर पर गूंज रही है। मैं जहां भी जाता हूं, मुझे अपने इतिहास और संस्कृति के प्रति अपार उत्साह दिखाई देता है, जो बेहद खुशी की बात है। वीडियो में लोगों को ऑस्ट्रिया में 'वंदे मातरम' गाते और पोलैंड और मास्को (रूस) में गरबा, कजान (रूस) में ढोलिडा, भूटान में डांडिया रास, सिंगापुर में भरतनाट्यम और लाओस और ब्राजील में रामायण गाते हुए दिखाया गया है। इसमें भूटान के कलाकार भी शामिल थे, जो प्रधानमंत्री का उल्लेख करते हुए एक गीत गा रहे हैं।

सत्ता का आनंद ले रही यूपी पुलिस : सुप्रीम कोर्ट

- यूपी पुलिस को सुप्रीम कोर्ट ने दी संवेदनशील बनने की नसीहत
- कोर्ट ने अनुराग दुबे मामले में सुनवाई करते हुए की टिप्पणी

एजेंसी

नई दिल्ली। यूपी पुलिस के काम करने और केस को निपटाने के तरीके पर सुप्रीम कोर्ट भड़क गया। यूपी पुलिस को सख्त लहजे में चेतावनी देते हुए सुप्रीम कोर्ट ने कहा, अगर याचिकाकर्ता को छुआ गया तो ऐसा आदेश पारित करेंगे कि डीजीपी को जिंदगी भर याद रहेगा। कोर्ट ने कहा, यूपी पुलिस सत्ता का आनंद ले रही है, उसे संवेदनशील बनाने की जरूरत है। यूपी पुलिस खतरनाक क्षेत्र में प्रवेश कर रही है। गैंगस्टर अनुराग दुबे की गिरफ्तारी से पहले जमानत अर्जी की सुनवाई के दौरान जस्टिस सूर्यकांत और जस्टिस उज्जवल भुइयां ने यह टिप्पणी की।

जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि यूपी पुलिस 'खतरनाक क्षेत्र में प्रवेश कर रही है। उन्होंने कहा कि तथ्यों से जाहिर है कि याचिकाकर्ता दुबे पुलिस के समक्ष जांच में शामिल होने के लिए इसलिए पेश नहीं हो रहे हैं क्यों कि उसे डर है कि उसके खिलाफ कोई अन्य मामला भी दर्ज कर लिया जाएगा। पीठ ने कहा कि 'याचिकाकर्ता दुबे को पुलिस के समक्ष पेश नहीं हुआ क्योंकि उसे पता है कि आप (यूपी पुलिस) एक और झूठा मामला दर्ज करेंगे और उसे वहां गिरफ्तार कर लेंगे। जस्टिस कांत ने यूपी पुलिस के वकील से कहा कि आप अपने पुलिस महानिदेशक (डीजीपी) को बता सकते हैं कि जैसे ही याचिकाकर्ता दुबे को छुआ जाएगा, हम ऐसा कठोर आदेश पारित करेंगे कि उन्हें पूरी जिंदगी याद रहेगा।

पीठ ने कहा कि हर बार आप उसके खिलाफ एक नई एफआईआर लेकर आते हैं। अभियोजन पक्ष कितने मामलों को बरकरार रख सकता है? जमीन हड़पने का आरोप लगाना बहुत आसान है। उन्होंने यूपी पुलिस से सवाल किया कि कोई व्यक्ति जिसने पंजीकृत बिक्री विलेख द्वारा खरीदा है, आप उसे जमीन हड़पने वाला कहते हैं, यह दीवानी विवाद है या आपराधिक? हम केवल यह बता रहे हैं कि आपकी पुलिस किस खतरनाक क्षेत्र में प्रवेश कर रही है और वे इसका आनंद ले रहे हैं। उन्होंने कहा कि कौन सत्ता से चूकना चाहेगा? अब आप दीवानी न्यायालय की शक्ति ग्रहण कर रहे हैं, इसलिए आप इसका आनंद ले रहे हैं। सुप्रीम कोर्ट ने यह तल्ख टिप्पणी तब की जब, यूपी पुलिस की ओर से अधिवक्ता राणा मुखर्जी ने इस अदालत के पिछले आदेश के बाद, याचिकाकर्ता को नोटिस भेजा गया था, लेकिन वह जांच अधिकारी के सामने पेश होने के बजाय एक हलफनामा भेजा। इस पर जस्टिस कांत ने कहा कि शायद याचिकाकर्ता इस डर में जी रहा है कि यूपी पुलिस उसके खिलाफ एक और झूठा मामला दर्ज कर देगी। इसके बाद पीठ ने आदेश दिया कि याचिकाकर्ता जांच अधिकारी द्वारा उसके मोबाइल फोन पर भेजे गए किसी भी नोटिस का पालन करे। साथ ही कहा कि सुप्रीम कोर्ट की अनुमति के बगैर पुलिस याचिकाकर्ता दुबे को हिरासत में नहीं लेगी।

इससे पहले, सुप्रीम कोर्ट ने आईपीसी की धारा 323, 386, 447, 504 और 506 के तहत दर्ज मामले को रद्द करने की मांग को लेकर दाखिल दुबे की याचिका पर विचार करने से इनकार कर दिया था।

हालांकि बाद में याचिकाकर्ता दुबे के खिलाफ दर्ज अन्य मामलों और आरोपों की प्रकृति को देखते हुए, शीर्ष अदालत ने मामले में नोटिस जारी कर जवाब मांगा था। पीठ ने पुलिस से पूछा था कि आरोपी को अग्रिम जमानत क्यों न दे दी जाए।

सुनवाई के दौरान याचिकाकर्ता दुबे के वकील से पीठ द्वारा पूछे गए सवालों का जवाब देते हुए कहा कि उनके पास इस संबंध में कोई निर्देश नहीं है। साथ ही कहाकि दुबे ने पुलिस अधिकारियों को अपना मोबाइल नंबर दिया है, ताकि वे उसे सूचित कर सकें कि उसे कब और कहां पेश होना है। सुप्रीम कोर्ट ने यूपी पुलिस को निर्देश दिया कि आरोपी को जांच में शामिल होने दें, लेकिन इस अदालत की अनुमति के बगैर उसे गिरफ्तार न करें। पीठ ने पुलिस से कहा कि यदि आपको लगता है कि किसी विशेष मामले में गिरफ्तारी की आवश्यकता है, तो आप पहले सुप्रीम कोर्ट आकर उसका उचित कारण बताए।

स्कूल संबंधी उपायों को छोड़कर जीआरएपी-4 के तहत सभी पाबंदियां दो दिसंबर तक जारी रहेंगी: न्यायालय

नयी दिल्ली। उच्चतम न्यायालय ने राष्ट्रीय राजधानी में वायु प्रदूषण से निपटने के लिए चरणबद्ध प्रतिक्रिया कार्ययोजना (जीआरएपी)-4 के तहत आपात उपायों में छूट देने से बृहस्पतिवार को इनकार कर दिया और इन्हें दो दिसंबर तक जारी रखने का आदेश दिया। न्यायमूर्ति अभय एस. ओका और न्यायमूर्ति ऑगस्टीन जॉर्ज मसीह की पीठ ने कहा कि 'कोर्ट कमिश्नर' द्वारा प्रस्तुत दूसरी ● शेष पेज 11 पर

निजीकरण के लिए बिजली की पांच नई कंपनियां बनेगीं

कैनविज टाइम्स ब्यूरो

- पांच कंपनियों बनने से कई निवेशक आएंगे, प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी
- सेवा शर्तें, वेतन आदि के बारे में स्पष्ट प्राविधान रहेगा

लखनऊ। उत्तर प्रदेश पावर कारपोरेशन प्रबंधन ने पूर्वांचल व दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम को तोड़कर पांच नई कंपनियां बनाने पर सहमति जताई है। पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम को तोड़कर तीन नई कंपनियां और दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम को तोड़कर दो नई कंपनियां बनाई जाएंगी। इन नई कंपनियों में प्रत्येक के पास करीब 30-35 लाख उपभोक्ता होंगे। ऐसा होने पर किसी एक निजी घराने (कंपनी) के एकाधिकार की आशंका समाप्त हो जाएगी।

पावर कारपोरेशन मुख्यालय शक्तिभवन में कारपोरेशन के चेयरमैन डा. आशीष कुमार गोयल की अध्यक्षता में उच्च प्रबंधन की दिन भर चली बैठक में उपरोक्त बातों पर सहमति बनी। सबसे कहा कि निजी क्षेत्र से साझेदारी के लिए पूर्वांचल व दक्षिणांचल विद्युत वितरण निगम को पांच हिस्सों में बांटना ही श्रेयस्कर रहेगा।

पांच कंपनियां बन जाने पर कई निजी निवेशक आगे आएंगे और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा का माहौल बनेगा। नई कंपनियों की सीमाएं इनके मंडलों और जिलों में इस प्रकार व्यवस्थित की जाएंगी कि इनके प्रशासनिक नियंत्रण में सुविधा हो। प्रत्येक कंपनी में बड़े नगर के साथ ही नगरीय व ग्रामीण क्षेत्र रहेंगे। सूत्र बताते हैं कि संभव है कि पूर्वांचल विद्युत वितरण निगम में वाराणसी, गोरखपुर और प्रयागराज को केंद्र में रखते हुए तीन कंपनी बनाई जाएं। इसी प्रकार दक्षिणांचल में आगरा और झांसी को केंद्र में रखते हुए दो कंपनियां बनाई जाएं।

बैठक में तय किया गया कि रिफार्म के संबंध में होने वाले एग्रीमेंट में अधिकारियों-कर्मचारियों की सेवा शर्तें, वेतन, प्रोन्नति, टाईम स्केल आदि के बारे में स्पष्ट प्राविधान रहे। कार्मिकों के हितों का नुकसान न हों और उपभोक्ताओं को बेहतर सुविधाएं दी जाएं। चर्चा में यह भी बात आई कि कुछ लोगों द्वारा यह भ्रम फैलाया जा रहा है कि नई कंपनियों के सृजन के बाद इनमें कार्यरत अधिकारी व कर्मचारी पावर कारपोरेशन में वापस आ जाते हैं तो उनकी पदोन्नतियां बाधित हो जाएंगी। स्पष्ट किया गया है कि रिफार्म के बाद जितने भी अधिकारी व कर्मचारी पावर कारपोरेशन में रहेंगे उनकी पदोन्नति के पद इसी अनुपात में बने रहेंगे। किसी भी स्तर पर पदोन्नति में अवसरों की कमी नहीं होगी। अधिकारियों/कर्मचारियों का हित सुरक्षित रहेगा। सेवा शर्तें, सेवानिवृत्ति लाभ आदि में कोई कमी नहीं की जाएगी। अधिकारी कर्मचारियों को तीन विकल्प दिए जाएंगे (एक) उसी स्थान पर बने रहें। (दो) किसी अन्य कंपनी में चले जाएं। (तीन) आकर्षक स्वैच्छित ● शेष पेज 11 पर

हेमंत सोरेन ने झारखंड के 14वें मुख्यमंत्री के रूप में ली शपथ

एजेंसी

रांची। झारखंड के राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने गुरुवार शाम 4.11 बजे हेमंत सोरेन को मुख्यमंत्री के रूप में पद और गोपनीयता की शपथ दिलायी। हेमंत सोरेन ने राज्य के 14वें मुख्यमंत्री के रूप में शपथ ली है। यह उनका मुख्यमंत्री के रूप में यह चौथा कार्यकाल होगा। शपथ ग्रहण समारोह को लेकर मोरहाबादी मैदान पर सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए गए थे।

नगर के मोहराबादी मैदान पर आयोजित शपथ ग्रहण समारोह में राज्यपाल संतोष गंगवार के मंच पर पहुंचने के बाद राष्ट्रगान हुआ। इसके बाद राज्यपाल संतोष कुमार गंगवार ने हेमंत सोरेन को मुख्यमंत्री पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। शपथ ग्रहण समारोह के दौरान मंच पर हेमंत सोरेन के पिता शिबू सोरेन एवं मां रूपी सोरेन मौजूद रहीं। पिता के ठीक बगल में हेमंत सोरेन तो उनकी मां के बगल में पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी मौजूद बैठी थी। मंच पर हेमंत सोरेने के बगल में कंग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, विपक्ष के नेता राहुल गांधी बैठे। गांधी के ठीक बगल में हेमंत सोरेन की पत्नी व विधायक कल्पना सोरेन मौजूद रहीं। इसके अलावा अखिलेश यादव, तेजस्वी यादव, अरविंद केजरीवाल समेत इंडी गठबंधन के राष्ट्रीय व प्रदेश स्तरीय तमाम नेता मौजूद रहे। यह मंच इंडी गठबंधन की एकजुटता का एहसास करा रहा था। उल्लेखनीय है कि झारखंड विधानसभा चुनाव ● शेष पेज 11 पर

मानव तस्करी के खिलाफ एनआईए की 6 राज्यों में 22 स्थानों पर छापेमारी

नई दिल्ली। राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) ने मानव तस्करी के खिलाफ बड़ी कार्रवाई करते हुए गुरुवार को छह राज्यों में 22 स्थानों पर छापेमारी की है। यह कार्रवाई बिहार, उत्तर प्रदेश और दिल्ली सहित कई अन्य स्थानों पर आज सुबह-सुबह शुरू हुई और स्थानीय पुलिस बलों के साथ समन्वय करके तलाशी अभियान चलाए गए। अधिकारियों के अनुसार तलाशी में संगठित तस्करी नेटवर्क से जुड़े व्यक्तियों और संगठनों पर ध्यान केन्द्रित किया गया। एनआईए ने विशिष्ट खुफिया सूचनाओं के आधार पर ऑपरेशन शुरू किये। यह अभियान एक अंतरराष्ट्रीय मानव तस्करी गिरोह की जांच का हिस्सा है, जिसमें विदेशी संलिप्तता होने की आशंका है। सूत्रों के अनुसार बिहार के गोपालगंज जिले के कई लोगों को विदेश में नौकरी दिलाने के बहाने बहला-फुसलाकर फर्जी कॉल सेंटरों में ले जाया गया, जहां उन्हें साइबर धोखाधड़ी योजनाओं पर काम करने के लिए मजबूर किया गया। एनआईए को इस रैकेट में म्यांमार और लाओस से जुड़े होने का ● शेष पेज 11 पर

वक्फ पर जेपीसी का कार्यकाल बढ़ा

एजेंसी

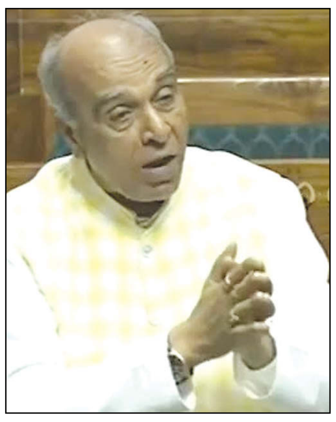

नई दिल्ली। लोकसभा और राज्यसभा की कार्यवाही गुरुवार को भी विपक्ष के हंगामें की भेंट चढ़ गई। दोनों सदनों में अडानी रिश्वत और संभल मामले पर हुए हंगामे के चलते पहले कार्यवाही 12 बजे और बाद में दिनभर के लिए स्थगित कर दी गई।

लोकसभा में आज कंग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी और नांदेड़ सांसद रवीन्द्र चव्हाण ने सदस्यता की शपथ ली। इसके बाद कार्यवाही 12 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई। दोपहर में दोबारा कार्यवाही शुरू होने पर भी विपक्ष का हंगामा जारी रहा। नतीजतन, कार्यवाही को दिनभर के लिए स्थगित कर दिया गया। लोकसभा में आज ध्वनिमत से वक्फ (संशोधन) विधेयक 2024 पर बनी संसद की संयुक्त संसदीय समिति का कार्यकाल बजट सत्र के अंतिम दिन तक बढ़ाये जाने का प्रस्ताव पारित किया गया। प्रस्ताव को समिति के अध्यक्ष जगदंबिका पाल की ओर से रखा गया। इस दौरान संसदीय कार्यमंत्री किरण रिजिजू ने लोकसभा की कार्यवाही नहीं चलने देने के लिए विपक्ष की निंदा की। उन्होंने कहा कि कार्यमंत्रणा समिति की बैठक में सभी सदस्य विधेयकों पर चर्चा करने और कामकाज को ठीक से चलने देने के लिए राजी हुए थे। हालांकि यहां हंगामा हो रहा है। उन्होंने वक्फ संबंधित समिति का कार्यकाल बढ़ाये जाने के दौरान भी विपक्ष के हंगामा करने की निंदा की। उन्होंने कहा कि सर्वसम्मति से समिति का कार्यकाल बढ़ाये जाने पर सहमति बनी थी लेकिन प्रस्ताव पर मतदान के दौरान विपक्ष हंगामा कर रहा है। इससे पहले लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने विपक्ष को संविधान की 75वीं वर्षगांठ का ध्यान दिलाते हुए कहा कि संविधान सभा में भी असहमति थी और बहस हुई हैं लेकिन इस तरह का हंगामा ठीक नहीं है। उन्होंने कहा कि संविधान के 75 वर्षों के दौरान संविधान सभा में भी बहसें हुईं, असहमति और सहमति भी बनीं लेकिन सभी ने मर्यादित आचरण बनाए रखा। वे विपक्ष को हर मुद्दे पर पर्याप्त समय और अवसर देंगे। इस बीच राज्यसभा में भी कार्यवाही बाधित रही। सुबह कार्यवाही की शुरुआत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने श्री चित्रा तिरुनल इंस्टीट्यूट फॉर मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी, तिरुवनंतपुरम में चुनाव के लिए प्रस्ताव पेश किया जिसे राज्यसभा ने स्वीकृत कर दिया । राज्यसभा की कार्यवाही को पहले 12 बजे तक के लिए स्थगित किया गया। उसके बाद कार्यवाही शुरू होने पर विपक्ष ने हंगामा शुरू कर दिया। नतीजतन, सदन की कार्यवाही दिनभर के लिए स्थगित कर दी गई। इस दौरान सभापति जगदीप धनखड़ ने कहा कि हमारी राष्ट्रीय भावना सदन से गूंजनी चाहिए। ● शेष पेज 11 पर

नौसेना ने पनडुब्बी अरिघाट से के-4 दागकर दिखाई समुद्री ताकत

एजेंसी

- बंगाल की खाड़ी में 3,500 किमी. की मारक क्षमता वाली मिसाइल का परीक्षण कामयाब

नई दिल्ली। भारत ने नौसेना में शामिल की गई परमाणु पनडुब्बी अरिघाट से परमाणु मिसाइल के-4 दागकर सफल परीक्षण पूरा कर लिया है। पनडुब्बी-लॉन्च बैलिस्टिक मिसाइल (एसएलबीएम) का यह परीक्षण विशाखापट्टनम के पास बंगाल की खाड़ी में किया गया। हाल ही में कमीशन की गई आईएनएस अरिघाट से 3,500 किलोमीटर की मारक क्षमता वाली परमाणु सक्षम मिसाइल के-4 का परीक्षण भारतीय नौसेना की प्रतिरोधक क्षमताओं का महत्वपूर्ण विकास दर्शाता है।

परमाणु ऊर्जा से चलने वाली बैलिस्टिक मिसाइल पनडुब्बी आईएनएस अरिघाट 29 अगस्त को भारतीय नौसेना के बेड़े में शामिल की गई थी। हिंद महासागर क्षेत्र में चीन के तेजी से बढ़ते कदमों के बीच परमाणु मिसाइलों से लैस पनडुब्बी मिलने से नौसेना की समुद्री सामरिक क्षमता मजबूत हुई है। साथ ही भारत को 'पानी के युद्ध' में और अधिक मिसाइलें ले जाने की क्षमता मिल गई है। इसी ताकत को परखने के लिए भारत ने 6,000 टन की पनडुब्बी अरिघाट से अपनी परमाणु सक्षम के-4 पनडुब्बी लॉन्च बैलिस्टिक मिसाइल का सफल परीक्षण किया है।

हालांकि, इस परीक्षण की कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं हुई है लेकिन रक्षा सूत्रों ने गुरुवार को बताया कि विशाखापट्टनम के तट पर बंगाल की खाड़ी में बुधवार को सुबह अभ्यास के हिस्से के रूप में के-4 मिसाइल को लॉन्च किया गया। ठोस ईंधन से संचालित के-4 मिसाइल की मारक क्षमता 3,500 किलोमीटर है। इससे पहले के-4 मिसाइल का परीक्षण केवल सबमर्सिबल पोंटून से ही किया गया था, इसलिए नौसेना में शामिल होने के बाद पूरी तरह से चालू पनडुब्बी से यह प्रक्षेपण भारत की नौसेना क्षमताओं के लिए महत्वपूर्ण मील का पत्थर बन गया है। सूत्रों के मुताबिक परीक्षण के परिणामों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया जाएगा, ताकि यह ● शेष पेज 11 पर

चित्रकूट के भौतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए सरकार प्रतिबद्ध : योगी

एजेंसी

चित्रकूट। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गुरुवार को कहा कि उनकी सरकार पौराणिक नगरी चित्रकूट के भौतिक और आध्यात्मिक विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

एक दिवसीय दौरे पर चित्रकूट पहुंचे श्री योगी ने जन प्रतिनिधियों और अधिकारियों के साथ बैठक कर विकास एवं कानून व्यवस्था की समीक्षा की। बाद में वह श्री महाराजाधिराज मतगजेंद्र नाथ शिव मंदिर पहुंचे, जहां उन्होंने विधि-विधान से भगवान शिव की पूजा-अर्चना की। योगी यहां से सीधे रामघाट पहुंचे, जहां उन्होंने मां मंदाकिनी के तट पर खड़े होकर इस पवित्र नदी की आरती उतारी और प्रदेश वासियों के सुख-समृद्धि की कामना की। मुख्यमंत्री मां मंदाकिनी की पांच अर्चकों द्वारा होने वाली दैनिक आरती में भी शामिल हुए। मुख्यमंत्री ने कहा कि जहां कभी भगवान श्रीराम ने संत तुलसीदास जी को दर्शन दिया था, आज उस पवित्र स्थल का दर्शन और पूजन करना उनके लिए सौभाग्य का विषय है। उन्होंने कि चित्रकूट के भौतिक विकास और आध्यात्मिक उन्नयन के लिए सरकार पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। यह सनातन धर्म का पौराणिक तीर्थ है। प्रभु श्रीराम ने वनवास काल में सर्वाधिक समय इसी चित्रकूट में व्यतीत किया था। अति प्राचीन काल से ही ऋषि-मुनियों और अनेक तपोनिष्ठ संतों ने इसी चित्रकूट धाम में रहकर अपनी आध्यात्मिक साधना को नई ऊंचाइयां प्रदान की हैं। आज हमारा सौभाग्य है कि संतों के सानिध्य में इस चित्रकूट धाम के लिए कुछ करने का सौभाग्य हमारी डबल इंजन की सरकार को प्राप्त हुआ है। योगी ने बताया कि वह मध्याह्न में चित्रकूट धाम पहुंचे हैं और यहां समीक्षा बैठक व एक-दो कार्यों का निरीक्षण करने के उपरांत यहां रामघाट पर मां मंदाकिनी के सानिध्य में पूजन दर्शन का सौभाग्य उन्हें मिला है। उन्होंने कहा कि चित्रकूट धाम को उसकी पौराणिक और ऐतिहासिक पहचान दिलाने के लिए प्रदेश सरकार प्रतिबद्ध है। मां मंदाकिनी की अविरलता और सुंदरता के साथ ही रामघाट के सुंदरीकरण के लिए सरकार ने पहले ही पैसा उपलब्ध ● शेष पेज 11 पर

उत्तर प्रदेश पिछड़ा वर्ग राज्य आयोग की मासिक बैठक, कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा के साथ सम्पन्न

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश पिछड़ा वर्ग राज्य आयोग की बैठक गुरुवार को आयोग के अध्यक्ष राजेश वर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस महत्वपूर्ण बैठक में आयोग के उपाध्यक्ष सोहन लाल श्रीमाली, अन्य सदस्यगण और सचिव मनोज कुमार सागर की उपस्थिति रही। बैठक में अन्य पिछड़ा वर्ग की जातियों के सम्मिलन निष्कासन, उनके उत्थान और विकास से संबंधित विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श करते हुए कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।बैठक में सर्वप्रथम ''केश कला बोर्ड'' के गठन का प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया।

यह मांग मनोज कटारिया द्वारा की गई, जिसमें प्रदेश के केश कला व्यवसाय से जुड़े लोगों के विकास और उनके कौशल को संरक्षित करने की आवश्यकता बताई गई। आयोग ने सर्वसम्मति से इस प्रस्ताव को स्वीकार करते हुए शासन को ''केश कला बोर्ड'' के गठन के लिए संस्तुति प्रेषित करने का निर्णय लिया। इसके अतिरिक्त, स्वर्णकार समाज की प्राचीन स्वर्ण एवं चांदी के आभूषण निर्माण कला के संरक्षण के लिए ''स्वर्ण कला आयोग'' के गठन का प्रस्ताव भी रखा गया, जिसे संजीव कुमार ने प्रस्तुत किया। इस प्रस्ताव को भी आयोग ने मंजूरी देते हुए शासन को संस्तुति भेजने का निर्णय लिया।शासकीय निर्माण कार्यों में अन्य पिछड़े वर्गों के लिए 27 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करने पर भी बैठक में चर्चा हुई।

आयोग ने इसे अत्यधिक आवश्यक मानते हुए सभी विभागों में इस आरक्षण व्यवस्था को लागू करने के लिए शासन को संस्तुति प्रेषित करने का निर्णय लिया। पिछड़े वर्ग के वृद्ध व्यक्तियों के जीवन स्तर को सुधारने के उद्देश्य से आयोग ने केंद्रीय सेक्टर योजना के तहत वृद्धाश्रमों के निर्माण की सिफारिश की, ताकि वृद्ध व्यक्तियों को बेहतर सुविधाएँ उपलब्ध कराई जा सकें।बैठक में खंगार जाति को अन्य पिछड़े वर्ग की सूची में सम्मिलित करने के संदर्भ में चर्चा हुई।

आयोग ने बताया कि इस विषय पर पूर्व में ही संस्तुति प्रेषित की जा चुकी है।

अब इस सिफारिश के संदर्भ में शासन को अनुस्मारक पत्र भेजने का निर्णय लिया गया। क्रीमीलेयर की आय सीमा बढ़ाने के प्रस्ताव पर भी विचार किया गया और इसे आगामी बैठक में प्रस्तुत करने का निर्णय लिया गया। नॉन-क्रीमीलेयर के प्रमाण-पत्र में संशोधन के संदर्भ में बैठक में निर्णय लिया गया कि इस विषय पर प्रस्ताव तैयार कर माननीय अध्यक्ष के समक्ष प्रस्तुत किया जाएगा। गोरखा समुदाय को अन्य पिछड़े वर्ग की सूची में सम्मिलित करने के प्रस्ताव पर विस्तृत चर्चा करते हुए।

आयोग ने निर्णय लिया कि जिलों से पुनः जानकारी प्राप्त की जाएगी। इसके बाद इस विषय पर विस्तृत सर्वेक्षण करने के लिए एक समिति गठित की जाएगी।बैठक में थानाध्यक्षों की तैनाती में आरक्षण व्यवस्था का अनुपालन सुनिश्चित करने के विषय पर भी चर्चा हुई। आयोग ने इसे पिछड़े वर्ग के प्रतिनिधित्व के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण मानते हुए शासन को इस संबंध में सिफारिश भेजने का निर्णय लिया गया।

प्रियंका गांधी के संसद पहुंचने से उत्साहित हैं कार्यकर्ता : अंशु अवस्थी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। कांग्रेस कमेटी की राष्ट्रीय महासचिव प्रियंका गांधी के वायनाड से जीतने के पश्चात देश की सक्रिय राजनीति में संसद में पहली बार पहुंचने पर संसद में प्रियंका गांधी के सदस्यता शपथ पर उत्तर प्रदेश कांग्रेस के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने प्रदेश कार्यालय ''नेहरू भवन'' लखनऊ में जश्न मनाया और एक दूसरे को मिठाई-लड्डू खिलाकर शुभकामनाएं दीं एवं पटाखे भी फोड़े गए। उप्र कांग्रेस के वरिष्ठ प्रवक्ता अंशु अवस्थी ने कहा कि देश के करोड़ों-करोड़ लोगों की और कांग्रेस कार्यकर्ताओं की बहुत पहले से यह मांग थी कि प्रियंका गांधी सक्रिय राजनीति में आएं, देश के लोग उनमें इंदिरा गांधी की छवि देखते हैं। देश के लोगों के अधिकारों के लिए उनका जो संघर्ष का जुझारूपन है, उनके अधिकारों के लिए लड़ने का तरीका है। वह इंदिरा गांधी की याद दिलाता है। आज हम सब कार्यकर्ता काफी उत्साहित हैं और निश्चित तौर से प्रियंका गांधी के संसद पहुंचने पर देश की आधी आबादी अर्थात महिलाओं की आवाज और मजबूती से देश की संसद में गूंजेगी और देश के युवाओं, किसानों, आम आदमी दलितों, पिछड़ों के हितों के सवाल मजबूती से प्रियंका गांधी जी द्वारा तानाशाह भाजपा मोदी सरकार के सामने उठेंगे। प्रियंका गांधी का संसद पहुंचना इस बात का प्रमाण है कि देश की राजनीति में महिलाओं की ताकत दिन पर दिन बढ़ रही है। जिसका श्रेय कांग्रेस पार्टी को जाता है। प्रदेश उपाध्यक्ष दिनेश सिंह ने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि प्रियंका गांधी देश के लोगों के लिए संघर्ष करने का दूसरा नाम है। देश के आम आदमी, किसानों, महिलाओं, दलितों पिछड़ों के हितों के लिए लड़ना चाहे वह उम्भा की घटना हो जहां आदिवासी लोगों के लिए प्रियंका गांधी गिरफ्तार हुईं, उनके हक की लड़ाई लड़ी, चाहे लखीमपुर की घटना हो, जहां किसानों के ऊपर केंद्रीय मंत्री के बेटे ने गाड़ी चढ़ाकर जान ले ली, उन पीड़ितों के लिए प्रियंका गांधी गिरफ्तार हुई, संघर्ष किया और परिणाम स्वरूप केंद्रीय मंत्री के बेटे को जेल जाना पड़ा। हाथरस की घटना जहां पर एक बेटी को जलाया गया। प्रियंका गांधी ने उनके हक की लड़ाई लड़ी, आजमगढ़ की घटना, ऐसी तमाम घटनाएं यह दिखाती हैं, की प्रियंका गांधी की जो कार्य शैली है, उससे देश के लोगों का उनके अधिकारों का हित जुड़ा है, अब निश्चित तौर से संसद में लोगों की आवाज और मजबूत होने जा रही है और प्रियंका गांधी का संसद में पहुंचना कांग्रेस के पुनरुत्थान की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है, इससे कार्यकर्ताओं में एक नई ऊर्ज़ा आएगी और पार्टी की कार्यशैली पर सकारात्मक असर पड़ेगा, जिसका फायदा कांग्रेस पार्टी को होगा।

आबकारी विभाग की मिलीभगत से बिक्री हो रही मिलावटी शराब

❑ मिलावटी शराब बिक्री कर ठीकेदार हो रहे मालामाल

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कोरांव प्रयागराज। कोरांव तहसील क्षेत्र के अधिकांश देशी व अंग्रेजी शराब की दुकानों पर ठीकेदारों द्वारा सेल्समैन सें मिलावटी शराब बिक्री कराकर अपनी जेब भरने के साथ साथ आबकारी विभाग की जेब भर कर खुद मालामाल हो रहे है मिलावटी शराब सें धीरे धीरे ग्राहकों का भरोसा टुटता जा रहा यदि समय रहते हुये मिलावटी शराब बिक्री मे सुधार नहीं हुआ तो राजश्व की क्षति हो सकता है।

लेकीन आबकारी विभाग के अधिकारी ठीकेदार पर मेहरबान है यदि कोई शिकायत भी करता है तो भ्रामक आख्या प्रेषित कर शिकायत का निस्तारण कर दिया जाता है बिना कोई जांच कार्रवाही किए जिससे शिकायत करने वालों का भी भरोसा टुटता जा रहा है हर महीने आबकारी विभाग को एक निश्चित धनराशि ठीकेदारों द्वारा सुविधा शुल्क पहुंचा दिया जाता है। जिससे कोई कार्रवाही नहीं करते इसके साथ साथ अधिकंाश ठिका पर उच्चाधिकारियो के निर्देश के बावजूद सीसीटीवी कैमरा नहीं लगा हुआ अधिकंाश लोग ठिका पर ही शराब खरीदकर वही पर बैठकर पीते है।

जिससे आने जाने वाले राहगीरों को काफी परेशानी होती है लेकीन ठीकेदार अपने नीजी स्वार्थ लाभ के चक्कर मे मना भी नहीं करते कई ऐसे भी शराब की दुकान ऐसे स्थान पर खोला गया है जिससे लोगो मे काफी आक्रोश ब्याप्त है शिकायत के बावजूद कोई कार्रवाही नहीं किया जा रहा उदाहरण के तौर पर हनुमानगंज मे एक शराब की दुकान मुख्य मार्ग पर है कई बार स्थानीय लोगो ने जनसुनवाई पोर्टल व 112 नंबर पुलिस सें शिकायत किया गया लेकीन आज तक कोई कार्रवाही संबधित जिम्मेदार द्वारा नहीं किया गया कई ऐसे गांव है जहाँ पर आबकारी विभाग की मिलीभगत सें बड़े पैमाने पर अवैध शराब की सप्लाई किया जा रहा है छोटे छोटे गरीब तपके के लोगो को पकड़कर वाहवाही लुटते है जो वास्तव मे बड़े पैमाने पर अवैध धंधा कर रहे है उनके विरुद्ध कार्रवाही नहीं करते चुकी वे अपनी सेटिंग बनाकर रखते है जिससे इसका असर युवा पीढ़ी पर भारी पड़ रहा है सामाजिक कार्यकर्ता पंडित महेंद्र प्रसाद शुक्ला ने आबकारी आयुक्त प्रयागराज का ध्यान आकृस्ट कराते हुये अवैध धंधा मे सलिप्त आबकारी विभाग के पुलिस कर्मियों पर जांच कार्रवाही की माँग की है।

गायत्री ज्ञान मंदिर का ज्ञान यज्ञ अभियान के अन्तर्गत में 427वाँ युगऋषि वाड्मय की स्थापना

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ । गायत्री ज्ञान मंदिर इंदिरा नगर, लखनऊ के विचार क्रान्ति ज्ञान यज्ञ अभियान के अन्तर्गत आर.पी.एस. कॉलेज ऑफ़ फार्मेसी, बबुरी गांव, बाराबंकी'' के केन्द्रीय पुस्तकालय में गायत्री परिवार के संस्थापक युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा रचित सम्पूर्ण 79 खण्डों का 427वाँ ऋषि वांड्मय की स्थापना कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। उपरोक्त साहित्य गायत्री परिवार की सक्रीय कार्यकर्त्री मधु अवस्थी एवं सच्चिदानन्द अवस्थी ने अपने पूज्य दादा ससुर एवं दादी सास स्व0 राधाकृष्ण अवस्थी एवं स्व0 सोमवती अवस्थी की स्मृति में भेंट किया तथा सभी छात्र-छात्राओं, संकाय सदस्यों, विभागाध्यक्षों एवं फार्मेसी के अधिकारीगणों को हिन्दी अखण्ड ज्योति पत्रिका भेंट की। इस अवसर पर वाड्मय स्थापना अभियान के मुख्य संयोजक उमानंद शर्मा ने कहा कि ऌऋषि साहित्य मानवीय जीवन के गरिमा का बोध कराता है।

उषा सिंह ने भी अपने विचार रखे, संस्थान के सहायक निदेशक श्री दीपक कुमार गौड़ ने धन्यवाद ज्ञापन किया अवसर पर उमानंद शर्मा उषा सिंह, मधु अवस्थी शकुन्तला त्रिपाठी, संसथान के चेयरमैन आर0 पी0 सिंह, चेयरमैन मैम रीना सिंह, प्रबन्ध निदेशक शिवांश प्रताप सिंह, सहायक निदेशक दीपक कुमार गौड़ संकाय सदस्य, चिकित्सकगण एवं छात्र-छात्रायें मौजूद थे।

वैभव प्रकाश को प्रदेश उपाध्यक्ष व देवेंद्र प्रताप सिंह को बनाया लखनऊ जिला अध्यक्ष

लखनऊ कैनविज टाइम्स संवाददाता। आम आदमी पार्टी शिक्षक प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष महेंद्र सिंह ने गुरुवार को जिला अध्यक्षों की नियुक्ति की घोषणा की। इस अवसर पर वैभव प्रकाश को प्रदेश उपाध्यक्ष और प्रीतिश बागे को प्रदेश सचिव के पद पर नियुक्त किया गया। महेंद्र सिंह ने बताया कि देवेंद्र प्रताप सिंह को लखनऊ, संजीव कुमार को फर्रुखाबाद, अंसार अहमद को बुलंदशहर, अमरीश श्रीवास्तव को गोंडा, हेम कुमार को मेरठ, प्रो. राम प्रसाद तिवारी को देवरिया, अशोक कुमार यादव को सहारनपुर, ऋषि कपूर यादव को गोरखपुर, राम संजीवन को प्रयागराज, चिंता चौधरी को संत कबीर नगर, अतुल सिंह को झांसी जिला अध्यक्ष घोषित किया गया। साथ ही सी के प्रसाद को लखनऊ का जिला महासचिव नियुक्त किया गया है। महेंद्र सिंह ने बताया कि वैभव प्रकाश पार्टी के सबसे कर्मठ और निष्ठावान कार्यकर्ताओं में से एक हैं। अन्ना आंदोलन की नींव से जुड़े वैभव प्रकाश ने शुरुआती दौर में पार्टी के लिए ज़मीनी स्तर पर काम करते हुए जनता के मुद्दों को उठाया और समाज के वंचित वर्गों की आवाज़ को बुलंद किया। वे न केवल प्रदेश सोशल मीडिया प्रभारी के रूप में प्रभावी कार्य कर चुके हैं, बल्कि प्रदेश संयुक्त सचिव और अवध प्रांत एससी/एसटी प्रकोष्ठ के अध्यक्ष भी रहे हैं। वहीं, लखनऊ के जिला अध्यक्ष देवेंद्र प्रताप सिंह महाराजा अग्रसेन इंटर कॉलेज, मोती नगर में प्रवक्ता हैं, और पिछले कई वर्षों से शिक्षक राजनीति में सक्रिय रहकर शिक्षक समुदाय की समस्याओं के समाधान हेतु संघर्षरत हैं। जिला महासचिव सी के प्रसाद गणित के क्षेत्र के एक सम्माननीय शिक्षक हैं। महेंद्र सिंह ने सभी नव नियुक्त पदाधिकारियों को बधाई दी।

नगराम : पति की 5 दिन बाद गुमशुदगी दर्ज करने पहुंची पत्नी

नगराम , लखनऊ कैनविज टाइम्स संवाददाता। बीते 22 नवंबर को नगराम क्षेत्र के देवी खेड़ा पुलिस चौकी के समीप सड़क दुर्घटना हुई थी , जिसमें एक अज्ञात युवक वाहन के चपेट में आ गया था और उसकी मौके पर ही दर्दनाक मौत हो गई थी , जिसमें मृतक की पत्नी पांच दिन बाद नगराम थाने गुमशुदगी दर्ज कराने पहुंची । पता चला कि उसके पति की सड़क दुघर्टना में मौत हो गई है।पुलिस को बीते 22 नवंबर को सड़क दुर्घटना की सूचना मिली थी सूचना पर पहुंची नगराम पुलिस ने शव को कब्जे में ले कर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया था , देवी खेड़ा मजरा पतौना की रहने वाली मंजू देवी बीते बुधवार को फोटो से पति की शिनाख्त करते हुए बताया कि उसके पति विनोद बीती 22 नवंबर को लगभग 6 बजे शाम समेसी बाजार के लिए निकले थे जो चार दिनों से घर वापिस नहीं आये, बीते बुधवार को जब हुआ अपने पति की गुमशुदगी दर्ज कराने थाना नगराम पहुंची तो पुलिस द्वारा सड़क दुघर्टना की फोटो दिखाई गई दिखाई गई फोटो से उसके पैरों तलें से जमीन खिसक गई वह और कोई नहीं उसका पति विनोद था।

लेखपाल की मनमानी सें जनता परेशान

कोरांव प्रयागराज कैनविज टाइम्स संवाददाता। कोरांव तहसील क्षेत्र के मानपुर गांव के रहने वाले अंशुमान सिंह पुत्र संतोष सिंह चौहान का आरोप है की दस दिन सें निवास प्रमाण पत्र बनवाने हेतु आवेदन किया हु लेकीन तैनात हल्का लेखपाल शिव कुमार द्वारा दस दिन बीतने के बावजूद अपनी रिपोर्ट नहीं लगाया गया इसी तरह बहुत सारे लोगो ने आय जाती निवास आवेदन किया है लेकीन लेखपाल की मनमानी रवैया के चलते लोगो के समय सें आवेदन का निस्तारण नहीं हो हो पा रहा है ग्रामीणों का आरोप है की उक्त लेखपाल फोन भी लगाने पर नहीं उठाता न ही गांव मे आते है वही दूसरी तरफ निर्वाचित ग्राम प्रधान का भी आरोप है की उक्त लेखपाल के विरुद्ध जल्दी ही उच्चाधिकारियो सें शिकायत करके ट्रांसफर कराने की माँग की जाएगी फिलहाल तहसील के अधिकारियो सें मौखिक रूप सें शिकायत किया गया है अब देखना है की तहसील के अधिकारियो द्वारा क्या कार्रवाही किया जाता है।

भू-माफिया के आगे प्रशासन नतमस्तक

एजेंसी

मेरठ। एक तरफ जहां उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रदेश से गुंडों का एनकाउंटर और भू-माफियाओं का बुल्डोजर से सफाया करने में लगे हैं, वहीं कुछ गुंडे और भू-माफिया ऐसे भी हैं, जिनके आगे सीएम योगी का बुल्डोजर पस्त है क्योंकि उनके सिर पर कुछ भाजपा नेताओं का हाथ है इसलिए योगी का प्रशासन उनका कुछ नहीं बिगाड़ पा रहा है। मेरठ में भी कुछ ऐसे भू-माफिया हैं, जो अपनी गुंडागर्दी के दम पर न सिर्फ योगी सरकार को चुनौती दे रहे हैं, बल्कि सीएम योगी के सुशासन और गुंडाराज मुक्त उनकी सोच पर भारी पड़े हुए हैं।

कुछ भाजपा नेताओं की बदौलत ये भू-माफिया मेरठ प्रशासन को भी नाच नचाते और मनमानी करते नज़र आ रहे हैं। कुछ पीड़ित किसानों का कहना है कि मेरठ में भू-माफिया ने कई किसानों और सरकार की जमीनों को भी हड़प लिया है, जिसकी वजह से एक किसान ने कुछ साल पहले आत्महत्या तक कर ली थी। इन भू-माफियाओं ने गुंडागर्दी के दम पर न सिर्फ किसानों की जमीनों पर कब्जा कर लिया है, बल्कि धमकी देते हैं कि उनका कुछ बिगाड़ने वाला कोई माई का लाल आज तक दुनिया में पैदा नहीं हुआ है। तो क्या माना जाए कि भू-माफियाओं की ये धमकी सीधे-सीधे योगी की जीरो टॉलरेंस सुशासन व्यवस्था और उनके प्रशासन को चुनौती देने जैसा है?दरअसल, मेरठ के कंकरखेड़ा थाना क्षेत्र के रहने वाले कथित बिल्डर और भू-माफिया अखिलेश, भू-माफिया रमेश यादव ने स्थानीय किसान सुशील, विरेंद्र, जगत सिह और बलजीत सिह गांव नंगला ताशी, थाना कंकरखेड़ा, जिला मेरठ की जमीन, जिसका खसरा संख्या 616 है, पर कब्जा करने की नीयत से उनकी न्यायालय के निर्देश पर बनाई गई दीवार को तोड़कर उनका खेती-बाड़ी का सामान और कृषि यंत्र फेंक दिए और पीछे में अपनी प्लाटिग की जमीन का रास्ता जो तीर्थकुंज का रास्ता शामली हाइवे पर निकालने की नियत है, इन भू-माफियाओं ने अपना रास्ता होने के बावजूद किसान परिवार की जमीन छीनने की नीयत से उनकी दीवार तोड़कर एक और रास्ता निकाल लिया है,

जिसकी शिकायत पीड़ित किसानों ने कंकरखेड़ा थाने के अलावा जिले के तमाम अधिकारियों से भी की, लेकिन ऐसा प्रतीत होता है कि ज़िला प्रशासन दबाव में कार्रवाई करने में नाकाम है। इसके बाद पीड़ित किसानों ने मजबूरन प्रदेश के मुख्य सचिव को 24 जून 2024 को भी अपनी पीड़ा एक पत्र लिखकर बताई, जिस पर मुख्य सचिव ने मेरठ के जिलाधिकारी, मेरठ मंडल के अपर आयुक्त को संज्ञान लेने के लिए निर्देशित किया, पीड़ित किसानों ने बताया कि इस मामले में मेरठ मंडल के कमिश्नर द्बारा आदेश के बाद पुलिस सुरक्षा में उनकी जमीन की तारबंदी और दीवार कराई गई, लेकिन भू-माफिया अखिलेश और रमेश यादव अंपने गिरोह के मिलकर ने उसे जबरन तोड़ दिया। पीड़ित किसानों ने फिर पुलिस और स्थानीय प्रशासन से इस बारे में बार बार गुहार लगाई, लेकिन जब कुछ नहीं हुआ तो तंग आकर किसान रुपेश पवार ने साल 2021 में वाद संख्या 1293/2021 न्यायालय सिविल जज (सीडी), मेरठ में दर्ज किया, जिसके आधार पर 27 अक्टूबर 2021 को न्यायालय ने भू-माफियाओं को उक्त किसान परिवार की जमीन पर कब्जा और हस्तक्षेप न करने का आदेश पारित किया था। जब भू-माफियाओं ने न्यायालय से इस मामले में हस्तक्षेप के लिए याचिका दायर की, तो न्यायालय ने उनकी याचिका को निरस्त कर दिया। इसके बावजूद भू-माफियाओं ने किसान परिवार की जमीन में से रास्ता बनाए रखने दबाव बना रहा है और जमीन के एक बड़े हिस्से पर अपना कब्जा जमाना चाहता है। इस मामले में उपजिलाधिकारी के पत्रांक-667/ एसटी/ एसडीएम ने 1 अगस्त 2024 को जिलाधिकारी को पत्र लिखकर भी बताया कि उक्त जमीन किसान परिवार की है, लेकिन इसके बावजूद भृ-माफिया के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हुई ।

परमट मंदिर के गर्भगृह में लगी चांदी की चादर चोरी करते पकड़ा गया चोर

कानपुर। ग्वालटोली थाना क्षेत्र में स्थित शहर के प्रसिद्ध धामआनंदेश्वर मंदिर के गर्भगृह में लगी चांदी की चादर चोरी करते हुए गुरुवार को एक चोर पकड़ा गया। मंदिर के महंत ने उसे पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस उसके खिलाफ विधिक कार्रवाई करते हुए जेल भेज दिया। अपर पुलिस उपायुक्त महेश कुमार ने बताया कि पकड़ा गया आरोपित कोतवाली थाना क्षेत्र के बंगाली मार्केट शिवाला निवासी रुपेन्द्र वर्मा पुत्र जितेन्द्र वर्मा है। इसके खिलाफ आनंदेश्वर मंदिर परमट परिसर निवासी महंत अरुण भारती गुरू उमाशंकर भारती की तहरीर पर चोरी का मुकदमा दर्ज किया गया है। महंत अरुण भारती ने आरोप लगाया है कि गुरुवार को मंदिर के गर्भगृह में लगे चांदी के चादर को रुपेन्द्र वर्मा एक पेचकस से तोड़ रहा था कि इस दौरान मेरी नजर पड़ गई तो वह भागने का प्रयास किया। लेकिन मैंने उसे रंगे हाथ पकड़ लिया। उसे लेकर थाने पर पहुंचे और उसके खिलाफ तहरीर दी।

उत्तर रेलवे

सख्याः सी/123–1–एटीवीएम/24/कुंभ 2025/एसवी दिनांकः27.11.2024

लखनऊ मंडल के 03 स्टेशनों पर 01–01–2025 से 10–03–2025 की अवधि के लिए फैसिलिटेटर की नियुक्ति हेतु आवेदन आमंत्रण सूचना

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, उत्तर रेलवे, लखनऊ मंडल, लखनऊ, भारत के राष्ट्रपति की ओर से, उत्तर रेलवे के सेवानिवृत रेलवे कर्मचारियों और आम जनता से लखनऊ मंडल के निम्नलिखित रेलवे स्टेशनों पर एटीवीएम के माध्यम से अनारक्षित टिकट वितरित करने के लिए एक सौ छह (106) सुविधाकर्ताओं की नियुक्ति के लिए आवेदन आमंत्रित करते हैं। चयनित आवेदक को एटीवीएम सुविधाकर्ता के रूप में नियुक्ति के आधार पर रेलवे में रोजगार का कोई दावा नहीं होगा। रेलवे द्वारा कोई पारिश्रमिक/वेतन/मजदूरी का भुगतान नहीं किया जाएगा।

लखनऊ मंडल में यात्रियों को टिकट जारी करने के लिए सुविधाकर्ताओं और स्वचालित टिकट वेंडिंग मशीनों (एटीवीएम) की आवश्यकता वाले स्टेशनों की सूची निम्नानुसार हैः

एस.एन.	स्टेशन	स्टेशनों की श्रेणी	फैसिलिटेटर रिक्ति
1.	प्रयागराज संगम	एनएसजी–3	18
2.	प्रयाग	एनएसजी–4	47
3.	फाफामऊ	एनएसजी–5	41
कुल			106

www.indianrailways.gov.in पर उपलब्ध है। सेवानिवृत्त रेलवे कर्मचारी और आम जनता जो एटीवीएम के माध्यम से टिकट जारी करने के लिए सुविधाकर्ता के रूप में काम करने में रुचि रखते हैं, उन्हें आवेदन में सभी कॉलम को विधिवत भरकर और अधिसूचना के सभी पृष्ठों पर हस्ताक्षर करके अपना आवेदन जमा करना चाहिए। आवेदन पर "———————— रेलवे स्टेशन पर एटीवीएम सुविधाकर्ता के लिए आवेदन" लिखा होना चाहिए और इसे एक सीलबंद लिफाफे में वरिष्ठ मंडल वाणिज्यिक प्रबंधक, उत्तर रेलवे, लखनऊ मंडल, लखनऊ को 18–12–2024 को 14.00 बजे या उससे पहले जमा करना चाहिए।

1.	भरे हुए आवेदन पत्र इस कार्यालय द्वारा प्राप्त किए जाएंगे	28–11–2024 को 10.00 बजे से
2.	आवेदन जमा करने की अंतिम तिथि	18–12–2024 को 14.00 बजे तक
3.	आवेदन प्रस्तुत करने का स्थान	वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक, उत्तर रेलवे, लखनऊ मंडल,

नोटः– आवेदन पत्र उपरोक्त वेबसाइट से 28–11–2024 तक डाउनलोड किए जा सकते हैं। 3670/2024

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

कार्यालय ग्राम पंचायत–पूरादत्तू विकास खण्ड–कोरांव, प्रयागराज

पत्रांक–मेमो / ग्राम पंचायत–निविदा/ 2024–25 दिनांक–28.11.2024

अल्पकालीन निविदा सूचना

पंचम राज्य वित्त/पन्द्रहवा वित्त मनरेगा योजना के अर्न्तगत ग्राम पंचायत पुरादत्तू के अन्तरगत पूंजीकृत ठेकेदारो से अधोलिखित विवरण के अनुसार सामग्री आपूर्ति हेतू दिनांक 28.11.2024 से दिनांक 07.12.2024 सीलबन्द लिफाफ़े में दोपहर 12 बजे तक निविदा आमंत्रित की जाती है, जो दिनांक 08.12.2024 को सायं 4 बजे गठित समिति के समक्ष खोली जाएगी। निविदा प्रपत्र 10 रू के स्टाम्प पेपर के साथ ग्राम पंचायत के कार्यालय में जमा कराना अनिवार्य होगा। किसी एक अथवा समस्त निविदा को निरस्त करने का अधिकार ग्राम पंचायत को होगी। निविदा प्रपत्र ग्राम पंचायत कार्यालय से प्राप्त किया जा सकता है। नियम एवं शर्तों की जानकारी ग्राम पंचायत विकास अधिकारी से प्राप्त की जा सकती है।

नोट– सामग्री की मात्रा स्वीकृत प्राकलन के अनुसार बढ़ घट सकती है।

क्र.सं.	योजना का नाम	कार्य का विवरण	अनुमानित लागत
1	केन्द्रीय वित्त/ राज्य वित्त	ग्राम पं0 पूरादत्तू में आंगनवाडी केन्द्र टाइल्स निर्माण व बोर स्थापित कार्य	
2	केन्द्रीय वित्त/ राज्य वित्त	ग्राम पं0 पूरादत्तू में आगनवाडी केन्द्र का निर्माण	

सुषमा सिंह
ग्राम प्रधान
ग्रा0प0–पूरादत्तू कोरांव, प्रयागराज

प्रीती सिंह
सचिव
ग्रा0प0–पूरादत्तू कोरांव, प्रयागराज

पीआईबी ने वेव्स 2025 पर लखनऊ विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग में आयोजित की कार्यशाला

फरवरी में होगा पांच दिवसीय आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय की इकाई, पत्र सूचना कार्यालय(पीआईबी) लखनऊ ने मीडिया और एंटरटेनमेंट क्षेत्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किए गए ''क्रिएट इन इंडिया चैलेंज के सीजन-1, ''वेव्स'' के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय के पत्रकारिता विभाग में एक वर्कशॉप का आयोजन किया। कार्यक्रम में पीआईबी लखनऊ ने विद्यार्थियो को बताया कि वर्ल्ड ऑडियो वीडियो एंटरटेनमेंट समिट का आयोजन 5 से 9 फरवरी तक भारत मंडपम, नई दिल्ली में किया जाएगा। यह मीडिया और मनोरंजन उद्योग के लिए एक प्रमुख मंच है, जो संवाद, व्यापार सहयोग और नवाचार को बढ़ावा देगा। वेव्स में कुल 27 चैलेंज शामिल हैं, जिनमें रील मेकिंग, पोस्टर मेकिंग, एनिमेशन और ड्रोन फिल्म मेकिंग जैसे प्रतिस्पर्धात्मक कार्यक्रम होंगे, जो प्रतिभागियों को अपनी रचनात्मकता और कौशल प्रदर्शित करने का अवसर प्रदान करेंगे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि और पत्रकारिता विभाग के विभागाध्यक्ष, प्रो. डॉ. मुकुल श्रीवास्तव ने कहा कि ''वेव्स'' युवाओं के लिए केंद्र सरकार द्वारा उपलब्ध कराया गया एक उत्कृष्ट मंच है। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि मीडिया और एंटरटेनमेंट के क्षेत्र में हमारी कोशिश होनी चाहिए कि हम इसमें भारत की पारंपरिक संस्कृति और मूल्यों को प्रदर्शित करें। कार्यक्रम को संबोधित करते हुये पत्र सूचना कार्यालय, सूचना प्रसारण मंत्रालय के निदेशक मनोज कुमार वर्मा ने कहा कि वेब्स 2025 युवाओं के लिए एक बड़ा अवसर है। उन्होंने कहा कि मीडिया और एंटरटेनमेंट इंडस्ट्री पारंपरिक रोजगार से अलग है और इसमें न केवल उच्च आय बल्कि रचनात्मकता और नवाचार के अनगिनत अवसर मौजूद हैं। मीडिया प्रोफ़ेशनल और विद्यार्थी कैसे करें रिजस्ट्रेशन रील मेकिंग, पोस्टर मेकिंग, एनिमेशन और ड्रोन फिल्म मेकिंग जैसी प्रतियोगिताओं में शामिल होने वाले इच्छुक की बेबसाईट पर जाकर, चैलेंज सेलेक्ट कर रजिस्ट्रेशन कर सकते है।

बिना ढक्कन के नाले बने जान के दुश्मन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। नगर निगम की लापरवाही के चलते लोगों का जीवन खतरे में नजर आ रहा है, जगह-जगह नालो के खुले हुए चैंबर हादसों को दावत देते नजर आ रहे हैं। कश्मीरी मोहल्ला वार्ड के वजीर बाग इलाके में ही नाले के ढक्कन बड़े पैमाने पर गायब है। जगह-जगह खुले हुए नालों में गिरकर बच्चे व अन्य लोग चोटहिल हो रहे हैं। यहां स्थानीय लोगों का कहना है की वह इसकी शिकायत स्थानीय पार्षद से लेकर नगर निगम के अधिकारियों तक से कर चुके हैं किंतु कोई सुनवाई नहीं होती है। यहां खपरैल वाली मस्जिद के निकट रहने वाले हसीब कहते हैं अभी कुछ दिन पहले ही मेरा बच्चा इसी खुले हुए नाले में गिर गया था जोकि पूरा पानी के अंदर डूब गया था मेरे पड़ोसी की नज़र अचानक ही पानी में डूब रहे मेरे बेटे के पैर पर पड़ी जिसे पैर पकड़ कर पानी से बाहर घसीट कर मेरे बच्चे की बच्चे की जान बचाई जा सकी। मोहल्ले के निवासी सुशील प्रजापति कहते हैं की कई जगह पर नाले के ऊपर ढके हुए ढक्कन ग़ायब हैं कभी कधार लाईट न होने पर लोग इस बिना ढक्कन के नाले में गिर कर चोटहिल हो जाते हैं। वह कहते हैं की ढक्कन न होने से लोग इसमें कूड़ा भी डाल देते हैं जिससे की जल निकासी में व्यवधान पैदा होता है और बारिश के दिनों में यहाँ जल भराव हो जाता है जिससे कि यह खुले हुए नाले नजर नहीं आते हैं और अक्सर बच्चे व बुजुर्ग इसमें गिर जाते हैं, वह कहते हैं कई वर्ष पूर्व इस नाले में गिरकर एक बच्चे की मौत भी हो चुकी है इसके बावजूद न तो स्थानीय पार्षद इसको ठीक करवा रहे हैं और न ही नगर निगम के उच्च अधिकारी ही इस ओर कोई ध्यान देते हैं। अब सवाल ये उठता है की आखिर नगर निगम को मिलने वाली 15वीं वित्त की रक़म को कहां ख़र्च किया जा रहा है। यदि स्थानीय पार्षद इसको ठीक नहीं करवा रहे हैं तो फिर नगर आयुक्त व महापौर अपने स्तर से इस समस्या का समाधान क्यों नहीं करवा रहे हैं जिससे की आमजन की जान की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

नगराम पुलिस ने कोर्ट के आदेश पर चार वारंटियों को पकड़ा

काफी दिनों से न्यायालय से फरार चल रहे थे चारों वारंटी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

नगराम, लखनऊ। गुरुवार को पुलिस ने कोर्ट के वारंट से फरार चार वारंटियों, अशोक , सहदेव व महादेव और पुनवासी को गिरफ्तार न्यायालय में पेश किया है। चारों आरोपी नगराम क्षेत्र के निवासी हैं और लंबे समय से फरार थे । नगराम थाना प्रभारी विवेक चौधरी ने बताया कि कोर्ट के वारंट से अलग-अलग गांवों से फरार चल रहे वारंटी को पुलिस ने गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया है। बताया कि काफी समय से अशोक पुत्र रामखेलावन निवासी दुल्हापुर हुसैनाबाद , सहदेव व महादेव पुत्रगण सूर्य बली निवासी पालखेड़ा , पुनवासी पुत्र रामपाल निवासी भजा खेड़ा चारों अभियुक्त काफी समय से फरार चल रहे थे। नगराम थाना प्रभारी विवेक चौधरी ने बताया की अलग-अलग तीन गांवों के फरार चल रहे चारों वारंटी को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया है।

पांच दिवसीय भक्तमाल कथा का हुआ शुभारम्भ पहले दिन हुआ संत सूरदास के चरित का बखान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

आज सायंकाल तीन बजे से होगा संत तुलसी के चरित्र का आख्यान

लखनऊ। राधा स्नेह दरबार की ओर से लोकमाता अहिल्याबाई होल्कर त्रिशताब्दी के उपलक्ष्य में पांच दिवसीय भक्तमाल कथा का गुरुवार को शुभारंभ हुआ। गोमती तट स्थित खाटूश्याम मन्दिर में कथा के पहले दिन कथा प्रवक्ता ब्रजभक्त वैष्णवाचार्य रमाकान्त गोस्वामी ने संत सूरदास के चरित का बखान किया। इसके पूर्व राधा स्नेह दरबार की अध्यक्ष बिन्दू बोरा के साथ सैकड़ों सखियों ने झूमते गाते भव्य तुलसी यात्रा निकाली जो बीरबल साहनी मार्ग स्थित पंचमुखी हनुमान मन्दिर से श्याम मन्दिर पहुंची। कथा की शुरुआत सनातन संस्कृति की रक्षा में राजमाता अहिल्याबाई होल्कर के लोक अवदान पर चर्चा के साथ हुई। आचार्य रमाकान्त गोस्वामी ने कहा कि हमें अपनी संस्कृति, अपने संत और अपने ग्रन्थों के बारे में जानना चाहिए। उन्होंने कहा कि भगवान ने स्वयं अपने भक्तों की कथा रचना करवाई और नाभादास जी ने भक्तमाल ग्रन्थ में चारों युग के सन्तों का चरित वर्णन किया। बताया कि कथा के दूसरे दिन शुक्रवार को सायंकाल तीन बजे से संत तुलसी के चरित्र का आख्यान होगा। कथा के दौरान महिला आयोग की अध्यक्ष बबिता चौहान, विधायक डा. नीरज बोरा, श्याम परिवार के सदस्यों सहित कुसुम अग्रवाल, बीना गोयल, अंशु अग्रवाल, सीमा गोयल, नीलू गोयल, ज्योति अग्रवाल, अर्चना अग्रवाल, मीना अग्रवाल, अंजू गुप्ता, अनुराधा बंसल, आरती बंसल, सुमन अग्रवाल, अंजू अग्रवाल, रजनी अग्रवाल, रेनू अग्रवाल, सीमा अग्रवाल, नमिता अग्रवाल, कविता अग्रवाल, किरन जैन, अनुराधा गोयल, आंचल अग्रवाल व दीपाली मित्तल समेत अन्य मौजूद रहे।

महाविद्यालय में मिशन शक्ति 5.0 के अंतर्गत संवाद कार्यक्रम आयोजित

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बीकेटी, लखनऊ। महाविद्यालय में मिशन शक्ति 5.0 के अंतर्गत संवाद कार्यक्रम राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई तथा मिशन शक्ति समिति के संयुक्त तत्वाधान में किया गया।संवाद कार्यक्रम का उद्देश्य था महाविद्यालय के छात्राओं को करियर एवं सुरक्षा संबंधी विषय पर मार्गदर्शन हेतु संवाद करना। महाविद्यालय की प्राचार्य प्रोफ़ेसर (डॉ) शहला नुसरत किदवई ने कार्यक्रम में छात्राओं से संवाद स्थापित करते हुए कहा कि छात्राओं को जीवन में आगे बढ़ने के लिए साहस एवं बुद्धि से कार्य करना चाहिए। उत्तर प्रदेश शासन मिशन शक्ति फ़ेज 5.0 के माध्यम से महिला सुरक्षा,स्वालंबन,सम्मान हेतु कटिबद्ध है और इसके लिए लगातार प्रयास किए जा रहे है। महाविद्यालय में छात्राओं की समस्याओं के निदान के लिए महिला प्रकोष्ठ बना हुआ है जिसमें छात्राएं अपनी समस्याएं बता कर निदान प्राप्त कर सकती हैं। छात्राओं ने संवाद कार्यक्रम में अपनी बात को प्रमुखता से रखा ,छात्रा रीमा, किरण, प्रिया, मुस्कान, परिया मिश्रा ,ज्योति यादव, संगीता आदि ने अपने अनुभव सुनाकर परामर्श मांगा।मिशन शक्ति समिति प्रभारी डॉ ममता मधुर, सदस्य डॉ शालिनी अग्रवाल, डॉ दीपिका रावत,श्रीमती अमीषा पटेल ने छात्राओं की समस्याओं का निदान किया। डॉ ममता ममाता मधुर ने बताया कि ''संवाद'' की अगली कड़ी में किसी रोल- मॉडल महिला के व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवादज्ञापन डॉ जितेंद्र यादव ने किया।

राज्य आपदा मोचन बल उ.प्र. ने मनाया 9वां स्थापना दिवस

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सरोजनीनगर-लखनऊ। राज्य आपदा मोचन बल के नूर नगर भदरसा बिजनौर स्थित मुख्यालय पर गुरुवार को नौंवा स्थापना दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर राज्य आपदा मोचन बल (एसडीआरएफ) के बतौर मुख्य अतिथि डीआईजी पीएसी किरीट राठौड मौजूद रहे, जहाँ पर एस0डी0आर0एफ0 के सेनानायक डॉ0 सतीश कुमार ने आधुनिक उपकरणों के बारे जानकारी दी साथ ही जवानों द्वारा ध्वस्त इमारत में फंसे लोगों, रोप रेस्क्यू के माध्यम से बिल्डिंग में फंसे लोगों, बोरवेल रेस्क्यू व डॉग दस्ते के द्वारा राहत एवं बचाव का प्रदर्शन भी किया गया। वर्त्तमान में एसडीआरएफ के पास आधुनिक उपकरणों जैसे- रिमोट संचालित लाइफ बॉय, जल में चलने वाले हल्के व भारी रबराइज्डउ इन्फ्ले टेबल मोटर बोट, अण्डर वाटर कम्युनिकेशन सेट, केमिकल लाइट स्टिक फॉर अण्डर वाटर, अण्डर वाटर हेड लैम्प, विक्टिम लोकेटिंग कैमरा व अन्य आधुनिक उपकरण उपलब्ध हैं, जिनकी सहायता से किसी भी आपात स्थिति में प्रभावी/सफल रेस्क्यू किया जा सके, साथ ही साथ एसडीआरएफ के पास कुशल गोताखोर व ट्रेंड प्रशिक्षक उपलब्ध है, जो रेस्क्यू कार्य के अतिरिक्त प्रदेश भर में स्कूल/कालेज के विद्यार्थियों, ग्रामीण क्षेत्र के लोगो, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के लोगों, पुलिस के जवानों, लेखपालो व अन्य लोगो को आपदा मित्र के रूप में तैयार करते हैं।

शैक्षणिक यात्रा पर एकेटीयू आये नौवीं और दसवीं के छात्रों देखा विभिन्न लैब

लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता। डॉ एपीजे अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय में गुरुवार को राजकीय हाई स्कूल मोहनिया पिसावा सीतापुर से छात्रों का दल पहुँचा। इस दौरान लेक्चर और किताब के डेली रूटीन से अलग बच्चे जब लैब पहुंचे तो उनकी आंखें चमक उठीं। बच्चे लैब के विभिन्न हिस्सों को बड़ी गंभीरता से देख रहे थे। हर एक चीज की जानकारी बारीकी से पूछ रहे थे। इस दौरान बच्चों ने एआई लैब, थ्री डी प्रिंटिंग लैब, गूगल कोडिंग लैब, रोबोटिक्स, इंडस्ट्रीयल ऑटोमेशन लैब, एआई लैब, साइबर सिक्योरिटी लैब, कैरेक्टराइजेशन नैनो लैब आदि का निरीक्षण किया। बच्चों ने थ्री डी प्रिंटिंग से किस तरह मॉडल बनाये जाते हैं कि जानकारी ली।

जेनपैक्ट ने बढ़ाया अपना दायरा, लखनऊ में रखा कदम, दो हजार से अधिक लोगों को रोजगार देने की योजना

लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता। जेनपैक्ट, ग्लोबल प्रोफ़ेशनल सर्विसेज और सोल्यूशंस प्रदान करने वाली कंपनी, जो भविष्य को नया आकार देने वाले नतीजे देती है, ने आज उत्तर प्रदेश के लखनऊ में अपने नए ऑफिस को खोलने की घोषणा की। कंपनी की योजना 2025 के अंत तक इस शहर में दो हजार से अधिक कर्मचारियों को रोजगार देने की है, जिससे इस क्षेत्र में कंपनी का मजबूत आधार स्थापित होगा और भारत को नए आविष्कारों और प्रतिभाशाली लोगों का ग्लोबल हब बनाने में मदद मिलेगी। जेनपैक्ट के ग्लोबल ऑपरेटिंग ऑफीसर विपिन गैरोला ने कहा कि लखनऊ एक समृद्ध और जीवंत विरासत वाला शहर है। इसका तकनीकी भविष्य बहुत ही उज्जवल है। जेनपैक्ट के ऑफिस पहले से जयपुर, जोधपुर, मदुरै और वारंगल जैसे शहरों में हैं। जेनपैक्ट ने पहले ही भारत के छोटे और मध्यम आकार के शहरों में अपनी मौजूदगी मजबूत कर ली है, जहां बड़े शहरों के मुकाबले अवसरों की कमी होती है लेकिन वहां के लोग बेहद प्रतिभाशाली हैं।

केप्री ग्लोबल ने गोल्ड लोन भुगतान और सहायता के लिए शुरू की व्हाट्सएप चैटबॉट

लखनऊ, कैनविज टाइम्स संवाददाता। एक प्रमुख गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी, केप्री ग्लोबल कैपिटल लिमिटेड (केप्री लोन) ने अपने ग्राहकों के लिए गोल्ड लोन अनुभव को बेहतर बनाने के लिए एक एआई-सक्षम व्हाट्सएप चैटबॉट की शुरुआत की है। यह इनोवेटिव टूल सुरक्षित भुगतान सुविधाओं को एकीकृत करता है, जिससे उपयोगकर्ता व्हाट्सएप के माध्यम से अपने गोल्ड लोन खातों का प्रबंधन और भुगतान आसानी से कर सकते हैं, यह सुविधा ग्राहकों को शाखा में जाने की आवश्यकता को समाप्त करते हुए सुविधा और दक्षता को प्राथमिकता देती है।

पत्नी के मित्र को फंसाने के लिए रची थी झूठी हत्या के प्रयास की कहानी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बीकेटी, लखनऊ । मंगलवार रात को महिंगवा पुलिस को फ़ोन द्वारा सूचना मिली थी कि अरुण कुमार मौर्या पुत्र लक्ष्मी नारायण मौर्या निवासी ग्राम हरीओम नगर थाना मडियावं लखनऊ को बाजपुर गंगौरा मोड के पास गोली मार दी गई है,वहीं सूचना पर पुलिस ने मौक़े पर पहुंचकर घायल को तत्काल ईलाज के लिए बीकेटी स्थित रामसागर मिश्र शौ शैय्या अस्पताल पहुंचाया था,जहां हालत गंभीर लगने पर ट्रॉमा सेंटर लखनऊ रिफर कर दिया गया था और पुलिस जांच में जुटी हुई थी तथा अज्ञात के विरुद्ध मुक़दमा भी पंजीकृत किया गया था,वहीं पुलिस को जांच के दौरान मिले साक्ष्यों के आधार पर मामला संदिग्ध लगा था और गहनता से जांच में जुटी थी।प्राप्त जानकारी के अनुसार अरुण कुमार मौर्य ने 11 वर्ष पूर्व महिंगवा थानांतर्गत बाजपुर गंगौरा निवासी सविता मौर्य से कोर्ट मैरिज किया था,7 वर्ष बाद इन दोनो के एक पुत्री का जन्म हुआ।उसके बाद अरूण व उनकी पत्नी के दूर के रिश्तेदार की वजह से दोनों के सम्बन्धों में कटुता उत्पन्न हुई और उसी कारण थाना इटौंजा में एक प्रार्थना पत्र भी अरूण की पत्नी द्वारा दिया गया,प्रार्थना पत्र के आधार पर पुलिस ने दोनों लोगों को बुलाकर समझा बुझाकर आपसी सुलह समझौता करवा दिया था,जिसके बाद अरुण अपनी पत्नी को लेकर अपने घर हरिओम नगर थाना मडियावं जनपद लखनऊ चला गया था उसी के लगभग15 दिन बाद अरुण की उसकी पत्नी के पुरूष मित्र को लेकर फिर से वाद विवाद होने के बाद उसकी पत्नी छत से नीचे कूद गयी थी,जिससे उसकी रीढ की हड्डी में चोट आयी थी और इलाज के बाद अस्पताल से डिस्चार्ज होने के बाद अपने मायके ग्राम बाजपुर गंगौरा थाना महिगवां जनपद लखनऊ चली गयी थी।उसी के करीब 04 माह बाद अरूण मौर्या ने अपनी पत्नी के साथ रहने से मना कर दिया था,इस बात से नाराज होकर कोर्ट में परिवाद दायर कर दिया था और उसी मामले में उसकी पत्नी का पुरूष मित्र पैरवी भी कर रहा था,पेशबंदी में मुकदमे से बचने के लिये अरुण ने अपने साथियों के साथ मिलकर पत्नी के पुरूष मित्र को फ़साने के लिए अपने मित्र अनुज मौर्या के घर ग्राम पिलेहटी थाना कुर्सी जनपद बाराबंकी में मंगलवार को एक योजना तैयार किया था तथा योजना के तहत अरुण मौर्य ने अपने ऊपर गोली चलवाई।वही क्राइम/सर्विलांस टीम उत्तरी जोन व थाना महिगवां पुलिस टीम द्वारा गुरुवार को हत्या के प्रयास के फर्जी व झूठे अभियोग का सफल अनावारण करते हुए करीमनगर चौराहे के पास से मुख्य साजिशकर्ता के सहयोगी अरविद सिंह पुत्र प्रेम सिंह ग्राम कुटी सुपौली,पोस्ट रिहार थाना लहरपुर जनपद-सीतापुर हालपता-भैसामऊ क्रासिंग थाना बीकेटी लखनऊ,अनुज मौर्य पुत्र स्व0अशर्फी लाल मौर्य नि0ग्राम पिलहटी हैदराबाद थाना कुर्सी जनपद- बाराबंकी,अरुण कुमार मौर्या पुत्र लक्ष्मीनारायण मौर्या निवासी ग्राम हरिओम नगर थाना मडियावं, नीलेश मौर्य पुत्र लक्ष्मीनारायण मौर्य निवासी हरिओम नगर,थाना मडियावं जनपद लखनऊ को गिरफ्तार कर घटना का सफ़ल अनावरण किया तथा अन्य विधिक कार्यवाही में जुटी थी।वही पुलिस ने आरोपियों के पास से 2 तंमचा 315 बोर,1तंमचा 12 बोर, 2कारतूस(रिफिल) 12बोर,1 खोखा का पेंदा तमंचे 12 बोर में फसी हुई व 1कारतूस 315 बोर नाल में फसी हुई,1जिंदा कारतूस 315 बोर बरामद किया।

पूर्व प्रधानमंत्री वीपी सिंह को शेखर दीक्षित ने दी श्रद्धाजलि

कैनविज टाइम्स संवाददाता

लखनऊ। देश के पूर्व प्रधानमंत्री दलित पिछड़े समाज के मसीहा स्वर्गीय विश्वनाथ प्रताप सिंह की पुण्यतिथि पर राष्ट्रीय किसान मंच की तरफ से उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंडित शेखर दीक्षित ने श्रद्धा सुमन अर्पित करने के बाद कहा, ''अगर आज के दौर में ईमानदार राजनीति, बेदाग राजनीति कैसे की जा सकती है? इसकी प्रेरणा नेताओं को विश्वनाथ प्रताप सिंह के जीवन से लेनी चाहिए । उन्होंने कहा कि ये दुर्भाग्य है कि पिछड़ों को उनका अधिकार दिलवाने वाले एक राजपूत राजा को आज उनकी लड़ाई लड़ने वाले और राजनीति करके उनका वोट हासिल करने वाले भूल गए। आज राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह के कारण ही शोषित,वंचित और पिछड़े सम्मान को आरक्षण के माध्यम से सम्मान व लाभ हासिल हुआ पर उनको वो सम्मान कभी नहीं मिला जिसके वो हकदार थे। दीक्षित ने याद दिलाया कि बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर को भारत रत्न भी राजा विश्वनाथ प्रताप सिंह ने ही दिया। उन्होंने कहा, उत्तर प्रदेश हो या बिहार, 1989 के बाद कंग्रेस पार्टी आज तक कभी स्वयं सरकार नहीं बना पाई क्यूंकि उसने आरक्षण का विरोध किया था। संसद में वीपी सिंह ने पूरे जीवन कभी स्वयं के लाभ के लिए राजनीति नहीं की। वे हमेशा दूसरों के लिए लड़ते रहे। अगर जाति व्यवस्था को तोड़कर कोई राजनीति करने वाला देश में नेता हुआ तो वो विश्वनाथ प्रताप सिंह हुए। ऐसे महान आत्मा को नमन है जिन्होंने सारा जीवन त्याग और बलिदान में गुजार दिया । इस मौके पर मंच के संगठन मंत्री संजय कुमार ,महासचिव अनिल चौबे, सुश्री नीरा सक्सेना, श्री धर्मेंद्र सिंह सहित तमाम पदाधिकारियों/कायकर्ताओं ने भी पूर्व पीएम को अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए ।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जिला पेयजल एवं स्वच्छता समिति की बैठक संपन्न

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर। जिलाधिकारी अभिषेक आनंद की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट सभागार में जिला पेयजल एवं स्वच्छता समिति की बैठक संपन्न हुई। बैठक के दौरान जिलाधिकारी ने जनपद में जल जीवन मिशन के अंतर्गत जनपद में संचालित कार्यों की समीक्षा की।

जिलाधिकारी ने जल जीवन मिशन से संबंधित अधिकारियों एवं कार्यदायी संस्था के प्रतिनिधियों को निर्देश दिए कि पाइप लाइन बिछाने हेतु क्षतिग्रस्त की गई सड़कों के रिस्टोरेशन का कार्य मानकों के अनुसार समय से कराया जाये।

सड़क काटने से पहले सम्बंधित विभाग को सूचित करते हुए नियमानुसार एनओसी अवश्य प्राप्त कर ली जाय।

पाइपलाइन निर्धारित गहराई पर ही डाली जाय एवं रिस्टोरेशन के मानकों का भी पूर्णतया अनुपालन सुनिश्चित किया जाय। जिलाधिकारी ने कहा कि यदि कहीं अनियमितता पायी जाएगी तो कड़ी कार्यवाही की जाएगी। जिलाधिकारी ने निर्देश दिए कि लंबित कार्यों को पूरी गुणवत्ता के साथ निर्धारित समयावधि में पूर्ण किया जाये।

दोनों कार्यदायी संस्थाएं एल0 एण्ड टी0 एवं मै0 एन.सी.सी. लिमिटेड के अधिकारियों को निर्देश दिए कि जनशक्ति तत्काल बढ़ायें। हर घर जल गांवों की संख्या में सुधार किए जाने हेतु जिलाधिकारी ने निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि लक्ष्य के अनुरूप ओवर हेड टैंक, सोलर पैनल इंस्टॉलेशन, पम्प हाउस, बाउंड्रीवाल आदि के कार्य कराए जाय। कार्यों का सघन पर्यवेक्षण एवं सत्यापन करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिये, जिससे अधोमानक सामग्री का कदापि प्रयोग न हो। गुणवत्ता की जांच हेतु तैनात थर्ड पार्टी द्वारा प्रस्तुत किये गये सुझावों का अनुपालन सुनिश्चित करने हेतु भी जिलाधिकारी ने निर्देश दिये। परियोजना के बेहतर क्रियान्वयन हेतु जनपद में स्थापित डी0पी0एम0यू0 के अधिकारियों को निर्देश दिये कि परियोजना के क्रियान्वयन एवं जन जागरूकता संबंधी कार्यों को व्यापक स्तर पर अभियान चलाया जाये। पेंटिंग के कार्य को आकर्षक रूप से किया जाय एवं इसमें जन-जागरूकता के संदेश भी लिखवाए जाये। जिलाधिकारी ने कहा कि नलों के कनेक्शन मानकों के अनुसार घर के अन्दर स्थापित कराये जायें। उन्होंने अधिशासी अभियन्ता जल निगम ग्रामीण को निर्देश दिये कि बेहतर समन्वय स्थापित करते हुये कार्यों को समय से पूर्ण करायें। इम्पलीमेंट सपोर्ट एजेन्सी के अन्तर्गत कार्य कर रही संस्थाओं के प्रतिनिधियों को व्यापक स्तर पर जन-जागरूकता प्रसारित कराने हेतु निर्देशित किया। कार्यदायी संस्थाओं के प्रतिनिधियों को निर्देश दिए कि शिकायत हेतु काल सेन्टर संचालित कराएं एवं पहले से संचालित काल सेन्टर के कार्मिकों का समुचित प्रशिक्षण कराएं। काल सेन्टर से नंबरों को व्यापक रूप से प्रसारित किया जाय, जिससे आम जनमानस शिकायत दर्ज करा सके। दर्ज कराई गई शिकायतों की निर्धारित समयावधि में निस्तारण के निर्देश भी दिए। बैठक के दौरान मुख्य विकास अधिकारी निधि बंसल सहित संबंधित अधिकारी एवं कार्यदायी संस्था के प्रतिनिधि उपस्थित रहे।

प्रधान पंचायत सहायक सचिव की तिकड़ी कर रही कमाल, नहीं थम रहा भ्रष्टाचार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

रेउसा सीतापुर। विकासखंड रेउसा में भ्रष्टाचारियों का बोलबाला यूं तो हमेशा से रहा है, परन्तु वर्तमान समय में चरम पर है। ग्राम प्रधान सचिव व पंचायत सहायक की तिकड़ी जमकर गरीबों का हक़ डकार रही है।अभी हाल ही में ऑनलाइन रिश्वत का स्क्रीन शॉट सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हुआ था। ऐसा ही मामला विकासखंड रेउसा की ग्राम पंचायत महेशपुर टपरा में गत दिवस देखने को मिला। ज्ञात हो कि महेशपुर टपरा ग्रामपंचायत में विकास के नाम पर लाखों रुपए बिना किसी कार्य के कागजों पर कार्य दिखाकर डकार लिए गए। अगर बात करें तो सिर्फ गौशाला के अदर कार्य के नाम पर ही वर्ष 2024-25 में एक लाख नौ हजार रुपए व्यय दिखाकर डकार लिए गए। वहीं हैंडपंप रिबोर व मरमत के नाम पर वर्ष 2024-25 में अस्सी हजार पांच सौ,वर्ष 2023-24 में एक लाख छः हजार छ सौ साठ रुपए व्यय दिखाई गए। प्रायमरी स्कूल महेशपुर में दिव्यांग शौचालय मानक विहीन होने के साथ साथ बंद ही रहता है। जबकि इसके निर्माण के लिए 93 हजार छ सौ बाइस रुपए खर्च कर दिए गए। वहीं पंचायत सहायक के द्वारा रिचार्ज पेमेंट, पंचायत असिस्टमेंट, मोटर काउ सेड, आदि के नाम पर अपने निजी बैंक खाते में दो वर्ष में लगभग 65 हजार 350 रुपए का भुगतान कराया गया, जबकि ग्राम प्रधान ने सोयलपुट, प्राइमहोनेरियम व मिट्टी पटाई का भुगतान एक लाख चौदह हजार रुपए का अपने निजी खाते में कराया। अगर कुल व्यय की बात करें तो अतिरिक्त खर्च छोड़कर वर्ष 2024-25 में तीन लाख 98 हजार 750 रुपए खर्च किए गए। वर्ष 2023-24 में पांच लाख नब्बे हजार नौ सौ सत्तावन रुपए खर्च किए गए इसमें यदि अदर खर्च भी जोड़ दिया जाए तो दो वर्षों में 12 लाख 60 हजार 447 रुपए विकास के नाम पर खर्च किए गए जबकि गांव के हालात जस के तस बने हुए हैं। जब हमारी टीम के द्वारा विजिट की गई तो लाखों रुपए की लागत से बने पंचायत भवन में भी दोपहर के साढ़े बारह बजे तक ताला लटकता मिला। इस संदर्भ में जब सीडीओ निधि बंसल से बात की गई तो उन्होंने बताया मामले की जांच कराकर सख्त कार्यवाही की जाएगी।

राज्य पिछड़ा वर्ग आयोग उपाध्यक्ष सोहनलाल श्रीमाली जी का भव्य स्वागत

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर। कल दिनांक 27 नवंबर 2024 को राज पिछड़ा वर्ग आयोग उपाध्यक्ष (राज्यमंत्री)श्री सोहनलाल श्रीमाली जी का निरीक्षण भवन सीतापुर में सायं 6:00 बजे आगमन हुआ सीतापुर अखिल भारतीय श्रीमाली महासभा के सभी पदाधिकारियों एवं समस्त श्रीमाली समाज सीतापुर द्वारा हार्दिक अभिनंदन एवं स्वागत किया गया ।

श्रीमाली समाज के बारे में विस्तार पूर्वक चर्चा हुई इस अवसर पर श्री सोहनलाल जी ने सर्व समाज के उत्थान हेतु सदैव तत्पर रहने का वादा किया इस कार्यक्रम मे मुख्य रूप से अरविंद कुमार श्रीमाली सभासद महोली सीतापुर श्रवण कुमार श्रीमाली जिला अध्यक्ष प्रकाश श्रीमाली महामंत्री नवदीप श्रीमाली कोषाध्यक्ष हंस कुमार श्रीमाली राजू श्रीमाली प्रमोद श्रीमाली मनोज श्रीमाली पिंकू श्रीमाली श्री राम सैनी नंदलाल अमरदीप श्रीमाली शिवनाथ सैनी रमाशंकर सैनी श्याम सैनी राजेश सैनी ने मुख्य रूप से भाग लिया सभा के अंत में समस्त श्रीमाली समाज द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गयो।

बीडीओ सकरन आखिर कब करेंगे ग्राम पंचायत पटना के घोटालों पर कार्यवाई

❑ ह्यूम पाइप घोटाले को क्यों दबा रहे बीडीओ सकरन,क्या इस मामले पर भी मौन रहेंगे उच्चाधिकारी या यूं ही चप्पलें घिसता रहेगा शिकायतकर्ता और मलाई काटते रहेंगे घोटालेबाज

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सकरन(सीतापुर)। क्षेत्र की ग्राम पंचायत पटना में ग्राम प्रधान व पूर्व में तैनात पंचायत सचिव के द्वारा मिलीभगत कर लाखों रुपए ह्यूम पाइप के नाम पर निकाल लिए गए फिर पूरी ग्राम पंचायत में एक भी कहीं भी नहीं डाला गया ह्यूम पाइप की शिकायत ग्राम निवासी सुभाष शुक्ला के द्वारा एक बार ही नहीं बार बार की गई फिर भी खंड विकास अधिकारी सकरन के द्वारा भ्रष्टाचार के जिम्मेदारों के खिलाफ आज तक कोई भी कार्यवाही नहीं किया जाना बड़े खेल को दर्शा रहा। ग्राम पंचायत में ह्यूम पाइप के साथ ही स्ट्रीट लाइट, इंटरलॉकिंग,हैंड पम्प मरम्मत रिबोर ,सीसीटीवी कैमरे, कूप मरम्मत जैसे दर्जनों कामों में भ्रष्टाचार में संलिप्त जनों के खिलाफ ग्राम निवासियों द्वारा बार बार शिकायत किये जाने के उपरांत भी खंड विकास अधिकारी सकरन के द्वारा मामले को ठंडे बस्ते में डालने का प्रकरण जल्द ही उच्चाधिकारियों तक पहुंच सकती।

दलित विधवा महिला से पंचायत सचिव ने मांगी रिश्वत।

सकरन(सीतापुर) कैनविज टाइम्स संवाददाता। भ्रष्टाचार से कराहती सकरन में सारी हदें तो उस वक्त पार हो गईं जब पंचायत सचिव के द्वारा एक दलित असहाय विधवा महिला से 4 हजार रुपए रिश्वत मांगी गई,जिसकी लिखित शिकायत पीड़िता ने उच्चाधिकारियों से की है। मामला ग्राम पंचायत शाहपुर में तैनात पंचायत सचिव प्रदीप कुमार के द्वारा प्रार्थिनी से अंत्योदय कार्ड के लिए बैठक कर प्रस्ताव के लिए 4 हजार रुपए मांगे जाने का है।जिस विषय को लेकर असहाय महिला ने उच्चाधिकारियों से न्याय दिलाए जाने की गुहार लगाई है।
आखिर ऐसे रिश्वतखोर सचिव के खिलाफ खंड विकास अधिकारी क्या करते हैं ठोस कार्यवाई या यूं ही कागजी खानापूर्ति में रहते हैं मशगूल।

पंचायत की शोभा बढ़ा रही डॉ भीमराव अंबेडकर अमृत वाटिका सरौरा कला

कसमंडा कमलापुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। विकासखंड कसमंडा के अंतर्गत ग्राम पंचायत सरौरा कला में प्रधान देशराज व सचिव विवेक गुप्ता की जोड़ी ने मिलकर पंचायत में स्थापित डॉ भीमराव अंबेडकर की प्रतिमा के प्रांगण को शासन की महत्वाकांक्षी योजना अमृत वाटिका के तहत प्राकृतिक सुंदरता से सुसज्जित किया। अपना अस्तित्व खो रही अधिकांश अमृत वाटिकाएं पंचायत के जिम्मेदारों को एक सीख लेने की जरूरत है। उक्त अमृत वाटिका को देखकर ग्रामीणों से लेकर प्रशासनिक अधिकारियों तक काफी प्रशंसा की जा रही है। ग्राम प्रधान व सचिव की कर्मठता व ईमानदारी से ही सरकार की मनसा के अनुसार गांव को एक मॉडल गांव बनाया जा सकता है।

गुलजार शाह मेले में आयोजित प्रदेश स्तरीय हॉकी टूर्नामेंट का उद्घाटन

सीतापुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। समाजसेवी शरद चौधरी के सुपुत्र और अंतर्राष्ट्रीय हार्ष राइडिंग खिलाड़ी अरिंजय चौधरी द्वारा किया गया बिसवां सीतापुर। गुलजार शाह मेले में आयोजित प्रदेश स्तरीय हॉकी टूर्नामेंट का उद्घाटन समाजसेवी शरद चौधरी के सुपुत्र और अंतर्राष्ट्रीय हार्ष राइडिंग खिलाड़ी अरिंजय चौधरी ने टूर्नामेंट के पहले मैच लखनऊ और गोला के बीच खेले गए मैच से हाकी से बाल पर किक मारकर किया इस मौके पर उन्होंने कहा कि खेलों से युवाओं को कैरियर संवारने और सजाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है इससे केवल नेम फ़ेम ही अर्जित नहीं होता बल्कि इससे जीवन यापन का साधन भी बन सकता है प्रदेश और देश की सरकारे भी खेल के प्रति युवाओं को बढ़ावा दे रही हैं। जानकारी हो कि टूर्नामेंट में प्रदेश की कुल 17 टीमो ने पंजीकरण कराया जिनमें गोंडा बलरामपुर लखनऊ गोला बिजनौर बाराबंकी पूरनपुर शाहजहांपुर इत्यादि है। फाइनल मैच 3 दिसम्बर को खेला जाएगा। टूर्नामेंट के पूर्व मेला कमेटी के साथ शैखुल औलिया हजरत गुलजार शाह के आस्ताने पर चादर चढ़ाई और टूर्नामेंट का ध्वज भी फहराया और दोनों टीमो के खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त किया आपको बता दे कि प्रदेश स्तरीय टूर्नामेंट विगत 88 वर्षो से 1946 से अनवरत चल रहा है जिसमे हॉकी के जादूगर ध्यानचंद पहलवान दारा सिंह राज्यपाल मो उस्मान आरिफ मुख्य मंत्री मुलायम सिंह यादव इत्यादि शिरकत कर चुके है। इस मौके पर मेला कमेटी के अध्यक्ष अब्दुल अतीक खान सचिव सैय्यद कादरी उपाध्यक्ष महबूब अफसर टूर्नामेंट सचिव मो असलम सोनू खान इशरत अली अशोक बाजपेयी हसन अली के अलावा हजारों टूर्नामेंट प्रेमी उपस्थित रहे।

अवैध खनन की प्रकाशित खबरों का संज्ञान लेकर खनन अधिकारी सीतापुर ने क्षेत्र का किया निरीक्षण

सिधौली सीतापुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। तहसील सिधौली के अंतर्गत विगत दो दिन पूर्व रात के अंधेरे में ग्राम पंचायत रेवरी सराय के गौशाला के पास से कई ट्रैक्टर ट्रालियों से जेसीबी द्वारा अवैध खनन कराया जा रहा था सूत्रों के अनुसार उक्त खनन वर्तमान प्रधान लालजी भर्गव का बताया जा रहा है।जो अवैध खनन से लेकर अवैध कटान व अनैतिक कृत्यों में माहिर है। कई प्रशासनिक विभागों में दबंगई का जलवा स्थापित करने पर हिस्ट्री सीटर की उपाधि भी उपलब्ध है। सूत्रों का दावा है। रेवरी सरांय, बसईडीह, महानंद पुरवा ,ठिठूरा आदि गांवों के आस –पास क्षेत्र से गुड्डू यादव पीली बालू का आए दिन कारोबार करता है व खनन होता रहता है।खनन कारोबारियों द्वारा स्थानीय ईंट भट्ठों पर कीमती बालू की बिक्री की जाती है। जिसकी खबरें समाचार पत्रों में आए दिन प्रकाशित होती रहती है। जिसको लेकर खनन अधिकारी सीतापुर द्वारा क्षेत्र का निरीक्षण किया गया। प्राप्त जानकारी के अनुसार निरीक्षण क्षेत्रीय लेखपालों की मौजूदगी में किया गया। निरीक्षण के दौरान अवैध खनन का स्पष्टीकरण स्थानीय लेखपाल से लेकर खनन अधिकारी तक सार्वजनिक करने में असमर्थ एवं लाचार दिखाई पड़ रहे हैं। इससे साफ जाहिर होता है कि जिम्मेदारों की संरक्षण में अवैध खनन कराया जाता है। जब उक्त विषय पर उप जिलाधिकारी सिधौली से जानकारी करने का प्रयास किया गया। तो उनका सरकारी नंबर नहीं उठ सका। जब खनन अधिकारी सीतापुर का पक्ष जानने का प्रयास किया गया तो उनका भी फोन नहीं उठ सका। स्थानीय पुलिस का कहना है अवैथ खनन और अवैध कटान से हमारा कोई लेना देना नहीं। इसकी जानकारी आप लोग संबंधित विभाग को दिया करें। अब देखना यह होगा जिम्मेदारों के निरीक्षण में क्या अवैध खनन पर रोक लग पाएगी। या फिर तहसील सिधौली के अंतर्गत अवैध खनन का कारोबार फलता फूलता रहेगा।

थाने में बंद कर पशुपालक से वसूल लिए पैसे, दो सिपाहियों पर एफआईआर

बलिया। जिले की नरही थाने की पुलिस एक बार फिर चर्चा में है। थाने के दो सिपाहियों ने एक पशुपालक को उसके खेत से उठा लिया और उससे एक खाते में एक लाख रुपये ट्रांसफर करा लिये। पीड़ित ने पुलिस के उच्चाधिकारियों से शिकायत की तो जांच में दोनों सिपाहियों की संलिप्तता पकड़ में आ गई। एसपी ने दोनों को निलंबित कर दिया है। दोनों पर मुकदमा भी दर्ज किया गया है। नरही थाना के भरौली निवासी रुदल यादव पुत्र हरेन्द्र यादव ने आरोप लगाया था कि 25 नवम्बर को वे जब अपने खेत में काम कर रहे थे तो कांस्टेबल कौशल पासवान व श्रषिलाल बिन्द उसको उठाकर थाने पर ले आए। जहां पर बैरक में ले जाकर डरा धमका कर पैसों की वसूली की गयी। पुलिस सूत्रों के अनुसार सिपाहियों ने दबाव डालकर एक खाते में करीब एक लाख रुपये ट्रांसफर करा लिए। रुदल यादव ने इसकी शिकायत एसपी से की। इसकी भनक लगते ही आरोपित सिपाहियों ने थाना छोड़ दिया। एसपी विक्रांत वीर ने बताया कि इस सूचना पर तत्काल क्षेत्राधिकारी सदर श्यामकांत से मामले की जांच कराई। सीओ की जांच में प्रथम दृष्टया दोनों आरक्षियों की संलिप्तता पायी गयी। इसके बाद तत्काल प्रभाव से दोनों आरक्षियों को कर्तव्य के प्रति घोर लापरवाही, उदासीनता व अनुशासनहीनता बरतने के आधार पर दोनों आरक्षियों कौशल पासवान व श्रषिलाल बिन्द को तत्काल प्रभाव से निलम्बित कर दिया गया। उन्होंने कहा कि रुदल यादव से मिली तहरीर पर दोनों आरक्षियों के विरुद्ध मुकदमा भी दर्ज किया जा रहा है।

किसके संरक्षण में फलफूल रहा ग्राम पंचायतो में भ्रष्टाचार

❑ मनरेगा के तहत गरीबो के हक पर भी डाल रहे डाका , लगा रहे फर्जी हाजरी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर मछरेहटा। जनपद के विकासखंड मछरेहटा की ग्राम पंचायत राजपुर प्रताप, जो कभी विकास के सपनों से परिपूर्ण थी, आज भ्रष्टाचार के दलदल में फंसी हुई है। यहां के ग्रामीणों का आरोप है कि ग्राम पंचायत के विकास कार्यों के लिए सरकार द्वारा भेजी गई धनराशि का दुरुपयोग हो रहा है। पंचायत सचिव और प्रधान की मिलीभगत से मानक विहीन कार्य करवाकर पंचायत के खातों से बड़ी मात्रा में धन निकाला जा रहा है। पंचायत में रहने वाले ग्रामीणों का कहना है कि जो ग्राम पंचायत में विकास को लेकर वादा किया गया था, वह केवल कागजों पर ही सीमित रह गया है। न तो कोई सड़क बनी है, और न ही कोई सुधार कार्य हुआ है। ग्रामीणों ने आरोप लगाया है कि जूनियर विद्यालय दुघरा में टाइलीकरण के नाम पर 15 मार्च 2024 को 381127 रुपये व पुनः उसी मद में 9 अक्टूबर 2024 को 163099 रुपयो का भुगतान कराया गया। व जूनियर विद्यालय दुघरा में शौचायल व टाईल कार्य के नाम पर 23 मार्च 2023 को 72000 रुपयो का भुगतान कराया गया है जिसमे काफी अनिमिताये बर्ती गयी है। यही नही आर.सी.सी. रोड से प्राथमिक विद्यालय तक खड़ंजा मरम्मत व हियूम पाइप कार्य के नाम पर चार बार मे लगभग 345000 रुपयो का भुगतान कराया गया है। ग्रामीणों का कहना है कि मानक विहीन कार्य करवा कर भुगतान कराया गया है। यही नही ग्राम पंचायत में ठेलिया मरम्मत के नाम पर 16 अगस्त 2024 को लगभग 29000 रुपयो का भुगतान कराया गया है जिस पर ग्रामीणों ने निष्पक्ष जांच की मांग की है।

डॉक्टर आशीष गुप्ता को दी गई डॉक्टरेट की उपाधि

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सीतापुर। जनपद के प्रमुख व्यवसायी जनप्रिय लोकप्रिय व सर्वसमाज के हितो के लिए अग्रसर होकर कार्य करने वाले प्रदेश की राजनीति में दखल रखकर लगभग 25 वर्षों तक विधायक मिश्रिख रहकर सेवा कार्य करने वाले स्वध ओमप्रकाश गुप्ता के छोटे बेटे अधिवक्ता आशीष कुमार गुप्ता चेयर मैन सेठ एम.आर. जयपुरिया स्कूल लखीमपुर खीरी को शिक्षा व सामाजिक क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों परोपकार, जनमानस की समस्यायों के निस्तारण, गरीब परिवारों की लड़की की शादीयो में सहयोग, अध्यात्मक कार्यो मे सहयोग आर्थिक सहायता बृद्धा आश्रम, कुष्ठ रोगीयो की सेवा सहित 84 कोसीय परिक्रमा में श्रद्धालुओं को भोजन वितरण व भंडारा साथ ही नवरात्रि पर्व पर नैमिष धाम में कन्या भोज के लिए अग्रसर रहते है जिसको लेकर वर्ल्ड कल्चर एंड इनवायरमेंट प्रोटेक्शन कमीशन की तरफ से डॉक्टरेट की उपाधि प्रदान की गई ।

रिमझिम इस्पात व जूही फैक्ट्री में जीएसटी टीम की छापेमारी, मचा हड़कंप

एजेंसी

हमीरपुर। सुमेरपुर कस्बे की औद्यौगिक नगरी में संचालित जूही और रिमझिम इस्पात फैक्ट्री में लखनऊ से आई जीएसटी की टीम की छापेमारी से हड़कंप मचा हुआ है। बीती रात से फैक्ट्रियों में चल रही छापेमारी गुरुवार को भी जारी है। इस दौरान सैकड़ों वर्करों को फैक्ट्रियों में प्रवेश पर रोक लगाई गई है। टीम के अधिकारी जीएसटी चोरी की आशंका पर रिकार्ड खंगालने में जुटी है। बुधवार की रात्रि करीब 11 बजे सुमेरपुर कस्बे स्थित जूही व रिमझिम इस्पात फैक्ट्रियों में लखनऊ से आई जीएसटी की डीजीजीआई टीम ने छापा मारा। दोनों फैक्ट्री कानपुर के योगेश अग्रवाल की हैं। रात से शुरू हुई जांच-पड़ताल दूसरे दिन भी जारी रही। दोनों फैक्ट्रियों में रात की शिफ्ट में बगैर रुके काम होता रहा, लेकिन सुबह की शिफ्ट में आने वाले वर्कर्स को गेट पर रोक दिया गया। ड्यूटी पर पहुंचे वर्कर्स का गेट पर ही जमावड़ा लगा रहा। जीएसटी टीम फैक्ट्री के टर्नओवर की पड़ताल कर रही है। दोनों फैक्ट्रियों में बड़े पैमाने पर टैक्स चोरी की संभावना जताई जा रही है। हालांकि टीम की ओर से अभी किसी तरह की कोई जानकारी साझा नहीं की गई है। छापेमारी कब तक चलेगी, कुछ कहा भी नहीं जा सकता है।

प्राकृतिक खेती समय की मांग: डॉक्टर राजीव

एजेंसी

कानपुर। खेती में रासायनिक उर्वरकों एवं कृषि रक्षा रसायनों के अंधाधुंध प्रयोग से मिट्टी की सेहत खराब हो रही है, तथा गुणवत्ता युक्त उत्पाद भी नहीं मिल पा रहा है। इसलिए प्राकृतिक खेती अपनाना वर्तमान समय की मांग है, जिससे मिट्टी की सेहत में सुधार होगा एवं खेती की लागत में कमी आएगी तथा टिकाऊ खेती का सपना साकार होगा। यह जानकारी गुरुवार को चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के शाकभाजी अनुभाग के सस्य विद डॉ राजीव ने दी। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक खेती का उद्देश्य सबके लिए सुरक्षित एवं पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराना है। इससे जैव विविधता को भी बढ़ावा मिलेगा। इस दिशा में डॉ राजीव द्वारा विश्वविद्यालय के सब्जी विज्ञान विभाग में तीन फसल पद्धतियों जैसे : हरी खाद पत्ता गोभी लोबिया (गर्मी), लोबिया (खरीफ) मटर, तोरई तथा मूंग, टमाटर पर प्राकृतिक खेती का शोध किया जा रहा है। फसलों पर विभिन्न प्राकृतिक घटकों जैसे जीवामृत, गोबर की खाद, जीवामृत व जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग तथा गोबर की खाद व जैविक मल्चिंग का संयुक्त प्रयोग को शत प्रतिशत रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग के तुलनात्मक अध्ययन किया जा रहा है। डॉ राजीव ने बताया गया कि गत वर्ष के अध्ययन के अनुसार सब्जी फसलों में गोबर की खाद 20 टन प्रति हेक्टेयर व जैविक मल्चिंग 7.5 टन प्रति हेक्टेयर के संयुक्त प्रयास से सर्वाधिक पत्ता गोभी में 210.09 कुंतल, लोबिया (गर्मी फसल) में 89.28 कुंतल, लोबिया (खरीफ फसल) में 87.12 कुंतल, मटर में 82.12 कुंतल, तोरई में 168.02 कुंतल, मूंग में 9.10 कुंतल तथा टमाटर में 350.68 कुंतल प्रति हेक्टेयर पैदावार प्राप्त हुई तथा इस प्राकृतिक विधि से प्राप्त उपज रासायनिक उर्वरकों की पैदावार के लगभग बराबर रही। उन्होंने बताया कि यह अध्ययन लगातार 3 साल तक किया जाएगा तथा 3 साल के परिणाम के आधार पर सब्जी आधारित फसल पद्धतियों के लिए प्राकृतिक खेती का आर्थिक विश्लेषण के उपरांत स्थानीय कृषि पारिस्थितिकी के अनुसार मॉडल विकसित होगा। डॉ राजीव ने कहा कि प्राकृतिक खेती के विस्तार के लिए केंद्र सरकार की कैबिनेट ने 25 नवंबर को कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के तहत देश में राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन को मंजूरी दी है जिसका लक्ष्य एक करोड़ किसानों को प्राकृतिक खेती के लिए प्रेरित करना है।

घने कोहरे का कहर: ट्रक और बस की टक्कर में छः घायल

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कुशीनगर। हाटा कोतवाली क्षेत्र के पंचायत के तितिला चौराहे के पास नेशनल हाईवे 28 पर तेज रफ्तार भूसा लदी ट्रक और बस में जोरदार टक्कर में छः लोग घायल हो गए। घटना गुरुवार की सुबह 5:00 की बताई जा रही है।

जब घना कोहरा छाया हुआ था तभी नेशनल हाईवे 28 पर स्थित तितिला चौराहे के समीप गोरखपुर से कसया की तरफ जा रहे थे तेज रफ्तार भूसा लदा ट्रक आगे चल रही प्राइवेट बस में पीछे से ठोकर मार दिया। और बस को रगड़ते हुए मौके से फरार हो गया। ठोकर की आवाज सुनकर आसपास के लोग जुट गए।और घायल यात्रियों को बाहर निकालकार घटना की सूचना स्थानीय पुलिस को दी।

सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंचकर घायलों को प्राइवेट वाहन से इलाज के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र सुकरौली भेजवाया। जहां चिकित्सकों ने दो घायलों की स्थिति गंभीर देखते हुए मेडिकल कॉलेज गोरखपुर के लिए रेफर कर दिया।

बिछड़े मासूम बालक को तीन दोस्तों ने मिलकर पीआरबी पुलिस के मदद से परिजनों से मिलवाया

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पडरौना,कुशीनगर। बुधवार को दोपहर पडरौना नगर के उदित नारायण डिग्री कॉलेज मार्ग पर अपने परिवार से बिछड़े एक 5 वर्षीय मासुम को पीआरबी पुलिस की मदद से उसको परिजनों से मिलाने का कार्य नगर के ही कुछ युवा दोस्तों ने मिलकर किया है। पडरौना नगर के उदित नारायण डिग्री कॉलेज मार्ग स्थित एक कॉफी शॉप से बुधवार को दोपहर सलमान खान,श्याम पांडेय विकास यादव,यह मित्र अपने-अपने के कामो से यहां से लौट रहे थे। इस दौरान इन्हें इसी मार्ग पर 5 वर्षीय एक बालक रोते हुए दिखाई दिया तीनों मित्रो ने उसके उसका नाम और परिवार के मां-बाप समेत अन्य लोगों के बारे में जानकारी हासिल की। लेकिन मासूम बालक कुछ भी बताने में असमर्थ दिखा। इसके बाद तीनों मित्रों ने डायल 112 पीआरबी पुलिस को कॉल करके इसकी सूचना दी। मौके पर पहुंची पीआरबी पुलिस ने अपने तरफ से आधे घंटे के भीतर मासूम बालक के परिजनों की खोज निकाला और मौके पर पहुंच कर मासूम बालक के पिता जटहा बाजार थाना क्षेत्र के जटहा बाजार निवासी संतोष राय को पीआरबी पुलिस की मदद से तीनों दोस्तों ने मासूम बालक को उसके पिता को हवाले कर दिया।

भोजपुरी सम्मेलन में मुख्य वक्ता होंगे डॉ रामानुज द्विवेदी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

कुशीनगर। श्रीनाथ संस्कृत महाविद्यालय हाटा कुशीनगर के हिंदी विभाग के प्राध्यापक डॉ0 रामानुज द्विवेदी कोलकाता में आयोजित होने वाली अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी और भोजपुरी सम्मेलन में मुख्य वक्ता होंगे। यह संगोष्ठी 14, 15 दिसंबर 2024 को भोजपुरी साहित्य विकास मंच कोलकाता और प्रगति शोध फाउंडेशन पश्चिम बंगाल द्वारा आयोजित की जा रही है। जिसका विषय है भारतीय भाषाओं के लोक साहित्य में मानवीय मूल्य और प्रतिरोध के स्वर।'' डॉ 0 रामानुज द्विवेदी '' संगोष्ठी के भोजपुरी परिसंवाद सत्र में भाषा का वैज्ञानिक संदर्भ और आठवीं अनुसूची'' पर अपने विचार प्रस्तुत करेंगे। इस अवसर पर उन्हनि कहा कि पूरे विश्व में लगभग 23 करोड़ से अधिक भोजपुरी बोलनेवाले लोग है।लेकिन यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि भारत में भोजपुरी को अभी तक संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल नहीं किया गया है। उन्होंने केंद्र और राज्य सरकारों से आग्रह किया कि भोजपुरी को इसका संवैधानिक अधिकार दिया ताकि भोजपुरी साहित्य और शोध को प्रोत्साहन मिल सके और क्षेत्रीय भाषा के पहचान को मजबूत किया जा सके। कार्यक्रम में भोजपुरी भाषा और साहित्य के उत्थान, संवैधानिक अधिकार, नारी विमर्श और उच्च शिक्षा में शिक्षाविद और शोधकर्ता भाग लेंगे। इनमें वरिष्ठ साहित्यकारों द्वारा शोध पर चर्चा की जाएगी। इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मॉरीशस के वरिष्ठ साहित्यकार आचार्य राजेंद्र राय मिसिर होंगे, जबकि कार्यक्रम की अध्यक्षता भोजपुरी साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर डॉ. विमलेश त्रिपाठी करेंगे।

दिल्ली-एनसीआर व पश्चिमी उप्र में गांजे की सप्लाई करने वाला तस्कर गिरफ्तार, 50 लाख का गांजा बरामद

एजेंसी

गाजियाबाद। क्राइम ब्रांच व मसूरी थाने की पुलिस ने गुरुवार को मसूरी थाना क्षेत्र से 50 लाख रुपये के गांजे के साथ एक अन्तरराज्यीय गांजा तस्कर को गिरफ्तार किया है। इस गांजे को वह उड़ीसा से ला रहा था और दिल्ली एनसीआर व पश्चिमी उत्तर प्रदेश में उसकी सप्लाई करनी थी। लेकिन उसे पुलिस ने दबोच लिया। उसके कब्जे से 101 किलो 600 ग्राम गांजा तथा एक कैंटर वाहन बरामद किया है। एडीसीपी सच्चिदानंद ने बताया कि क्राइम ब्रान्च पुलिस गुरुवार को उडीसा से लाकर पश्चिमी उत्तर प्रदेश , दिल्ली एनसीआर क्षेत्र मे गाँजा तस्करी करने वाले अन्तरराज्यीय गांजा तस्कर को डासना से मुरादनगर जाने वाले रास्ते पर डी.एम.ई. अण्डरपास के नीचे थाना क्षेत्र मसूरी से गिरफ्तार किया है। उसका नाम सुरेंद्र है जो दसवीं पास है। वह मथुरा का रहने वाला है। पूछताछ पर आरोपी सुरेन्द्र ने बताया कि उसकी पारिवारिक स्थिति बहुत खराब थी। इसीलिए यह बड़ी गाड़ी की ड्राइवरी का काम करके अपना घर चलाता था। लेकिन ड्राईविंग के काम में उसे ज्यादा फायदा नहीं होता था। ट्रक ड्राईवरी करते हुए वह दिल्ली, हरियाणा व पश्चिमी उत्तर प्रदेश से माल लोड करके उड़ीसा पश्चिम बंगाल ले जाता था। इसी दौरान भुवनेश्वर (उड़ीसा) में सुरेन्द्र की मुलाकात एक ऐसे ड्राइवर से हुई जो अन्य माल के साथ गांजे की तस्करी करता था। उसने सुरेन्द्र को गांजा तस्करी के बारे में बताया और कहा कि उड़ीसा से दूसरे राज्यों में गांजे की तस्करी करने में काफी फायदा होता है। उस ड्राइवर ने सुरेन्द्र को उड़ीसा के ही ओमवीर से मिलवाया जो उड़ीसा से देश के विभिन्न राज्यों में गांजे की तस्करी करता था। ओमवीर को भी ऐसा व्यक्ति चाहिये था जो पश्चिमी उत्तर प्रदेश, दिल्ली एनसीआर हरियाणा में गांजे की तस्करी कर सके और उसका कोई पुराना रिकार्ड न हो। गांजा तस्करी करने के लिए गांजा देकर जिस पार्टी को और जिस स्थान पर सप्लाई करनी होती थी वह पार्टी ओमवीर ही बताता था। उड़ीसा राज्य से गांजे की तस्करी करके सम्बंधित पार्टी तक पहुँचाने पर प्रत्येक चक्कर सुरेन्द्र को 40 से 50 हजार रुपये प्रति कुन्टल मिलते थे । आरोपी ने यह भी बताया कि वह कैन्टर गाड़ी में उड़ीसा से गांजा लोड करके चलता है तो अपना फोन बन्द कर लेता है और किसी से भी सम्पर्क नहीं करता है। जब तक कि माल को उसके तयशुदा जगह पर न पहुँचा दे। वह गाँजा तस्करी का काम पिछले करीब 4-5 वर्षों से कर रहा है। सुरेन्द्र ने कभी भी गांजा तस्करी के काम में किसी अन्य को शामिल नही किया और न ही अपने किसी जानने वाले को इस बारे में बताया है। गाँजा तस्करी के काम में कई गुना फायदा होता है जिससे यह अपने घर के खर्चे व शौक पूरा करता है। पुलिस ने विधिक कार्यवाही करते हुए उसे जेल भेज दिया।

खनन अधिकारी ने सीज किया सिल्ट लदा दो ट्राली ट्रेक्टर

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पडरौना, कुशीनगर। नेबुआ नौरंगिया थाना क्षेत्र के कौवासार खजुरिया माईनर में धड़ल्ले से चल रहा सिल्ट खनन को गुरुवार को खनन अधिकारी ने सुबह चार बजे से छापेमारी कर दो ट्रेक्टर ट्राली को सीज कर दिया। क्षेत्र के कौवासार में खनन अधिकारी अभिषेक सिंह ने खजुरिया माईनर में हो रहे सिल्ट खनन के दौरान दो ट्रेक्टर ट्राली को सीज कर दिया। खनन अधिकारी के गश्त के दौरान पहला ट्रेक्टर ट्राली को कौवासार के पुल पर पकड़ा दुसरा नहर में सिल्ट लोड करते। दोनों ट्रेक्टर ट्राली को थाना नेबुआ में सीज की कार्रवाई करते हुए थाना को सुपुर्द कर दिया गया है।

इस कारवाई से अवैध खनन धंधेबाजों में हड़कंप मचा हुआ है।

खान अधिकारी अभिषेक सिंह ने बताया कि चार दिनों से इन धंधेबाजों की छापेमारी कर पकड़ने का अभियान चल रहा था।

दोनों ट्रेक्टर ट्राली एक ही वाहन स्वामी का है उसके भी खिलाफ कार्रवाई किया जा रहा है। माईनर में लगभग आठ सौ मिटर तक सिल्ट की अवैध खोदाई कर सिल्ट को धंधेबाजों ने ठिकाने लगा दिया है।

नहर में सिल्ट की अवैध खनन पर अभी तक सिंचाई विभाग ने गंभीरता से नहीं लिया है।

चित्रगुप्त मंदिर में शिवलिंग स्थापित करने का लिया गया निर्णय

कुशीनगर कैनविज टाइम्स संवाददाता। श्रीचित्रगुप्त मंदिर समिति की बैठक पडरौना नगर के रामकोला रोड श्रीचित्रगुप्त धाम स्थित श्रीचित्रगुप्त मंदिर परिसर मे संगठन के अध्यक्ष नरेन्द्र वर्मा की अध्यक्षता व मंदिर के पीठाधीश्वर श्रीदास महराज की मौजूदगी मे हुई। बैठक में पूर्व की कार्रवाई पर चर्चा करते है आगामी कार्य योजना पर प्रस्ताव पारित किया गया। बैठक का संचालन महासचिव संजय चाणक्य ने की। तयशुदा कार्यक्रम के तहत आयोजित बैठक मे सर्वप्रथम समिति के महासचिव संजय चाणक्य ने श्री चित्रगुप्त मंदिर के बायी ओर खाली भू-भाग पर महादेव का शिव लिंग स्थापित करने व चित्रगुप्त मंदिर का हाल बढाकर गौशाला के अतिंम दीवार तक करने का प्रस्ताव रखा। इस पर संगठन के उपस्थित पदाधिकारी व सदस्यों ने अपनी सहमति जताई। साथ ही इसके संगठन के कोषाध्यक्ष हरेन्द्र वर्मा ने चित्रगुप्त मंदिर के वर्षों से टपक रहे छत को मरम्मत कराने का सुझाव दिया जिसे सर्वसम्मत से पारित करते हुए यह निर्णय लिया गया कि खाली भू-भाग पर शिवलिंग की स्थापना के दुसरे-तीसरे दिन चित्रगुप्त मंदिर के छत का मरम्मत कार्य शुरू करा दिया जाये ताकि शिव मंदिर के साथ ही श्रीचित्रगुप्त मंदिर के छत मरम्मत का कार्य भी पूर्ण हो जाये। इसी कडी में मंदिर के पीठाधीश्वर श्रीदास महराज ने अगले सप्ताह से शुरू होने वाले आठ दिवसीय भागवत कथा को बेहतर ढंग से संपन्न कराने व कथा मे अन्य समाज की तरह चित्रांश समाज के लोगो को जागरूक कर कथा मे सहभागिता बनने का जोर दिया। इस प्रस्ताव पर अध्यक्ष नरेन्द्र वर्मा व जिला सचिव सुनील श्रीवास्तव ने समर्थन किया सर्व सम्मत से यह प्रस्ताव भी पारित किया गया। इस अवसर पर जिला उपाध्यक्ष अनिल श्रीवास्तव, मिलन श्रीवास्तव, हिमांशु श्रीवास्तव, सौरभ जायसवाल, अमित श्रीवास्तव, बिंदास श्रीवास्तव सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

खलिहान की भूमि पर अवैध अतिक्रमण करने का आरोप,मुख्यमंत्री पोर्टल पर शिकायत

कुशीनगर कैनविज टाइम्स संवाददाता। विकास खण्ड तमकुही के सरेया बुजुर्ग गांव के ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री पोर्टल पर शिकायत करके गांव की खलिहान की भूमि पर अराजक तत्वो के द्वारा अवैध अतिक्रमण करने का आरोप लगाया है ।ग्रामीणों का आरोप है कि तहसील प्रशासन से लगायत डीएम तक इसकी शिकायत पूर्ब में की जा चुकी है लेकिन कोई कार्यवाही नही हो सका है। ग्रामीण विश्वजीत सिंह सहित करीब 40 से अधिक लोगो ने मुख्यमंत्री पोर्टल पर शिकायत कर आरोप लगाया है कि राजस्व अभिलेख में दर्ज आराजी नम्बर,,,64ख,119 ,193, 1082,1083 ,940,1251ख,1252,607,616,439 व 939 की भूमि खलिहान के नाम से दर्ज है। आराजी नम्बर 1082 व 1083 में दुर्गा मंदिर भी स्थित है ।इस सभी जमीनों पर गांव के कुछ दबंग किस्म के ब्यक्तियों ने अवैध अतिक्रमण कर लिया है ।शिकायतकर्ता विश्वजीत ने बताया उक्त जमीनों पर अतिक्रमण की शिकायत पूर्व में तहसील प्रशासन समेत जिलाधिकारी कार्यालय तक की जा चुकी है लेकिन अतिक्रमण करने वालो पर नाही कोई ठोस कार्यवाही हुई है नही जमीन अतिक्रमण मुक्त हो सका है ।अब ग्रामीण इसकी शिकायर मुख्यमंत्री पोर्टल पर किये है ।इस सम्बंध में एसडीएम तमकुहीराज विकास चन्द ने बताया कि मामला सज्ञान में है तहसीलदार को मामले की जांच कर कार्यवाही करने का आदेश दिया गया है।

ई-रिक्शा वाहनों के रूट का हो निर्धारण

पडरौना,कुशीनगर कैनविज टाइम्स संवाददाता। पडरौना शहर में प्रतिदिन लगने वाले जाम की समस्या से जनता परेशान है, जाम में फंसने से लोगों का समय और ईंधन दोनों बर्बाद हो रहा है। यातायात विभाग की मुस्तैदी भी कुछ खास प्रभाव नहीं डाल पा रही है,ऐसे में इस समस्या से निजात दिलाने के लिए सड़क सुरक्षा के क्षेत्र में काम करने वाली संस्था रिव्यू चैरिटेबल के जिला संयोजक संदीप मिश्र ने यातायात विभाग को अधिकतर अनावश्यक रूप से चल रहे ई रिक्शा वाहनों को नियंत्रित करने के लिए उपाय सुझाया है,इसमें वाहनों की कलर कोडिंग और रूट नंबर आवंटन की बात कही गई है । पत्रकारो से बात करते हुए श्री मिश्र ने बताया कि यातायात प्रभारी सत्य प्रकाश सिंह से उन्होंने यह बात बुधवार को हुई सड़क सुरक्षा संगोष्ठी में जिलाधिकारी के समझ भी रखी,इस पर जिलाधिकारी ने भी कुछ शर्तों के साथ अपनी सहमति जताई है,अब संबंधित विभाग भी इसे लागू करने की योजना बना रहा है।

पिपराइच चीनी मिल में गन्ना पेराई सत्र का शुभारंभ

गोरखपुर। पिपराइच चीनी मिल में गुरुवार को पूज अर्चन के साथ पेराई सत्र 2024-25 का शुभारंभ किया गया। स्थानीय विधायक महेन्द्र पाल सिंह ने हवन पूजन के बाद डोंगे का पूजन किया। चीनी मिल के जी.एम. अरविन्द कुमार, पूर्व राज्यमंत्री राधेश्याम सिंह, ब्लॉक प्रमुख जनार्दन जायसवाल, पूर्व प्रमुख आनन्द शाही, चेयरमैन संजय मद्धेशिया सहित अन्य लोग उपस्थित थे। चीनी मिल के पेराई सत्र के शुभारंभ से पहले बैलगाड़ी से गन्ना लेकर आए किसान और बैलों का विशेष पूजन कराया गया। विधायक ने बताया कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ का इस मिल से विशेष लगाव रहा है। गन्ना उत्पादक किसानों का शत प्रतिशत भुगतान सरकार द्वारा तय समय पर किया जाता है। विधायक ने आस पास के किसानों से अधिक से अधिक गन्ना उत्पादन करने का निवेदन किया जिससे चीनी मिल में पेराई ठीक ढंग से हो सके। इस अवसर पर मिल की ओर से गन्ना उत्पादकों को और अन्य स्थानीय कृषि समुदाय को धन्यवाद दिया गया। कार्यक्रम में केन यूनियन के चेयरमैन गुलाब सिंह, किसान नेता लव सिंह, संघर्षमणि उपाध्याय, किसान रवि सिंह, नन्हें सिंह और आस पास के किसान उपस्थित रहे। अवैध खनन पर पट्टाधारक पर रु 11.43 लाख का लगा जुर्माना।

ट्रक ने मोटसाइकिल में मारी टक्कर, महिला की मौत व भतीजा घायल

एजेंसी

फतेहपुर। जिले में गुरुवार को शादी समारोह से घर वापस आ रहे मोटरसाइकिल सवार मार्ग दुर्घटना के शिकार हो गए। हादसे में बाइक पर सवार महिला की मौत हो गई और मोटरसाइकिल चालक भतीजा गंभीर रूप से घायल हो गया। जानकारी पर पहुंची पुलिस ने मृतका के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। धाता थाना क्षेत्र के बम्हरौली गांव निवासी सविता देवी(30)पत्नी भुक्खल पासवान अपने भतीजे आनंद के साथ बाइक पर सवार होकर थाना क्षेत्र के कल्यानपुर कचरौली गांव शादी समारोह में शामिल होने गई थीं। घर वापस लौटते समय रास्ते में मोटरसाइकिल सवार धाता कस्बा स्थित ईदगाह के पास जब पहुंचा तभी सामने से आ रहा तेज रफ्तार ट्रक ने मोटरसाइकिल में जोरदार टक्कर मार दी। हादसे में महिला व उसका भतीजा गंभीर रूप से घायल हो गए। दुर्घटना के बाद चालक वाहन समेत मौके से फरार हो गया। राहगीरों की सूचना पर मौके पर पहुंची पुलिस ने महिला व युवक को सीएचसी धाता पहुंचाया। जहां चिकित्सक ने महिला को मृत घोषित कर दिया। वहीं युवक की हालत को नाजुक देखते हुए डॉक्टर ने मंझनपुर जिला अस्पताल रेफर कर दिया। हादसे की सूचना पर सीएचसी पहुंचे मृतका की बेटी लक्ष्मी, कोमल व बेटा दुख से बदहवास हो गये। मृतका के पति ने अज्ञात ट्रक चालक के खिलाफ थाना पुलिस को तहरीर दी है। थानाध्यक्ष आलोक पांडेय ने बताया कि शव को कब्जे में लेकर अग्रिम कानूनी कार्रवाई की जा रही है। ट्रक चालक पर मुकदमा दर्ज किया गया है। वाहन सहित चालक की तलाश की जा रही है।

बीएचयू में वेद मन्त्रों के साथ मनीषियों ने किया शास्त्रार्थ,जीवंत हुई काशी की प्राचीन परम्परा

एजेंसी

वाराणसी। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान संकाय सभागार में गुरूवार को काशी की शास्?त्रार्थ परम्परा वेद मंत्रों के साथ जीवंत हुई। मनीषियों ने वेदान्त, मीमांसा, न्याय आदि शास्त्रों पर अपनी पकड़ दिखा धारा प्रवाह शास्त्रार्थ किया।

अवसर रहा संकाय की ओर से आयोजित त्रिदिवसीय 'अखिल भारतीय शास्?त्रार्थ सभा' के उद्घाटन का। श्रीगणपति एवं महामना पंडित मदन मोहन मालवीय की प्रतिमा पूजन के बाद काशी के वैदिक विद्वानों ने इसकी शुरूआत की। उद्घाटन सत्र में ऋग्?वेद की शाकल शाखा का स्वाध्याय रामचन्द्र देव, रोहित देव ने संपादित किया। इसी तरह शुक्ल यजुर्वेद की माध्यन्दिनी शाखा का स्वाध्याय जयकृष्ण दीक्षित, भालचन्द्र बादल, डॉ. मणि झा, नारायण उपाध्याय ने किया। काण्व शाखा का स्वाध्याय श्रीनिवास पुराणिक, अनिरुद्ध पेठकर, कृष्ण यजुर्वेद की तैत्तिरीय शाखा का स्वाध्याय शेखर द्रविड, नारायण घनपाठी, वीर राघव, कृषमुरारि त्रिपाठी, सामवेद की कौथुम शाखा का स?वाध्याय पं.हरदत्त त्रिपाठी, अशोक त्रिपाठी ,अथर्ववेद की शौनक शाखा का पारायण गोपाल रटाटे, गोविन्द ने किया।

शास्त्रार्थ सभा के पहले सत्र में चेन्नई के वेदान्त, मीमांसा, न्याय आदि शास्त्रों के विद्वान् आचार्य मणि द्राविड ने असाधारण प्रतिभा दिखाई।

उन्होंने मीमांसा शास्?त्र के उपक्रमन्?याय विमर्श नामक शीर्षक से अपना शास्त्रार्थ प्रस्तुत किया। सहज व मनोरम शैली में गम्भीर विषय की प्रस्तुति से उन्हें जमकर सराहना मिली। न्यायशास्?त्र के ''सर्वांशे प्रमात्वविचारः'' विषय पर तिरुपति के ज्योतिष आदि शास्त्रों के मूर्धन्य विद्वान आचार्य गणपति भट्ट ने अपना शास्त्रार्थ प्रस्तुत किया। द्वितीय सत्र में देवप्रयाग, उत्तराखण्ड के व?याकरण विद्वान् आचार्य गणेश्वर झा ने उत्सर्गापवादस्थले बाध्यतावच्छेदकधर्मविचारः'' विषय पर शास्त्रार्थ किया। मीमांसा शास्त्र के ''धर्मलक्षणम्'' विषय पर पुणे, महाराष?ट्र के विद्वान् आचार्य राजेश्वर देशमुख ने शास्त्रार्थ प्रस्तुत किया। इसी तरह वेदान्?त दर्शन के ''प्रमिताधिकरणम्'' विषय पर तिरुपति (आन्ध्रप्रदेश) के आचार्य के.एस. सतीश ने शास्त्रार्थ प्रस?तुत किया। इसके पहले शास्त्रार्थ में संकाय प्रमुख प्रो. राजाराम शुक?ल, प्रो. माधव जनार्दन रटाटे, डॉ. श्रीराम ए.एस. आदि विद्वानों ने बीच-बीच में सवालों की झड़ी लगा दी। कार्यक्रम में छपरा विश?वविद्यालय के कुलपति प्रो. हरिकेश सिंह, प्रो. जयशंकर लाल त्रिपाठी, प्रो. चन्द्रमौलि द्विवेदी, प्रो. गोपबन्?धु मिश्र, प्रो. सदाशिव कुमार द्विवेदी, प्रो. रामकिशोर त्रिपाठी आदि विशिष?ट विद्वानों के साथ ही संकाय के प्रो. कमलेश झा, प्रो. कौशलेन्द्र पाण्डेय, प्रो. पतंजलि मिश्र, प्रो. शत्रुघ?न त्रिपाठी, प्रो. हरीश्वर दीक्षित आदि की खास उपस्थिति रही।

मरीजों के रजिस्ट्रेशन के साथ आभा आईडी भी करें जनरेट : जिलाधिकारी

एजेंसी

फतेहपुर। जिले में गुरुवार को जिलाधिकारी रविन्द्र सिंह ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र गाजीपुर का औचक निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने रजिस्ट्रेशन कक्ष, ओपीडी कक्ष, पीएनसी कक्ष, एएनसी कक्ष, ट्रायेज रूम, स्क्रब रूम, नर्स ड्यूटी कक्ष, इंजेक्शन कक्ष, आयुष्मान भारत कक्ष, प्लास्टर कक्ष, पैथोलॉजी कक्ष, ऑपरेशन कक्ष, डॉट्स सेंटर, ड्रग स्टोर, एक्सरे रूम, हर्बल गार्डन, प्रसव कक्ष इमरजेंसी, मेडिकल स्टोर में संचालित गतिविधियों को देखा। उन्होंने अधीक्षक को निर्देश देते हुए कहा कि मरीज जब रजिस्ट्रेशन कराने आएं उसी के साथ उनकी आभा आईडी भी जनरेट कर दें, उसके लिए अलग से विंडो बनाए तथा ओपीडी रजिस्टर में मरीज की आभा आईडी अंकित करें और मरीजों की संख्या के अनुसार अतिरिक्त कुर्सियों की व्यवस्था कर लें जिससे गर्भवती महिलाओं और अन्य मरीजों को बैठने में सुविधा हो। इसके साथ ही कोल्ड चेन रूम में रखी गई वैक्सीनों को देखा और आईएलआर में वैक्सीन भंडारण की प्रक्रिया को जाना तथा सीएमओ को निर्देश दिए कि समयानुसार सभी मरीजों, गर्भवती महिलाओं, बच्चों का टीकाकरण कराएं तथा प्रतिदिन बायोमेडिकल वेस्ट का निस्तारण भी सुनिश्चित करें। साफ-सफाई व पीने के पानी की व्यवस्था संतोषजनक पाए जाने पर अधीक्षक को आगे भी ऐसी व्यवस्था बनाए रखने को कहा। नर्स ड्यूटी रूम में प्रसव कक्ष रजिस्टर को देखा तथा उनमें अंकित सभी पैरामीटरों की जानकारी ली। अधीक्षक द्वारा अवगत कराया गया कि सभी डिटेल मंत्रा पोर्टल पर फीड किया जाता है। जिलाधिकारी ने सुनीता नाम की गर्भवती महिला से स्वास्थ्य केंद्र पर मिलने वाली सुविधाओं की जानकारी की तथा अधीक्षक को निर्देश दिए की सर्दियों में ब्लोअर व कम्बल की व्यवस्था तत्काल करें। इंजेक्शन कक्ष में आने वाले सभी मरीजों के लिए इंजेक्शन की उपलब्धता की जानकारी ली और कहा कि एआरबी, एएसबी, का स्टॉक मेंटेन रखें। आयुष्मान भारत कक्ष में प्रतिदिन बनने वाले आयुष्मान कार्ड की जानकारी ली और अधीक्षक को निर्देश दिए कि 70 वर्ष के ऊपर के सभी व्यक्तियों का आयुष्मान कार्ड बनाएं और सभी गर्भवती महिलाओं की सुगर, बीपी, हीमोग्लोबिन व अन्य आवश्यक जांच कर रिपोर्ट से ससमय अवगत कराएं। मेडिकल स्टोर में दवाओं की उपलब्धता को देखा और सीएमओ को निर्देश देते हुए कहा कि यह सुनिश्चित करें कि दवाओं की उपलब्धता निर्बाध रूप से बनी रहे। परिसर स्थित हर्बल गार्डन में और औषधीय पौधों को लगवाने के निर्देश अधीक्षक को दिए। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. राजीव नयन गिरी, सीएचसी अधीक्षक डॉ. पंकज गुप्ता, चिकित्साधिकारी डॉ. केके यादव सहित संबंधित उपस्थित रहे।

तीन हजार गृह स्वामियों पर हाउस एंड वाटर टैक्स बकाया, नोटिस जारी

एजेंसी

मुरादाबाद। मुरादाबाद नगर निगम ने महानगर के 70 वार्डों में गृह कर व जल कर के बकाये की वूसली को लेकर सख्ती करनी शुरु कर दी है। महानगर के विभिन्न वार्डों में 3000 ऐसे करदाता हैं, जिन पर विभाग के करोड़ों रुपये बकाया हैं। नगर आयुक्त दिव्यांशु पटेल ने गुरुवार को बताया कि कर बकाया वाले इन सभी भवन स्वामियों व संस्थाओं को नोटिस भेजे गए हैं और 30 दिनों के अंदर धनराशि जमा करने का समय दिया जाएगा। इस अवधि में भी यदि बकाया राशि जमा नहीं की तो नगर निगम की ओर से कुर्की की प्रक्रिया न्यायालय के माध्यम से की जाएगी। नगर निगम की ओर से हर वार्ड के ऐसे बकायेदारों को चिहिनत किया गया, जिन पर जल व गृह का एक लाख रुपये से अधिक बकाया है। इन सभी को नोटिस राजस्व निरीक्षकों की ओर से भेजा जा रहा है। नगर आयुक्त ने बताया कि उन्होंने सभी राजस्व निरीक्षकों को इसके लिए एक सप्ताह का समय दिया है। एक सप्ताह के बाद राजस्व निरीक्षकों को बताना होगा कि उन्होंने किस वार्ड में कितने नोटिस जारी किए हैं और अब तक कितनी वसूली हुई है। निगम द्वारा बकायेदारों को निगम की ओर से पूर्व में भी नोटिस भेजा गया था, लेकिन उसका असर बकायेदारों पर ज्यादा नहीं हुआ। इस दौरान विभिन्न वाडी में कैंप भी लगाए गए थे। कई बकायेदारों ने अपनी बकाया राशि शिविरों में जमा भी की। लेकिन, जिन्होंने अब तक बकाया राशि नहीं जमा की है। अब जो नोटिस बकायदारों को पहुंचें हैं, वह अंतिम नोटिस है। इसके बाद नगर निगम सीधे कुर्की की कार्रवाई करने के मूड में है।

उत्तर रेलवे

ई-निविदा सूचना

उप-मुख्य अभियन्ता/नि.-चतुर्थ/लखनऊ द्वारा भारत के राष्ट्रपति के लिए एवं उनकी ओर से निम्नलिखित कार्य के लिए निर्धारित प्रोफॉर्मा पर मोहर बन्द **ई-निविदा एकल पैकेट** में आमंत्रित की जाती हैं।

1	**कार्य का नाम व स्थान :** उप मुख्य अभियन्ता/निर्माण-चतुर्थ/उत्तर रेलवे, लखनऊ के अधीन चारबाग रोलिंग स्टॉक वर्कशॉप के अन्दर ई.एल.पी.ओ.एच. शॉप में ओवरहॉलिंग सुविधा के लिए स्टील रूफ ट्रस शेड, बिल्डिंग, रोड नाली एवं जल निकासी सुविधा का निर्माण तथा अन्य विविध सिविल कार्य।
2	**कार्य पूरा करने की अवधि :** 07 (सात) माह
3	**कार्य की अनुमानित लागत :** रु. 480.10 लाख
4	**धरोहर राशि :** रु. 3,90,100.00
5	**ई-निविदा जमा करने की तारीख/समय एवं निविदा खुलने की तारीख :** निविदाएँ दिनांक 26.12.2024 को 11.30 बजे तक आई.आर.ई.पी.एस. के वेबसाइट www.ireps.gov.in पर अपलोड की जा सकती है तथा दिनांक 26.12.2024 को समय 11.30 बजे खोली जाएगी।
6	**विस्तृत निविदा सूचना व प्रपत्र :** विस्तृत निविदा सूचना व निविदा प्रपत्र दिनांक 04.12.2024 से आई.आर.ई.पी.एस. के वेबसाइट www.ireps.gov.in पर उपलब्ध रहेंगे व दिनांक 12.12.2024 से 26.12.2024 तक ई-निविदा अपलोड की जा सकती है।

सं.: 73-टेण्डर/उप-मुख्य अभियन्ता/नि.-चतुर्थ/लखनऊ दिनांक: 28.11.2024 3678/24

ग्राहकों की सेवा में मुस्कान के साथ

बेसहारा पशुओं से किसान परेशान

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा । जिले में खेतों मे बेसहारा पशुओं की चहलकदमी ने किसानों का जीना दुशवार कर दिया है इन पशुओं के आतंक से किसान रात - रात भर खेत पर रहकर फ्सल की रखवाली कर रहे है और यह समस्या सिर्फ एक जगह का नहीं पूरे जनपद की है या कहां जाएगी पूरे प्रदेश में है तो भी कोई बड़ी बात नहीं है।बेसहारा पशुओं की समस्या के लिए न सिर्फ सरकार और प्रशासन जिम्मेदार है।

बल्कि आम आदमी भी उतना ही जिम्मेदार है जो अपने मवेशियों को खुले में छोड़ देते हैं तब जो गाय दूध देना बंद कर देती है उसे पशुपालक खूंटे में नहीं बांधना चाहता है जिसका सीधा नुकसान किसान को ही उठाना पड़ रहा है मवेसी खेत चर लेते है।बीते कई वर्षो से गोण्डा जिले के किसान बेसहरा पशुओं से खासा परेशान है और कई किसानों ने आगे खेती न करने का इरादा बना लिया है इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा की बेसहारा पशुओं के आतंक का असर कहीं न कहीं अर्थव्यवस्था पर भी पड़ने वाला है। क़ई सारी चुनौतियों का सामना करते हुए किसान खेती करता हैणू किसानी के दौरान प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना भी किसानों को करना पड़ता है ऐसे में उनकी फ्सल जब बेसहारा पशु खेतों से चर लेते है तो उन्हें काफी तकलीफ होती हैण नुकसान भी झेलना पड़ता है किसानों का कहना है कि शासन द्वारा किसान और गोवंश हित में कई ऐलान किए गए जिले के कई स्थानों में गौशाला का निर्माण कराया और कई जगह बनाने की योजना बनाई जा रही है जहां पशुओं को भोजन पानी आदि की समुचित व्यवस्था होगी।लेकिन न जाने किन कर्म से यह योजनाएं धरातल पर सफल होती नहीं दिख रही हैं जिससे आवारा पशुओं की समस्या से किसान बेहद परेशान है।

किसान बताते हैं कि बेसहारा पशु किसानों के लिए बड़ी समस्या है लेकिन किसान ही इन पशुओं को छोड़ते है इसलिए सभी आधार से जुड़े टैग वाले पशुओं के मालिकों को जुर्माना होना चाहिए इससे कुछ हद तक चाहे ये समस्या हल हो जाएगी।

जिलाधिकारी का आदेश ठंडे बस्ते में,भूमि धोखाधड़ी के मामले में नहीं हुई कार्रवाई

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा। स्थानीय तहसील क्षेत्र के एक गांव में एक जड़ बुद्धि मूकबधिर व्यक्ति की भूमि को बिना जिलाधिकारी की अनुमति के फर्जी कूटरचित तरीके से बैनामा करा लिए जाने के गंभीर मामले में हुई शिकायत पर डीएम के द्वारा दिये गये तत्काल जांच के आदेश के बावजूद भूमि धोखा धड़ी से जुड़ा मामला स्थानीय अधिकारियों द्वारा ठंडे बस्ते में डाल दिया गया है और अभी तक कोई कार्रवाई ना होने से जिम्मेदारों की कार्यशैली पर गंभीर सवाल खड़े हो रहे हैं।मामला कर्नलगंज तहसील व कोतवाली क्षेत्र के ग्राम कादीपुर का है। जहां एक जड़ बुद्धि व्यक्ति जो मूकबधिर था उसकी संपत्ति जिलाधिकारी के संरक्षण में थी। इस जड़ बुद्धि व्यक्ति के मृत्यु के बाद धरती के सौदागरों की निगाह उस जमीन पर पड़ गई और फिर एक कपटपूर्वक कूटरचित ढंग से गाटा संख्या 337/3.840 भूमि में जड़ बुद्धि व्यक्ति शिवपाल पुत्र गोविन्द प्रसाद की जमीन को गोमती नाम के व्यक्ति ने भावना अग्रवाल, अतुल अग्रवाल आदि के नाम से बैनामा कर दिया। जबकि शासन के आदेशों के अनुसार जड़ बुद्धि के वारिस के नाम तब तक जमीन नहीं हो सकती है जब तक जिलाधिकारी की एनओसी (अनापत्ति प्रमाण पत्र) नहीं लगता है। लेकिन गोमती नाम के व्यक्ति ने धरती के सौदागरों के चक्कर में पड़कर जमीन का बैनामा कर दिया। ऐसे में कहीं ना कहीं बैनामा करने-कराने में रजिस्ट्रार को भी संलिप्त होना पाया जाता है। जो की इस वक्त एसआईटी के चंगुल में फंसकर जेल की रोटी तोड़ रहा है। वही इस प्रकरण में समाजसेवी संतोष शुक्ला ने पूरे प्रकरण की सही जांच कराकर कार्यवाही करने की जिलाधिकारी से अपील की थी। जिससे की धरती के सौदागरों का हौसला बुलंद ना हो सके और फिर भविष्य में इस कृत्य की पुनरावृत्ति ना हो। इस जालसाजी के पूरे खेल में तत्कालीन हल्का लेखपाल की भी मिलीभगत बताई जाती है।मामले को जिला धिकारी नेहा शर्मा ने गंभीरता से संज्ञान में लेते हुए कर्नलगंज के उपजिलाधिकारी को तत्काल जांच करने के निर्देश दिए थे लेकिन जिलाधिकारी का निर्देश कर्नलगंज तहसील के ठंडे बस्ते में दबकर रह गया। ऐसे में गंभीर सवाल यह भी उठता है कि कहीं भावना अग्रवाल और अतुल अग्रवाल के प्रभाव में आकर तो यह भूमि धोखाधड़ी की फाइल नहीं दब गई।

जिले हरे पेड़ों की कटान से क्षेत्र बनेगा रेगिस्तान

❐ जगह-जगह ट्राली और धर्मकांटे पर लकड़ियों का दिखता है ढेर

कैनविज टाइम्स संवाददाता

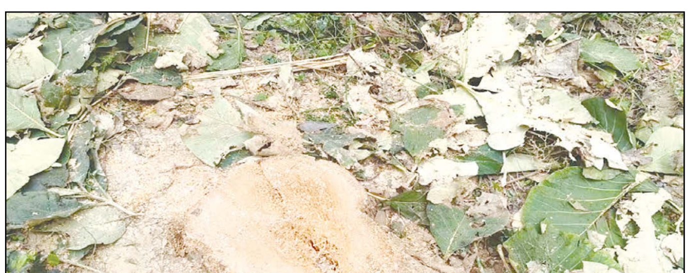

गोण्डा। पुलिस और वन विभाग की मिलीभगत के चलते प्रतिबंधित हरे पेड़ों की कटान जोरों पर की जा रही है शिकायत के बाद अधिकारी लकड़ी ठेकेदारों पर नाम मात्र के लिए जुर्माना काट कर रसीद थमा देते हैं यानि वन अधिनियम के तहत मुकदमा दर्ज कर इति श्री कर लेते हैं।जिम्मेदार अधिकारी सब कुछ जान कर भी अनजान बने रहते हैं।

मोतीगंज थाना क्षेत्र के अंतर्गत विभिन्न हलकों में पुलिस व वन विभाग की मिलीभगत से प्रतिबंधित हरे पेड़ों को काट कर सम्बंधित विभाग को चुनौती दे रहे हैं इतना ही नही दिन दहाड़े हरे पेड़ो पर आरा चलाकर समबन्धित विभाग की करतूतों की पोल भी खोल रहे हैं।

जिसके कारण क्षेत्र में खुले आम हरियाली का कत्ल किया जा रहा है।विभागीय अधिकारी मूक दर्शक बनकर तमाश बीन का किरदार निभा रहे हैं और वहीं लकडी ठेके दारों द्वारा प्रतिबंधित हरे पेडों को तेजी से काटा जा रहा है।सूत्र बता रहे है कि शिकायत के बाद वन विभाग के अधिकारियों द्वारा नाम मात्र के लिए जुर्माने की रसीद थमा दी जाती है।

वहीं नाम न छापने की शर्त पर एक लकड़ी ठेकेदार ने बताया कि प्रतिबन्धित लकड़ियों को काटने के लिए स्थानीय पुलिस को सात हजार रुपये प्रति ट्राली देने के बाद ही पेड़ों पर काम लगाया जाता है और वहीं दो से तीन हजार रुपये वन विभाग के अधिकारियों को भी देना पड़ता है और छूट की लकड़ी काटने के लिए भी स्थानीय पुलिस को दो हजार रुपये ट्राली देनी पड़ती है।पुलिस के मुताबिक लकड़ी कटान बन्द है ''लेकिन ट्राली धर्मकांटा व आरा मशीन पर लकड़ियों का डम्प लगा रहता है।

इससे यह साबित हो रहा है कि क्षेत्र में प्रतिबंधित व छूट की लकड़ियों को काटा जा रहा है।लकड़ी कटान के सम्बन्ध में वन विभाग के अधिकारी से बात की गई तो उन्होंने बताया कि लकड़ी कटान पर पूरी तरह से पाबन्दी लगी है लेकिन स्थानीय पुलिस का सहयोग न मिलने के कारण कटान पर पूरी तरह अंकुश नहीं लग पा रहा है इस सम्बंध में क्षेत्राधिकारी सदर गोंडा से बात करने की कोशिश की गई तो उनका फोन नॉट नेटवर्क क्षेत्र से बाहर बताया और फोन नहीं मिला।

सीडीओ ने एडीओ को लगाई फटकार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा। मुख्य विकास अधिकारी अंकिता जैन ने खुले में शौचमुक्त गांव बनाने के लिए इससे जुड़े कर्मचारियों व खंड विकास अधिकारियों के साथ ही सहायक विकास अधिकारी पंचायत की क्लास ली।शौचालय निर्माण की सही सूचना न बताने पर सदर के एडीओ पंचायत को फटकार लगाई।

समीक्षा बैठक के दौरान जिला विकास अधिकारी, जिला पंचायत राज अधिकारी, खंड विकास अधिकारी, सहायक विकास अधिकारी पंचायत उपस्थित रहे। इस दौरान 15वां वित्त, पंचम वित्त के अंतर्गत ग्राम पंचायत में कराए जा रहे कार्यों की प्रगति खराब पाई गयी।इस पर सख्त नाराजगी जाहिर करते हुए सीडीओ अंकिता जैन द्वारा विकास खंड वजीरगंज,तरबगंज, रूपईडीह,नवाबगंज,पंडरी कृपाल, झंझरी व बभनजोत के सहायक विकास अधिकारी पंचायत को प्रतिकूल प्रविष्टि दिया गया।वहीं दूसरी तरफ लापरवाही बरतने वाले सात ग्राम सचिवों का नवंबर माह का वेतन अवरुद्ध करने का निर्देश जिला पंचायत राज अधिकारी को दिया।सीडीओ ने लापरवाह ग्राम सचिवों के विरुद्ध कार्रवाई किए जाने का भी निर्देश दिया है।सीडीओ अंकिता जैन के इस एक्शन के बाद महकमे में हड़कंप मच गया है।उन्होंने सख्त चेतावनी दी है कि कार्यों में किसी भी तरह की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी।

उप निर्वाचन के लिए बदले गये रिटर्निंग आफिसर

बहराइच कैनविज टाइम्स संवाददाता। जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी मोनिका रानी की ओर से जारी संशोधित आदेश के अनुसार नगर पालिका परिषद बहराइच अन्तर्गत रिक्त अनारक्षित 13-कानूनगोपुरा उत्तरी के सदस्य पद के उप निर्वाचन हेतु पूर्व में नियुक्त किये गये रिटर्निंग आफिसर खण्ड विकास अधिकारी फखरपुर अजय प्रताप सिंह को अपरिहार्य कारणों से परिवर्तित करते हुए उनके स्थान पर सहायक निदेशक मत्स्य डॉ. जितेन्द्र कुमार को रिटर्निंग आफिसर नियुक्त किया गया है।

महोत्सव में नृत्य से दिखाई गई गंगा अवतरण कथा

लखीमपुर खीरी। महोत्सव के गोला इवेंट के मंच पर गंगा के अवतरण की कथा को नृत्य के जरिए कलाकारों ने पेश किया। महोत्सव में इस प्रस्तुति को लेकर लोगों में खास उमंग और उत्साह दिखा। भक्ति से परिपूर्ण इस नृत्यमंचन की सराहना भी खूब हुई। नृत्य मंचन उर्मिला पांडे की अगुवाई में कलाकार अपर्णा विजय, आशी शुक्ला, पिंकी सरोज, हिमानी सिंह, उपासना भास्कर, मलखान सिंह, अनुभव श्रीवास्तव, लवकुश कुमार ने नृत्य नाटिका में कथक नृत्य द्वारा माँ गंगा के महत्व व उनके धरा अवतरण पर प्रस्तुतियां दी। दर्शाया गया कि भगीरथ के प्रयासों से किस तरह मां गंगा को शिव की जटाओं से धरती पर लाया गया। समस्त कलाकारों ने पद, लय, ताल, अंग संचालन एवं मुद्राओं के माध्यम से दर्शकों के हृदय को आह्लादित किया। इस नृत्य नाटिका का लेखन प्रेक्षा श्रीवास्तव, परिकल्पना व नृत्य निर्देशन रॉनी सिंह जी ने किया।

कानपुर एमएसएमई टूल रूम को लेकर दिल्ली में सांसद रमेश अवस्थी ने की अहम बैठक

कानपुर। कई वर्ष से अव्यवस्थित पड़े कानपुर एमएसएमई टूल रूम की समस्याओं का निदान कराने के लिए गुरुवार को दिल्ली संसद में एमएसएमई के मित्रों के साथ हुई बैठक में कानपुर नगर के सांसद रमेश अवस्थी शामिल हुए। बैठक में विशेषज्ञों की एक टीम भी शामिल हुई। यह जानकारी गुरुवार को भारतीय जनता पार्टी कानपुर—बुंदेलखंड के क्षेत्रीय मीडिया प्रभारी अनूप अवस्थी ने दी। उन्होंने बताया कि उक्त प्रकरण को लेकर कानपुर टूल रूम की विशेष रूप से एक टीम वर्तमान स्थिति एवं उसे ठीक करने में क्या आवश्यकता होगी, इसकी जानकारी जुटाएगी। उल्लेखनीय है कि बीते दिनों कानपुर के सांसद रमेश अवस्थी कानपुर एमएसएमई टूल रूम का आकस्मिक निरीक्षण करने गए थे। जहां पर एमएसएमई का कोई बड़ा अधिकारी ना मिलने पर आक्रोश जाहिर किया था और कहा था कि बहुत जल्द दिल्ली जाकर मंत्रालय में आग्रह कर प्रयास करूंगा। यहां पर नियमित अधिकारी बैठें जिससे टूल रूम के माध्यम से कानपुर के मेधावी बच्चों को इसका लाभ मिल सके। बैठक में टूल रूम की वर्तमान स्थिति, इसकी समस्याएं, और इसके पुनर्गठन के उपायों पर विस्तार से चर्चा की गई। तय किया गया कि एक टीम मौके पर जाकर टूल रूम का निरीक्षण करेगी और सभी प्रासंगिक पहलुओं का गहन अध्ययन करेगी । निरीक्षण के बाद टीम अपनी रिपोर्ट तैयार कर केंद्रीय मंत्रालय को प्रस्तुत करेगी, जिससे टूल रूम को व्यवस्थित रूप से संचालित करने और इसे आधुनिक बनाने के लिए आवश्यक कदम उठाए जा सके ।

हिंडन नदी का जल स्तर बढ़ने से 200 बीघा आलू व गेहूं की फसल बर्बाद

बागपत। बागपत जिले में हिंडन नदी में पानी आने से किसानों की सैकड़ों बीघा फसल खराब हो गयी। कई गांवों की आलू व गेहूं की फसल पानी में डूब गई है। सिंगोली तगा, फुलेरा, सरफाबाद, गोना, पूरनपुर नवादा और गढ़ी कलंजरी सहित लगभग आधा दर्जन गांवों के किसानों पानी से प्रभावित हुए हैं, को भारी नुकसान झेलना पड़ा है। सिरौली के भंवर सिंह, सरफाबाद के राकेश, भोपाल, मुन्ना शेख, विद्याराम, महक सिंह और नरेंद्र कुमार सहित कई किसानों की करीब 200 बीघा आलू की फसल बर्बाद हो चुकी है। प्रभावित किसानों ने इसकी सूचना प्रशासन को दी और मदद की गुहार लगाई है। किसानों ने प्रशासन से अपील की है कि बर्बाद फसल का तुरंत सर्वेक्षण कराकर उचित मुआवजा दिया जाए। उनका आरोप है कि प्रशासन ने जलभराव रोकने के लिए कोई ठोस कदम नहीं उठाया, जिससे यह स्थिति पैदा हुई है। ग्रामीणों ने बताया कि बीते दो साल से धान की फसल बर्बाद हो रही थी, लेकिन इस बार रबी सीजन में आलू और सरसों गेहूं की फसल भी बर्बाद हो गई। सिंचाई विभाग के अधिकारियों से जब ग्रामीणों ने जानकारी ली, तो उन्हें बताया गया कि गंग नहर से पानी छोड़ा गया है जिसके कारण हिंडन नदी में जल स्तर बढ़ गया है। वहीं एसडीएम खेकडा ने प्रभावित गांवों का दौरा करने के लिए टीम गठित की है।

अनियंत्रित कार पेड़ से टकराई,एक की मौत, नौ घायल

शाहजहांपुर। थाना रोजा क्षेत्र में गुरुवार सुबह एक तेज रफ्तार कार अनियंत्रित होकर पेड़ से टकराकर पलट गई। हादसे में एक किशोर की मौत हो गई जबकि नौ लोग घायल हो गए। पुलिस ने घायलो की राजकीय मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया है और शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। थाना रोजा प्रभारी निरीक्षक ने बताया कि गुरुवार सुबह मोहम्मदी की तरफ से आ रही एक तेज रफ्तार कार रोजा क्षेत्र में हाइवे पर ग्राम पिपिरिया में पास अनियंत्रित होकर पेड़ से टकरा गई और पलटते हुए नाले में गिर गई।

30 नवम्बर को बहराइच व मिहींपुरवा में आयोजित होगा सामूहिक विवाह कार्यक्रम

बहराइच कैनविज टाइम्स संवाददाता। समाज में सर्वधर्म समभाव एवं सामाजिक समरसता को बढ़ावा देने एवं बेटियों के कल्याण के उद्देश्य से प्रदेश सरकार द्वारा संचालित मुख्यमंत्री सामूहिक विवाह योजना अन्तर्गत 30 नवम्बर 2024 को राजकीय बालिका इण्टर कालेज के मैदान गेंद घर एवं विकास खण्ड मिहींपुरवा के मण्डी परिसर में वृहद स्तर पर सामूहिक विवाह कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर मा. जनप्रतिनिधियों की मौजूदगी में लगभग 250 जोड़ों का सामूहिक विवाह कार्यक्रम सम्पन्न होगा। यह जानकारी देते हुए जिलाधिकारी मोनिका रानी ने बताया कि सामूहिक विवाह कार्यक्रम को सफलतापूर्वक सम्पन्न कराये जाने के उद्देश्य से कार्यक्रम स्थल गेंद घर के लिए नगर मजिस्ट्रेट व परियोजना निदेशक डीआरडीए तथा कार्यक्रम स्थल मण्डी परिसर मिहींपुरवा के लिए मुख्य राजस्व अधिकारी व जिला विकास अधिकारी को ओवरआल प्रभारी नामित किया गया है। डीएम ने बताया कि सामूहिक विवाह कार्यक्रम की अन्य व्यवस्थाओं के लिए अलग-अलग अधिकारियों को नोडल व सहायक नोडल अधिकारी की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

महिला आयोग की सदस्य ने जिला कारागार व वृद्धाश्रम का किया निरीक्षण

❐ सीएचसी व पीएचसी हुज़ूरपुर, आंगनबाड़ी केन्द्र व बालिका छात्रावास का लिया जायज़ा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बहराइच । उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की सदस्य श्रीमती अंजु प्रजापति ने जनपद के 02 दिवसीय भ्रमण कार्यक्रम के अन्तिम दिन जिला कारागार पहुंचकर महिला बैरक का निरीक्षण कर निरूद्ध महिलाओं तथा उनके साथ रह रहे बच्चों का कुशल जाना तथा बच्चों को चाकलेट तथा कपड़े वितरित करते हुए अधीक्षक कारागार राजेश यादव को निर्देश दिया कि महिला बन्दियों को शासन द्वारा अनुमन्य सभी सुविधाए उपलब्ध करायी जायें। श्रीमती प्रजापति ने कारागार की साफ-सफाई व अन्य व्यवस्थाओं पर संतोष व्यक्त किया। इस अवसर पर जेलर अजय कुमार झा, डिप्टी जेलर माधुरी तिवारी व अनिता सक्सेना मौजूद रहीं। कारागार के निरीक्षण के उपरान्त सदस्य श्रीमती प्रजापति ने सामुदायिक व प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र हुज़ूरपुर, प्राथमिक विद्यालय चाकूजोत व रानीपुर का निरीक्षण कर विभिन्न व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। स्वास्थ्य केन्द्रों के निरीक्षण के दौरान श्रीमती प्रजापति ने अधीक्षक कक्ष, पर्चा काउण्टर, ओपीडी इत्यादि का निश्रीक्षण करते हुए संस्थागत प्रसव तथा मरीज़ों की संख्या के बारे में जानकारी प्राप्त करते हुए मौजूद चिकित्सकों व पैरा मेडिकल स्टाफ को शासन की मुशानुरूप आमजन को चिकित्सकीय सेवाएं एवं सुविधाएं प्रदान करने के निर्देश दिये।

महिला आयोग की सदस्य श्रीमती प्रजापति ने 02 दिवसीय जनपद भ्रमण कार्यक्रम के प्रथम दिन बुधवार को महर्षि बालार्क जिला चिकित्सालय के 100 बेडेड एम.सी.एच. विंग का निरीक्षण कर विभिन्न व्यवस्थाओं का जायज़ा लिया। 100 बेडेड एम.सी.एच. विंग के निरीक्षण के दौरान सदस्य श्रीमती प्रजापति ओ.पी.डी., अल्ट्रासाउण्ड रूम, प्रसव कक्ष, आपरेशन थियेटर, सामान्य व सर्जिकल वार्ड का निरीक्षण कर मौजूद मरीज़ों व उनके तीमारदारों से चिकित्सालय द्वारा मरीज़ों को प्रदान की जाने वाली सेवाओं एवं सुविधाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। निरीक्षण के समय मौजूद महिलाओं से उन्होंने जे.एस.वाई. योजना के बारे में फीड बैक प्राप्त करते हुए निर्देश दिया कि शासन द्वारा संचालित योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ आमजन को दिलाया जाय। इस अवसर पर मुख्य चिकित्सा अधीक्षक एम.एम.एम. त्रिपाठी, फैकल्टी के संकाय सदस्य डॉ. अमरदीप पटेल, डॉ. शिवांगी व अन्य चिकित्सक मौजूद रहे।महर्षि बालार्क जिला चिकित्सालय के 100 बेडेड एम.सी.एच. विंग के निरीक्षण के उपरान्त महिला आयोग की सदस्य श्रीमती प्रजापति ने थारू महिला विकास समिति गोण्डा द्वारा संचालित वृद्धाश्रम अमीनपुर नगरौर का भ्रमण कर संवासित बुज़ुर्गों का आशीर्वाद प्राप्त किया तथा कुशलक्षेम पूछते हुए वृद्धाश्रम के खान-पान व अन्य व्यवस्थाओं के बारे में फीड बैक प्राप्त किया। वृद्धाश्रम के प्रबन्धक दिलीप कुमार द्विवेदी ने बताया कि वर्तमान समय में वृद्धाश्रम 105 संवासी मौजूद हैं। श्रीमती प्रजापति ने निर्देश दिया कि शासन द्वारा अनुमन्य सभी सुविधाएं संवासित बुज़ुर्गों को उपलब्ध करायी जायें। इसके पश्चात श्रीमती प्रजापति ने गेंद घर परिसर स्थित अनुसूचित जाति/जनजाति की छात्राओं हेतु निर्मित छात्रावास का निरीक्षण कर विभिन्न व्यवस्थाओं का जायज़ा लिया तथा मौके पर मौजूद अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये। इस अवसर पर जिला प्रोबेशन अधिकारी विनोद राय, महिला थानाध्यक्ष श्रीमती मंजू यादव व अन्य सम्बन्धित मौजूद रहे।

बाइक सवार बदमाश बैग मे रखे लाखों रूपए के गहने महिला से लूटकर फरार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा। जिले के बभनान- खोड़ारे मार्ग पर शाहनगर पुलिया के पास मंगलवार रात्रि लगभग साढ़े नौ बजे बाइक सवार बदमाशों ने बैग मे रखे महिला का सोने का चैन,सोने का कान का झाला,सोने का ओम लिखी लाकेट व नगदी सहित लगभग लाखों रूपए का सामान लूटकर फरार हो गए।पुलिस सीसीटीवी फुटेज से बदमाशो के तलाश में जुटी हुई है।वारदात के 48 घंटे बाद पुलिस के हाथ खाली है।पन्द्रह दिन के अन्दर दूसरी लूट की घटना के बाद जहां लोगो में दहशत है वहीं पुलिस की किरकिरी भी हो रही है। छपिया थाना क्षेत्र के बभनान-खोड़ारे मार्ग के शाहनगर पुलिया के पास मंगलवार रात्रि लगभग साढ़े नौ बजे बाइक पर सवार होकर खोड़ारे के बनकटवा निवासी मुकेश जायसवाल अपने भाभी पिंकी जायसवाल के साथ बभनान से घर जा रहे थी।इसी बीच दो बाइक सवार बदमाश हेलमेट लगाकर पहुंचे और महिला के कंधे पर टंगे बैग को लूटकर फरार हो गये। इस घटना के बाद मुकेश जायसवाल ने डायल 112 पर फोन किया तो तत्काल डायल 112 पुलिस पहुंची। इसके उपरांत सीओ मनकापुर व थाना छपिया तथा थाना खोड़ारे पुलिस भी लगभग एक घंटे बाद पहुंची लेकिन तब तक बदमाश फरार हो चुके थे। पीड़ित मुकेश की माने तो बैग मे एक सोने की चेन,एक सोने का कान का झाला,एक सोने की ओम लाकेट तथा लगभग छः हजार रूपए नगद था जो बदमाश लूटकर फरार हो गये और जाते वक्त बदमाशों ने धमकाया भी है। छपिया पुलिस की मानें तो बदमाशों की तलाश मे जुटी हुई है। सीसीटीवी फुटेज सहित तमाम बिन्दुओ पर जांच की जा रही है।वैसे 15 दिन पहले 12 नवम्बर को दम्पति के साथ लूट की हुई घटना का अभी तक छपिया पुलिस पता लगाने मे नाकाम रही है फिर यह दूसरी लूट की घटना के 48 घंटे बाद भी पुलिस के हाथ खाली है। सीसीटीवी फुटेज सहित तमाम बिन्दुओं पर जांच की बात पुलिस कर रही है। जिले की स्पेशल फोर्स एसओजी भी बदमाशों की तलाश मे जुटी हुई है। इसके पूर्व बाइक सवार बदमाशो नें खोड़ारे थाना क्षेत्र के घारीघाट पेट्रोल पंप के सामने सरे शाम बाइक सवार दंपत्ति का लाखों रूपए के गहनों से भरा बैग लूटकर फरार हो गये थे दंपत्ति के लड़की की तीन बाद शादी थी शादी के लिए गहने लेकर घर जा रहा था। इस तरह मनकापुर सर्किल के खोड़ारे व छपिया थाना क्षेत्र मे बढ़ रही लूट की घटनाओं से जहां क्षेत्र मे दहशत व्याप्त है तो वहीं पुलिस की किरकिरी भी हो रही है। छपिया पुलिस की कार्यशैली से लूट,चोरी,नकब जनी घटनाओं मे बढोत्तरी हुई है। थाना छपिया प्रभारी उपनिरीक्षक कृष्ण गोपाल राय की पीड़ित व्यक्तियो से बातचीत व कार्य व्यवहार की शैली काफी परेशान करने वाली है जिससे लोग अब थाना जाने से कतराने लगे हैं।घटना चाहे कितनी बड़ी क्यो न हो उच्च अधिकारियों से छिपाना पीड़ित का उत्पीड़न करना इनके कार्य व्यवहार में शामिल है।सीओ मनकापुर राजेश कुमार सिंह ने बताया की घटना की तहरीर प्राप्त हुई है और मौके पर पुलिस टीम के साथ एसओजी सीसीटीवी फुटेज सहित तमाम साक्ष्यों के आधार पर बदमाशों के तलाश मे जुटी है।

मनरेगा मस्टररोल में 79 की उपस्थिति,काम करते मिले सिर्फ दस मजदूर

❐ ग्राम पंचायत हड़हवा में मनरेगा के तहत हो रहे कार्यों में जम कर हो रहा भ्रष्टाचार....

❐ मनकापुर विकास खंड में कमीशनखोरी की वजह से नहीं हो रही कार्यवाही: सूत्र....

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोण्डा। मनकापुर विकास अंतर्गत ग्राम पंचायत हड़हवा में ग्राम - पंचायत द्वारा कराए जा रहे मनरेगा के कामो को जिले के अधिकारियों को गुमराह कर जमकर भ्रष्टाचार किया जा रहा है।प्रधान प्रतिनिधि और रोजगार सेवक मेट के द्वारा अधिकारियों को गुमराह कर घर बैठे मनरेगा श्रमिकों की कूट रचित तरीके - से फर्जी हाजिरी लगाया जा रहा है।ग्राम पंचायत हड़हवा में मनरेगा के तहत ग्राम पंचायत द्वारा खोबा मार्ग से हर हवा संपर्क मार्ग कब्रिस्तान तक मिट्टी पटाई का कार्य वही उसी ग्राम पंचायत में डॉ. राम बालक के खेत से निकलने मनीराम के चक होते हुए प्रधानमंत्री रोड तक मिट्टी पटाई का कार्य चल रहा है। जिसमे इन दोनों कामों के लिए 27 नवबर को 79 का मास्टर रोल में श्रमिकों को काम करते दिखाया गया है।लेकिन धरातल पर सिर्फ दस श्रमिक ही काम करते पाए गए हैं।मनरेगा में फर्जीवाड़ा थमने का नाम नहीं ले रहा है।अधिकारियों के संरक्षण पर फर्जीवाड़ा करने वाले रोजगार सेवक, प्रधान व सचिव फलफूल रहे हैं।

तभी तो ऑनलाइन अपलोड मस्टररोल और कार्य स्थल पर काम कर रहे मजदूरों की उपस्थिति में भिन्नता मिल रही है।वही 28 नवंबर को भी 15 श्रमिकों की उपस्थिति दिखाई गई है लेकिन धरातल पर सिर्फ दस श्रमिक काम करते दिखाई दे रहे हैं।लेकिन प्रतिदिन प्रधान प्रतिनिधि और रोजगार सेवक मेट द्वारा 27 नवंबर को 79 श्रमिक, 28 नवंबर को 15 श्रमिकों की हाजिरी लगाई गई है। जबकि कार्यस्थल स्थल को स्थिति पूर्व की भाति है। एक साइड पर काम चल रहा है दूसरे साइड पर कोई काम दिखाई नहीं पड़ रहा है।मनरेगा के मस्टर रोल में हो रही गड़बड़ी की जानकारी पत्रकारों की मौजूदगी को भनक वहां की हकीकत जानी तो वहां की सच्चाई देखकर दंग रह गए वही अब ऐसे में सवाल उठना लाजिमी है कि अगर मनरेगा श्रमिकों ने कार्यस्थल पर कार्य ही नहीं किया है।तो एनएनएमएस ऐप पर आनलाइन हाजिरी कैसे अपलोड की गई।जांच में सत्यता पाई जाती है तो क्या दोषी के विरुद्ध विभागीय कार्यवाही होगी।प्रधान प्रतिनिधि और रोजगार सेवक मेट द्वारा उक्त कार्यस्थल पर बिना कार्य के कूटरचित तरीके से फर्जी श्रमिकों की हाजिरी सुजित की गई यह यक्ष प्रश्न बना कैसे हुआ है।अभी उतने से मन नहीं भरा तो एक और मस्टररोल जारी कराया गया है।सूत्रों के अनुसार ग्राम पंचायत में नियुक्त तकनीकी सहायक की मिलीभगत से साइड की अधिकतम लागत दिखा एमबी करा दी जाती है।बिना कार्य करार कुछ मजदूरी के खाते में पैसे भेज कर निकाल लिया जाता है।और उसके एवज में पांच सौ से सात सौ रुपए उन मजदूरों को दे दिए जाते है। सबसे बड़ी बात है कि मनरेगा योजना से हो रहे कार्यों में कई कार्य स्थली पर कार्य शुरू होने के कई दिनों तक सोआईयो बोर्ड इसलिए नही लगाया जाता की ग्रामीणों को इसकी लागत समेत अन्य जानकारी न होने जाए,वही सीआईबी बोर्ड तब लगाया जाता जब कार्यस्थल का फोटो सेशन कर उस परियोजना का काम करा पेमेंट के लिए ब्लॉक स्तर पर फाइल जाता है।बता दे मनकापुर ब्लॉक अंतर्गत विभित्र ग्राम पंचायतों में क्षेत्र पंचायत व ग्राम पंचायत से मनरेगा का कार्य जोरी पर है।

अब देखना यह लाजिमी होगा की मनरेगा योजना हो रहे भ्रष्टाचार पर प्रभावी रोकथाम के लिए संबंधित अधिकारी दोषियों पर विभागीय कार्यवाही करते है या मामले की लीपापोती कर प्रकरण को ठंडे बस्ते में डाल दिया जाएगा।

मनुष्य के व्यक्तित्व को निखारने का कार्य करता है गुरु : आचार्य शान्तनु जी महाराज

कैनविज टाइम्स संवाददाता

श्रीराम कथा के सप्तम दिवस पर श्रोताओं की उमड़ी भीड़

राज्यमंत्री ने अतिथियों को प्रभु श्रीराम की प्रतिमा भेंट किया

तिलोई अमेठी ।आरबीएस इण्टर कालेज तिलोई में राज्यमंत्री राजा मयंकेश्वर शरण सिंह द्वारा आयोजित नौ दिवसीय संगीतमयी श्रीराम कथा के सप्तम दिवस पर कथा व्यास आचार्य शान्तनु जी महाराज ने कहा कि भगवान को पाने के लिये बस उन्हें पुकारो और प्रतीक्षा करो मैया शबरी ,अहिल्या ने पूरे जीवन भगवान कि प्रतिक्षा की और अंततः भगवान उनके पास स्वयं जाकर उनको दर्शन दिये है। कथा व्यास आचार्य शान्तनु जी महाराज जी ने कहा कि हम सब की यही स्थित होनी चाहिये कि भगवान के लिये माल में ललक ,प्यास होनी चाहिये इसीलिये भगवान जब भारद्वाज मुनि के पास गये तो उन्होंने यही कहा कि आज उनके सम्पूर्ण मनोरथ पूर्ण हो गये। उन्होंने गुरु महिमा का वर्णन करते हुये कहा कि जिसका कोई गुरु नही उसका जीवन शुरू नही और गोस्वामी जी ने सम्पूर्ण मानस में समय समय पर गुरु महिमा का बखान किया है।चित्रकूट की लीला का बहुत ही सुंदर व मार्मिक वर्णन किया गया एवं दशरथ जी के मार्मिक महाप्रयाण का महाराज जी ने दर्शन कराया। श्रीराम कथा के सप्तम दिवस पर कथा व्यास ने पुलिस अधीक्षक अनूप कुमार सिंह, सीओ अजय कुमार सिंह, खण्ड शिक्षा अधिकारी हरिओम तिवारी, विपुल सिंह चौहान, अमन सिंह चौहान,रश्मि सिंह, राहुल सिंह, राघवेन्द्र प्रताप सिंह, नीलम भारती, शिव मोहन सिंह, सुधांशु सिंह को अंगवस्त्र भेंट किया तो कार्यक्रम के आयोजक राज्यमंत्री राजा मयंकेश्वर शरण सिंह ने अतिथियों को प्रभु श्रीराम की प्रतिमा भेंट किया। कार्यक्रम का संचालन धर्मेश मिश्रा ने किया। इस मौके पर रानी उपासना सिंह, कुंवर मृगांकेश्वर शरण सिंह, उत्कर्ष शरण सिंह,ब्लाक प्रमुख तिलोई अर्चना सिंह, मुन्ना सिंह, अखण्ड प्रताप सिंह, मनीष सिंह, संतोष तिवारी, विनोद मौर्या, वीरेन्द्र तिवारी, ध्रुवराज पासी, ओंकार पाण्डेय, सत्येन्द्र तिवारी, सुशील सिंह, गुडडू सिंह, जागेश्वर मौर्या, वीर सिंह, प्रदीप सिंह, भाष्कर सिंह, शिरीष गुप्ता, आशीष नंदन त्रिपाठी, सुजीत पाण्डेय,आदित्य पाण्डेय, मोनू जायसवाल अमिता गौतम सहित हजारों की संख्या में श्रोतागण मौजूद रहे।

तहसील न्यायालय का 30 नवम्बर तक विरोध करेंगे अधिवक्ता

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बल्दीराय/सुलतानपुर। न्यू अवध बार एसोसिएशन बलदीराय की बैठक बृहस्पतिवार को सम्पन्न हुई। इस दौरान अधिवक्ताओं ने एसडीएम बल्दीराय के न्यायालय का आगामी तीस नवंबर तक बहिष्कार करने का निर्णय लिया है। अधिवक्ता धुर्व राज पांडे के प्रार्थना पत्र पर अधिवक्ता संघ कमेटी ने विचार करने के बाद प्रस्ताव पारित किया गया। एसोसिएशन के अधिवक्ता एसडीएम बल्दीराय के न्यायिक कार्य प्रणाली व नियम विरुद्ध कार्रवाई करने को लेकर न्यायालय को प्रस्ताव भेजकर हड़ताल पर हैं। अधिवक्ताओं का आरोप है कि राजस्व न्यायालय मैनुवल के विपरीत अदालतें चल रही है। एसोसिएशन के अध्यक्ष मनोज सिंह ने बताया कि एसडीएम के इस कृत्य के विरोध में तीस नवंबर तक न्यायालय का बहिष्कार किया जाएगा। इस दौरान कोई भी अधिवक्ता एसडीएम के न्यायालय में नहीं जाएंगे। संघ के तीन सदस्य इसकी निगरानी करेंगे। बैठक में अधिवक्ता महामंत्री बृजेश यादव, संजय सिंह, अनिल यादव, अजय सिंह, प्रदीप पांडेय, अखिलेश पाठक, पवन दूबे, राम सुमिरन वैश्य,अजय दूबे, राधेश्याम श्रीवास्तव, आनंद तिवारी, अंफाल, सर्वोदय सिंह, राजकुमार तिवारी, बिकास मिश्रा, प्रदीप सोनकर, कौशल किशोर, कृष्ण कुमार तिवारी, प्रसुन यादव, बद्रीनाथ शुक्ला, सुरेंद्र तिवारी, आलोक श्रीवास्तव सहित अधिवक्ता मौजूद रहे।

फाईलेरिया के मरीजों को बांटी गई किट, बचाव के लिए दिया गया परामर्श

कैनविज टाइम्स संवाददाता

सुल्तानपुर। मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ.ओम प्रकाश चौधरी के नेत्तृव में फाईलेरिया रोग से ग्रसित मरीजो के लिए कैंप लगाकर उन्हें बीमारी के रोकथाम के लिए परामर्श दिया गया, साथ ही फाईलेरिया मरीजों को टब, बाल्टी, साबुन व तौलिया की एक किट भी उपलब्ध कराई गई। फाईलेरिया से ग्रसित मरीजों को एक्सरसाइज के माध्यम से कैसे फिट रहना है, इसका डेमों भी किया गया। उक्त अवसर पर इंचार्ज प्रियंका सिंह, इंस्पेक्टर पूनम सिंह, मेराज अहमद, प्रेमचंद्र सिंह, पारितोष व रंजीत कुमार मौके पर मौजूद रहें। मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ.ओम प्रकाश चौधरी ने बताया कि राज्य सरकार फाईलेरिया रोग व ग्रसित रोगियों के लिए विभिन्न प्रकार की योजनाएं चला रही है, विभाग उसके क्रियान्वयन में लगा है। उसकी लगातार मॉनिरीटरिंग की जा रही है। डॉ.चौधरी ने बताया कि सरकार की मंशा का अक्षरशः पालन विभाग सुनिश्चित कर रहा है, समय-समय पर हमारी टीम कैंप व डोर-टू-डोर के माध्यम से फाईलेरिया ग्रसित रोगियों की जानकारी लेती रहती है।

सरकार की महत्वाकांक्षी योजना जल जीवन मिशन धराशाही, बिना मानक हो रहे कार्य

कैनविज टाइम्स संवाददाता

अभी तक गांव में मिशन के तहत टोटी विहीन है गांव

बल्दीराय/सुल्तानपुर। केंद्र सरकार द्वारा 2019 में संचालित जल जीवन मिशन योजना जिम्मेदारों की लापरवाही के चलते धराशाही हो चुकी है। कार्यकारी संस्था द्वारा गांव में खुदाई करके पाइप डालकरअपनी जिम्मेदारी का निर्वहन तो कर दिया गया परंतु अभी तक पाइप लाइन के गड्ढे ज्यौं के त्यौं नजर आ रहे हैं। बच्चे बुजुर्गों का चोटिल होना स्वाभाविक है। अधिकांश गांव में नल की टोटी नहीं लगाई गई है संस्था द्वारा लगाई गई खाली पाइप ग्रामीणों को मुंह चढ़ा रही है। बता दे की केंद्र सरकार द्वारा वर्ष 2019 में जल जीवन मिशन योजना संचालित की गई थी मिशन का उद्देश्य था कि प्रत्येक गांव में हर घरों में नल हो ग्रामीण स्वच्छ पानी का उपयोग करें इसके लिए रजिस्टर्ड कार्यदाई संस्था को गांव-गांव में पानी पहुंचाने के लिए आधुनिक उपकरणों को लगाने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी। कार्यदाई संस्था द्वारा गांव में खुदाई करते हुए प्रत्येक घरों तक पाइप डाल दी गई है लेकिन अभी तक इन पाइपों में नल की टोटी लग ना मुश्किल हो गया गांव में लगी पाईप से आते-जाते ग्रामीण टकराकर चोटिल हो रहे हैं। ग्रामीण बताते हैं कि चार-पांच माह पूर्व कार्यदाई संस्था के कर्मचारी प्रत्येक घरों तक खुदाई करके पाइप डाल दी गई लेकिन अभी तक उसमें टोटी नहीं बैठाई गई जिससे ग्रामीणों को स्वच्छ पानी नहीं मिल पा रहा है कहीं कहीं खानापूर्ति को लेकर ट्रायल भी शुरू हो गया है बाकी तो स्थिति राम भरोसे चल रही है। फिलहाल तहसील बल्दीराय के गांव में मिशन के अन्तर्गत डाली गई पाईप से ग्रामीणों को परेशानी उत्पन्न है फायदा कब होगा यह भविष्य में देखा जाएगा।

भाकियू जिलाउपाध्यक्ष ने समस्याओं का समाधान न होने पर तहसील में तालाबंदी करने की दी चेतावनी वीडियो वायरल

ग्राम प्रधान सरकारी खजाने का कर रहा है दुरुपयोग

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पूरनपुर।भारतीय किसान यूनियन अराजनैतिक के जिलाउपाध्यक्ष राम गोपाल वर्मा का एक वीडियो गुरुवार समय दो बजे सोशल मीडिया पर वायरल हुआ।वायरल वीडियो में पूर्ति निरीक्षक कार्यालय में राशन कार्ड के नाम पर महिलाओं से चक्कर कटवाए जा रहे हैं। और चीनी मिल गन्ना क्रय केन्द्रों पर किसानों से गन्ना तौल के नाम पर कटौती की जा रही हैं। गावों में चकमार्ग गुम हो गए हैं। जिनको प्रशासन के द्वारा पैमाइश कराकर अवैध कब्जा मुक्त नहीं कराया जा रहा है। ग्राम प्रधान के द्वारा पुराने चकमार्ग पर मिट्टी डालकर ग्राम निधि के पैसे का दुरुपयोग किया जा रहा है। इन समस्याओं का समाधान न होने पर लखनऊ में कार्यक्रम के समापन के बाद बापसी कर चार दिसंबर को तहसील में तालाबंदी करने की चेतावनी दी है।

हरीपुर किशनपुर गांव के नजदीक नहर के पास में दिखा बाघ वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल

पूरनपुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। सेहरामऊ थाना क्षेत्र के गावों में बाघ की चहलकदमी को लेकर ग्रामीणों में दहशत का माहौल है। थाना क्षेत्र के गांव हरीपुर किशनपुर के नजदीक बाघ को देख लोगों में दहशत का माहौल है। गुरुवार को 12:30 बजे ग्रामीण ने बाघ का वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल करते हुए लोगों को जागरूक किया और अकेले इस रास्ते से निकलने को लेकर अपील की है। स्थानीय लोगों ने बताया कि पिछले कई दिनों से बाघ चहलकदमी देखी जा रही हैं। फिलहाल बाघ का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है।

डीएम की अध्यक्षता में एनसीओआरडी की जनपद स्तरीय समिति की बैठक हुई सम्पन्न

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पीलीभीत। डीएम संजय कुमार सिंह की अध्यक्षता में एनसीओआरडी की जनपद स्तरीय समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में नारकोटिक्स पदार्थ एवं औषधियों पर अंकुश लगाने हतु जिलाधिकारी ने पुलिस विभाग, एस.एस.बी,इंटेलिजेंस ब्यूरो व आबकारी विभाग के अधिकारियों को सम्मिलित करते हुए एक टीम के गठन करने के निर्देश दिये। गठित टीम नारकोटिक्स पदार्थो के अवैध व्यापार के विरूद्व इंटेलिजेंस डेबलप करेगी व प्रभावी कार्यवाही करायेगी, जिसके लिए टीम को आम जनमानस से भी सहयोग प्राप्त कर कार्यवाही करने एवं अन्तर्राष्ट्रीय सीमा होने के कारण अधिक सतर्कता बरते हुए अन्तर्राष्ट्रीय नेटवर्क के बारे में भी सूचना विकसित कर बड़े अभियोग पकड़ने के निर्देश दिये।इसके अतिरिक्त जिला विद्यालय निरीक्षक एवं जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी तथा जिला समाज कल्यण अधिकारी को आपसी तालमेल कर नुक्कड़ नाटों एवं सभाओं तरह-तरह की प्रतियोगितायें, रैली,एल0सी0डी0 वाहन निकालकर युवाओं में नशे के प्रति जागरूकता अभियान चलाने के निर्देश दिये। इंजेक्शन, टेवलेट, कैप्सूल जो नारकोटिक्स दवाओं से निर्मित होती है ऐसे दवाओं का स्टाक मिलान करने एवं यह सुनिश्चित करने के निर्देश दिये गये हैं कि इन दवाओं का किसी भी तरह दुरूपयोग न होने पाये। जिलाधिकारी ने गोष्ठी में विशेष फोकस युवाओं को कैसे जागरूक कर नशे से दूर रखे, इस बात पर ज्यादा रहा। जिसके लिए समस्त उपस्थित अधिकारियों को समन्वय बनाकर जागरूकता अभियान चलाने के निर्देश दिये।बैठक में अपर जिलाधिकारी, अपर पुलिस अधीक्षक, उप जिलाधिकारी पूरनपुर, जिला आबकारी अधिकारी, जिला विद्यालय निरीक्षक, जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी, जिला समाज कल्याण अधिकारी, एस.एस.बी. इंटेलिजेंस ब्यूरो, औषधि निरीक्षक उपस्थित रहे हैं।

यातायात माह के अन्तर्गत यातायात नियमों के प्रति स्कूली छात्र छात्राओं को किया जागरूक

पीलीभीत कैनविज टाइम्स संवाददाता। पुलिस अधीक्षक पीलीभीत के निर्देशन में पुलिस उपाधीक्षक प्रशिक्षु सुश्री उपासना पाण्डेय व यातायात पुलिस द्वारा यातायात माह–नवम्बर 2024 के अन्तर्गत यातायात जागरुकता के क्रम में थाना न्यूरिया क्षेत्रान्तर्गत मदर ज़ुबैदा हायर सेकण्डरी स्कूल* के उपस्थित छात्र और छात्राओं को यातायात नियमों व आपातकालीन विभिन्न हेल्पलाइन नम्बर वूमेन पॉवर लाइन–1090,महिला हेल्पलाइन नंबर 181, पुलिस आपातकालीन सेवा –112, स्वास्थ्य सेवा–102,108, चाइल्ड हेल्प लाइन 1098 साइबर क्राइम 1930 एवं अन्य विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं से सम्बंधित जानकारियाँ दी गयी तथा सभी पुलिस कर्मियों को अपने–अपने क्षेत्रों में गांव–गांव जाकर आमजनमानस को यातायात नियमों के सम्बन्ध में जागरूक करने के निर्देश दिये हैं।

नवविवाहिता की हत्या के आरोप में दो महिलाएं गिरफ्तार

तिलोई अमेठी कैनविज टाइम्स संवाददाता। थाना शिवरतनगंज पुलिस ने दहेज हत्या के मामले में दो नामजद महिलाओं को गिरफ्तार करने में सफलता हासिल की है। पुलिस ने पकड़ी गई दोनों महिलाओं को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है। थाना क्षेत्र के गांव गंगापुर मजरे मेहमानपुर में बुधवार की सुबह एक नव विवाहिता का शव संदिग्ध परिस्थितियों में मिला था। बताते चलें कि मृतका का मायका बाराबंकी जनपद के थाना सुबेहा क्षेत्र के अहीरगांव में था जिसकी शादी नौ माह पूर्व हुई थी।मायके पक्ष के द्वारा ससुरालीजनों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया था। उप निरीक्षक मनोज कुमार प्रजापति मय हमराही द्वारा देखभाल क्षेत्र, चेकिंग संदिग्ध व्यक्ति, वस्तु, वाहन के दौरान नामजद सुशीला मिश्रा पत्नी स्वर्गीय राम मनोहर मिश्रा व कोमल शुक्ला पुत्री सतीश शुक्ला निवासीगण गंगापुर मजरे मेहमानपुर थाना शिवरतनगंज जनपद अमेठी को उनके घर से दिन में गिरफ्तार किया गया। इस सम्बंध में थाना शिवरतनगंज के थानाध्यक्ष सच्चिदानंद राय ने बताया कि पुलिस टीम द्वारा गिरफ्तार लोगों को जेल भेज दिया गया है अन्य फरार लोगों की तलाश की जा रही है।

यातायात पुलिस ने दो सौ पांच वाहनों का किया चालान

अमेठी कैनविज टाइम्स संवाददाता। यातायात पुलिस द्वारा यातायात जागरूकता माह नवंबर के अठाइसवें दिन अभियान चलाकर सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम हेतु आमजनमानस को जागरूक किया गया जिसमें दो सौ पांच वाहनों का चालान कर दो लाख तेइस हजार रुपये का जुर्माना लगाया गया।पुलिस अधीक्षक अनूप कुमार सिंह के निर्देशन, अपर पुलिस अधीक्षक हरेंद्र कुमार के पर्यवेक्षण एवं समस्त क्षेत्राधिकारी के कुशल नेतृत्व में गुरुवार को यातायात जागरूकता माह नवम्बर के अठाइसवें दिन यातायात पुलिस द्वारा बस अड्डा अमेठी थाना क्षेत्र अमेठी में आम जनमानस को सड़क दुर्घटनाओं की रोकथाम हेतु पम्पलेट वितरित कर जागरूक किया गया तथा यातायात नियमों का पालन करने हेतु अपील की गयी तथा दुर्घटना बाहुल्य ब्लैक स्पॉट स्थानों पर यातायात नियमों का उल्लंघन (जैसे गलत दिशा में वाहन चलाना, सड़क के किनारे हाईवे पर अवैध रूप से पार्किंग कर वाहन खड़ा करना व तेज गति से वाहन चलाना आदि) करने वाले वाहन चालकों के विरुद्ध सघन चेकिंग अभियान चलाया गया और चेकिंग के दौरान दो सौ पांच वाहनों का चालान कर कुल दो लाख तेइस हजार रुपये का जुर्माना योजित किया गया।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार को लेकर राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन एसडीएम को सौंपा

पूरनपुर कैनविज टाइम्स संवाददाता। तहसील परिसर में अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद राष्ट्रीय बजरंग दल ने बांग्लादेश में हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार को लेकर राष्ट्रपति को संबोधित ज्ञापन एसडीएम अजीत प्रताप सिंह को सौपा है। ज्ञापन में बताया कि बांग्लादेश में निरंतर हो रही घटना पूरे देश समाज को आतंकित कर रही हैं। पाकिस्तान में हिंदुओं की दुर्दशा के उपरांत बांग्लादेश भी अब पाकिस्तान की राह पर हिंदुओं के साथ आतंकित जिहादी व्यवहार अपना रहा है। सत्ता परिवर्तन के प्रयास बांग्लादेश को इस्लामी जिहाद की और निरंतर बढ़ाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। वर्तमान की कार्यवाहक सरकार बांग्लादेश के हिंदुओं को निरंतर प्रताड़ित कर रही है। मंदिरों को तोड़ा जा रहा है और हिंदू बहन बेटियों के साथ अत्याचार व बलात्कार अपहरण की घटनाएं बढ़ती जा रही हैं। हिंदू समाज के धार्मिक स्थलों को तोड़ा जा रहा है। संत समाज इस्कॉन के संत व हिन्दू मंदिरों के पुजारियों को जेल में डाला जा रहा है।

बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश सदस्य पद के प्रत्याशी होगे संतराम राठौर समर्थन में जुटे वकील

कैनविज टाइम्स संवाददाता

पीलीभीत। आगामी बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश सदस्य पद के प्रत्याशी संतराम राठौर के समर्थन में तीनों बार एसोसिएशन के अध्यक्ष सहित जनपद की सभी तहसीलों से बार एसोसिएशन के तहसील अध्यक्ष सहित अन्य पदाधिकारी उनको चुनाव लड़ाने के लिए एक मंच पर एकत्र हुए हैं।मंच को संबोधित करते हुए बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश सदस्य पद के प्रत्याशी संतराम राठौर ने कहा कि हम अपने सभी साथी अधिवक्ताओं की लड़ाई के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे आने वाले चुनाव में अपना मत हमको देकर जिताए हम अपने अधिवक्ता साथी के साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ उनकी लड़ाई लड़ते रहेंगे कार्यक्रम में उपस्थित सभी अधिवक्ताओं ने बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश सदस्य पद के प्रत्याशी

संतराम राठौर को चुनाव लड़ाने के लिए एकमत होकर फैसला लिया है।इस मौके पर संयुक्त बार एसोसिएशन के अध्यक्ष धीरेंद्र मिश्रा,उपाध्यक्ष सर्वेंद्र सिंह,सेंट्रल बार एसोसिएशन के अध्यक्ष कुलविंदर सिंह,सचिव विवेक अवस्थी,कोषाध्यक्ष कामरान,सिविल बार संगठन के अध्यक्ष विवेक पांडे,सचिव मोहन गिरी,कलीनगर तहसील के अध्यक्षा,ताजुद्दीन,हेमंत मिश्रा,मुन्नालाल,जर्राफात अली,वीरेंद्र पटेल,अशोक भारती,हरिओम सिंह,मोहन शिव शर्मा,मनोज कुमार,संजय तोमर,ओम शंकर मौर्य, नाहिद खान,बाबूराम शर्मा,फरहीन,जूही, उर्वशी,सायरा,प्रियंका सिंह,राम प्रकाश,कमला, प्रिया सहित सभी बार एसोसिएशन के सदस्य मौजूद रहे। और अंत में बार काउंसिल ऑफ उत्तर प्रदेश सदस्य पद के प्रत्याशी संतराम राठौर ने कार्यक्रम में आए सभी अधिवक्ताओं का आभार जताया है।

प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना बैंक खाता धारको के लिए वरदान : अतुल जोग

कैनविज टाइम्स संवाददाता

शाखा प्रबंधक ने मृतक खाता धारक के परिजन को दी बीमा की दो लाख की राशि

बल्दीराय/सुलतानपुर। तहसील क्षेत्र बल्दीराय के बड़ौदा युपी बैंक की शाखा वल्लीपुर में मृतक खाता धारक के परिजन को शाखा प्रबंधक ने बीमा की राशि सौंपी है। बता दे कि क्षेत्र के ग्राम दौनौ विसांवा निवासी अम्बिका की पत्नी मिथिलेश बड़ौदा यूपी बैंक में खाता धारक थी मिथिलेश ने अपने खाते मे प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना के अन्तर्गत बीमा कवर करवाया था। मिथिलेश मई माह में राजस्थान के जिला दौसा स्थित बाला जी दर्शन करने गई थी अचानक 29 मई को वही उसका निधन हो गया। शाखा प्रबंधक अतुल कुमार ने बीमा योजना की सारी औपचारिकता पूरी करवा कर मृतका खाता धारक के पुत्र रविशंकर को बैंक बुलाकर दो लाख रुपये की बीमा राशि दिया। उक्त संबंध में शाखा प्रबंधक अतुल जोग ने समस्त खाता धारको को जागरूक करते हुए उन्हे भी प्रधान मंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना से जुड़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होने कहा कि प्रधान मंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना बैंक ग्राहको के लिए वरदान साबित है। इस अवसर पर सहायक प्रबंधक नीलमणि मिश्र हेड कैशियर संदीप मिश्र बैंक के लीगल एडवाईजर अतुल प्रताप सिंह सहित समस्त बैंक स्टाफ मौजूद रहे।

ईवीएम पर फिर उठे सवाल

महाराष्ट्र और झारखंड दोनों ही राज्यों में चुनावी नतीजे शनिवार को सामने आ गए और अब नयी सरकारों के गठन की तैयारी प्रारंभ हो चुकी है। झारखंड में हेमंत सोरेन फिर से मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने जा रहे हैं, जबकि महाराष्ट्र में इन पंक्तियों के लिखे जाने तक यह तय नहीं हो पाया है कि मुख्यमंत्री की कुर्सी पर एकनाथ शिंदे ही फिर से बैठेंगे या भाजपा इस बार देवेन्द्र फड़नवीस को प्रतीक्षा करने का इनाम देगी। महाराष्ट्र में महायुति के आपसी समीकरण किस तरह तय होंगे, यह देखना भाजपा, शिवसेना शिंदे गुट और एनसीपी अजित पवार गुट का काम है। यह तय है कि महाविकास अगाड़ी को एक बार फिर विपक्ष में ही बैठना पड़ेगा, क्योंकि नतीजे उसकी उम्मीदों के अनुरूप नहीं आए। महायुति को इतनी बड़ी जीत मिलेगी, इस बात पर लगातार हैरानी जताई जा रही है क्योंकि जमीन पर माहौल एमवीए के लिए बना हुआ दिखाई दे रहा था। अब इस पर ईवीएम और चुनाव आयोग द्वारा पेश किए गए मतदान प्रतिशत और गिने गए वोटों में दिख रहे अंतर को लेकर सवाल उठ रहे हैं। शिवसेना सांसद संजय राउत के हिसाब से यह जनता का सुनाया फैसला नहीं है, वे मांग कर रहे हैं कि एक बार चुनाव मतपत्रों यानी बैलेट पेपर से करवाएं जाएं, तो हकीकत सामने आ जाएगी। कुछ ऐसे ही आरोप कांग्रेस, शरद पवार की एनसीपी और सपा आदि दलों के नेताओं ने भी लगाए हैं। हरियाणा चुनावों में भी कांग्रेस ने इसी तरह ईवीएम में गड़बड़ी के आरोप लगाए थे कि जिन सीटों पर गणना के वक्त ईवीएम की बैटरी 90 प्रतिशत तक चार्ज थी, वहां भाजपा को जीत मिल गई। तब सवाल उठे थे कि किसी भी मशीन की बैटरी प्रयोग में होने के इतनी देर बाद भी 90 प्रतिशत तक चार्ज कैसे रह सकती है। कांग्रेस ने तब कम से कम 20 सीटों में गड़बड़ी के खिलाफ तथ्यों के साथ एक शिकायत चुनाव आयोग में दायर की थी, जिसे फौरन खारिज कर दिया गया। बल्कि इसका जवाब देने में आयोग की तरफ से जो भाषा इस्तेमाल की गई, वह भी उचित नहीं थी। हालांकि अब फिर से हरियाणा कांग्रेस ने 27 सीटों में ईवीएम और आचार संहिता के उल्लंघन जैसी शिकायतों पर आधारित एक याचिका पंजाब व हरियाणा उच्च न्यायालय में दाखिल की है। जिस पर सुनवाई होनी है। इधर मंगलवार को सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका फिर से खारिज की गई, जिसमें मांग की गई थी कि चुनाव बैलेट पेपर से होना चाहिए। साथ ही इसमें यह सुझाव भी दिया गया था कि मतदाताओं को खरीदने की कोशिश करता हुआ अगर कोई उम्मीदवार दोषी पाया जाता है तो उसे पांच साल तक चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य करार करना चाहिए। के एल पॉल की इस याचिका को जस्टिस पी बी वराले और जस्टिस विक्रमनाथ की बेंच ने खारिज तो कर ही दिया, साथ ही कहा कि जब आप चुनाव जीतते हैं तो ईवीएम से छेड़छाड़ नहीं होती और जब हारते हैं तो ईवीएम से छेड़छाड़ होती है। शीर्ष अदालत की तरफ से जो तर्क अपने फैसले में सुनाया गया, वह नया नहीं है। इन चुनावों में भाजपा भी इसी तरह की बात कह रही है। महाराष्ट्र में विपक्ष ईवीएम या अन्य गड़बड़ियों का मुद्दा उठा रहा है तो उसे झारखंड की जीत याद दिलाई जा रही है। हालांकि असल सवाल इसमें गुम हो रहा है कि क्या झारखंड में भाजपा ने हाथ पीछे खींच लिए ताकि महाराष्ट की सत्ता बरकरार रखी जाए। झारखंड में इंडिया गठबंधन की जीत से ईवीएम पर सवाल उठने बंद हो जाएंगे, शायद यह सोच भाजपा की थी। लेकिन अब कुछ और उलझे हुए तार सामने आए हैं, जिनसे निष्पक्ष चुनाव के ऊपर लग गए सवालिया निशान बड़े होते जा रहे हैं। महाराष्ट्र में चुनाव आयोग ने मतदान प्रतिशत का अंतिम आंकड़ा 66.05 फीसदी बताया, जो कुल 64,088,195 वोट होते हैं, लेकिन मतगणना में गिने गए कुल वोटों का जोड़ 64,592,508 आया, जो कुल पड़े वोटों से 504,313 अधिक है। पांच लाख वोटों का यह अंतर क्यों और कैसे आया, इसका संतोषजनक दवाब निर्वाचन आयोग को देना चाहिए। कुछ निर्वाचन क्षेत्रों में बड़े दिलचस्प आंकड़े सामने आए हैं, अष्टी निर्वाचन क्षेत्र में मतदान से 4,538 अधिक वोट गिने गए। यानी जितने वोट पड़े नहीं, उससे ज्यादा गिने गए।

जलवायु परिवर्तन के खतरों से बच्चों को बचाएं

साल 2050 तक भारत में 35 करोड़ बच्चे जनसांख्यिकीय बदलावों, जलवायु संकट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और तकनीकी बदलावों की चुनौतियों का सामना कर रहे होंगे। उस समय जन्म लेने वाले बच्चों को जन्म के बाद जीवन में जलवायु परिवर्तन के संकटों से जुझना होगा, भीषण लू, गरमी, बाढ़, तूफान, चक्रावात और अनेक जलवायु जनित बीमारियों से सामना करना होगा। वायु प्रदूषण की विभीषिका, गहराते जल संकट, सिमटते प्राकृतिक संसाधन, जलवायु परिवर्तन व रोजगार की विसंगतियों के बीच आने वाली पीढ़ी के बच्चों का जीवन निस्संदेह संघर्षपूर्ण, चुनौतीपूर्ण एवं संकटपूर्ण होगा। वर्ष 2021 में बच्चों के जलवायु जोखिम सूचकांक में भारत कुल 163 देशों की सूची में 26वें स्थान पर था। ऐसे में भारत में बच्चों को अधिक गर्मी, बाढ़ और वायु प्रदूषण से गंभीर जोखिम का सामना करना पड़ता है। खासकर ग्रामीण और कम आय वाले समुदायों में यह संख्या ज्यादा है। लेकिन रिपोर्ट बताती है कि 2050 में बच्चों को 2000 के दशक की तुलना में लगभग आठ गुना ज्यादा गर्मी झेलनी पड़ सकती है। जाहिर है, जलवायु संकट बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा, चिकित्सा तथा पानी जैसे आवश्यक संसाधनों तक उनकी पहुंच पर प्रतिकूल असर डाल सकता है। चिंता की बात यह है कि इन तमाम विसंगतियों, विषमताओं व नेतृत्व की अदूरदर्शिता के बीच बच्चों के भविष्य पर मंडरा रहे खतरों के लिये संवेदनशीलता के साथ सावधान एवं सतर्क होने एवं उचित-प्रभावी कार्ययोजना बनाने की जरूरत है।

हाल ही में प्रस्तुत हुई यूनिसेफ की रिपोर्ट 'द फ्यूचर ऑफ चिल्ड्रेन इन चेंजिंग वर्ल्ड' ने भारत में बच्चों के भविष्य को लेकर उत्पन्न चुनौतियों, त्रासद स्थितियों एवं भयावह भविष्य को उजागर किया है। इस रिपोर्ट में जिक्र किया गया है कि साल 2050 तक भारत में 35 करोड़ बच्चे जनसांख्यिकीय बदलावों, जलवायु संकट, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और तकनीकी बदलावों की चुनौतियों का सामना कर रहे होंगे। उस समय जन्म लेने वाले बच्चों को जन्म के बाद जीवन में जलवायु परिवर्तन के संकटों से जुझना होगा, भीषण लू, गरमी, बाढ़, तूफान, चक्रावात और अनेक जलवायु जनित बीमारियों से सामना करना होगा। वायु प्रदूषण की विभीषिका, गहराते जल संकट, सिमटते प्राकृतिक संसाधन, जलवायु परिवर्तन व रोजगार की विसंगतियों के बीच आने वाली पीढ़ी के बच्चों का जीवन निस्संदेह संघर्षपूर्ण, चुनौतीपूर्ण एवं संकटपूर्ण होगा। वर्ष 2021 में बच्चों के जलवायु जोखिम सूचकांक में भारत कुल 163 देशों की सूची में 26वें स्थान पर था। ऐसे में भारत में बच्चों को अधिक गर्मी, बाढ़ और वायु प्रदूषण से गंभीर जोखिम का सामना करना पड़ता है। खासकर ग्रामीण और कम आय वाले समुदायों में यह संख्या ज्यादा है। लेकिन रिपोर्ट बताती है कि 2050 में बच्चों को 2000 के दशक की तुलना में लगभग आठ गुना ज्यादा गर्मी झेलनी पड़ सकती है। जाहिर है, जलवायु संकट बच्चों के स्वास्थ्य, शिक्षा, चिकित्सा तथा पानी जैसे आवश्यक संसाधनों तक उनकी पहुंच पर प्रतिकूल असर डाल सकता है। चिंता की बात यह है कि इन तमाम विसंगतियों, विषमताओं व नेतृत्व की अदूरदर्शिता के बीच बच्चों के भविष्य पर मंडरा रहे खतरों के लिये संवेदनशीलता के साथ सावधान एवं सतर्क होने एवं उचित-प्रभावी कार्ययोजना बनाने की जरूरत है। इसी तरह, गहरे डिजिटल विभाजन के बीच एआई यानी कृत्रिम बुद्धिमत्ता बच्चों के लिए अच्छी और बुरी, दोनों हो सकती है। एक ताजा आंकड़ा बताता है कि उच्च आय वाले देशों में 95 फीसदी आबादी इंटरनेट से जुड़ी है, तो निम्न आय वाले देशों में सिर्फ 26 प्रतिशत लोगों की इंटरनेट तक पहुंच है। भारत में वर्तमान में इंटरनेट की व्यापकता ने बच्चों के जीवन में अनेक संकट खड़े किये हैं। यूनिसेफ ने इस डिजिटल डिवाइड को पाटने और बच्चों तक नयी प्रौद्योगिकियों की सुरक्षित एवं समान पहुंच सुनिश्चित करने के लिए समावेशी प्रौद्योगिकी पहल की वकालत की है। बच्चे चूंकि हमारा भविष्य हैं, इसलिए बच्चों और उनके अधिकारों को सरकारी नीतियों-रणनीतियों के केंद्र में रखना समृद्ध और टिकाऊ भविष्य के निर्माण एवं संतुलित-आदर्श समाज-व्यवस्था के लिए आवश्यक है। अक्सर यह सवाल विमर्श में होता है कि धरती के प्रति गैर-जिम्मेदार व्यवहार के चलते हम कैसा देश आने वाली पीढ़ियों के लिये छोड़कर जाएंगे। आने वाले पच्चीस वर्षों में बच्चों पर लू का 8 गुणा, बाढ़ का 3 गुणा एवं जंगली आग का दोगुणा खतरा होगा। यही वजह है कि संयुक्त राष्ट्र बाल कोष यानी यूनिसेफ ने बच्चों के भविष्य की तस्वीर उकेरते हुए विभिन्न चुनौतियों के मुकाबले के अनुरूप नीति निर्माण की जरूरत बतायी है। यूनिसेफ ने सदी के पांचवें दशक तक की तीन महत्वपूर्ण वैश्विक प्रवृत्तियों का खाका खींचा है। ये घटक नौनिहालों के भविष्य के जीवन को नया स्वरूप देने में अहम भूमिका निभाएंगे। वर्ष 2050 तक देश की आधी आबादी के शहरी क्षेत्रों में रहने का अनुमान है। दरअसल, मौजूदा दौर में जिस तेजी से गांवों से शहरों की ओर पलायन बढ़ रहा है, जाहिर है ऐसी स्थिति में पहले से आबादी के बोझ तले दबी नागरिक सेवाएं चरमरा जाएंगी। ऐसे में सत्ताधीशों के लिये जरूरी होगा कि जलवायु परिवर्तन के संकट के बीच बच्चों के अनुरूप शहरी नियोजन को अपनी प्राथमिकता बनाएं और बच्चों के अनुकूल और जलवायु परिवर्तन के लिहाज से जुझारु, सुरक्षित एवं निरापद शहरी नियोजन के लिये शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल और टिकाऊ शहरी ढांचे में निवेश को प्राथमिकता दी जाये। शहर बेहतर जीवन के लिए बेहतरीन अवसर और उम्मीद दे सकते हैं। वे वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का 80 प्रतिशत से अधिक उत्पन्न करते हैं और उन्हें तेजी से विकास हासिल करने के लिए इंजन माना जाता है। वे विकास और नवाचार, विविधता और कनेक्टिविटी के दुनिया के सबसे मजबूत स्त्रोतों में से हैं और संभावित रूप से बच्चों को जीने, सीखने और आगे बढ़ने के लिए बेहतरीन अवसर प्रदान कर सकते हैं। बढ़ता शहरीकरण बड़ी असमानताओं को भी जन्म दे सकते हैं। आज शहरी क्षेत्रों में रहने वाले 4 बिलियन लोगों में से लगभग एक तिहाई बच्चे हैं। यह अनुमान है कि 2050 तक, दुनिया के लगभग 70 प्रतिशत बच्चे शहरी क्षेत्रों में रहेंगे, जिनमें से कई झुग्गी-झोपड़ियों में रहेंगे। इसलिये शहर स्कूलों और अस्पतालों जैसी बुनियादी सेवाओं तक बेहतर पहुंच प्रदान कर सकते हैं, भीड़भाड़ और उच्च प्रवेश लागत के कारण सबसे गरीब शहरी बच्चे उन तक पहुंचने में असमर्थ हो सकते हैं। अन्य चुनौतियाँ जो शहरी गरीबों को प्रभावित करती हैं, विशेष रूप से झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वालों को, उनमें भीड़भाड़ और अपर्याप्त सफाई व्यवस्थाएं शामिल हैं-जो बीमारियों के फैलने में सहायक होती हैं-किफायती और सुरक्षित आवास की कमी, परिवहन की खराब पहुंच और बाहरी वायु प्रदूषण में वृद्धि आदि हैं। उल्लेखनीय है कि उस समय देश जनसांख्यिकी बदलावों की चुनौती से जूझ रहा होगा। आकलन किया जा रहा है कि इस बदलाव के चलते ही वर्तमान की तुलना में बच्चों की संख्या में करीब दस करोड़ की कमी आएगी। वर्तमान में पूरी दुनिया में एक अरब बच्चे उच्च जोखिम वाले जलवायु खतरों का मुकाबला कर रहे हैं, तो अगर सरकारें अभी से नहीं चेती तो 2050 की स्थिति का सहज आकलन किया जा सकता है। मासूम चेहरों एवं चमकती आंखों का नया बचपन भारत के भाल पर उजागर एवं कायम करने के लिये सरकारों को गंभीर होना होगा। बच्चे के जीवन के प्रारंभिक वर्षों के दौरान आधुनिक मानवतावाद और पूंजीवाद से प्रभावित होकर प्रदर्शन पर अधिक ध्यान दिया जा रहा है। इससे परिवारों और बाल देखभाल प्रदाताओं पर अनावश्यक दबाव पड़ता है। वर्तमान में मौजूद रहने के बजाय, लोग भविष्य के बारे में सोचने में अधिक से अधिक समय व्यतीत कर रहे हैं। और ज्यादातर मामलों में वे इस बारे में नहीं सोच रहे हैं कि व्यापक अर्थों में सफल जीवन कैसा हो सकता है, बल्कि इसके बजाय वे स्कूल और कार्यस्थल में सफलता के बारे में सोच रहे हैं। यह कुछ कौशलों पर बहुत अधिक जोर देता है, जबकि अन्य-जैसे रचनात्मकता, सामाजिक क्षमता, जीवनमूल्य और उत्साह-को कम महत्वपूर्ण माना जाता है क्योंकि वे अधिक उन्नत शैक्षणिक ट्रैक या अधिक प्रतिष्ठित करियर में चयन के लिए प्रासंगिक नहीं हैं। इसका परिणाम यह होता है कि बच्चों में कई प्रतिभाएँ अविकसित रह जाती हैं। अगर समाज को भविष्य की चुनौतियों का सामना करना है-चाहे वह भविष्य आखिरकार कैसा भी क्यों न हो, तो भविष्य के खतरों की आहट को सुनते हुए जागरूक होना होगा। साफ है, नीति के स्तर पर प्रदूषण एवं बदलते मौसम की मार के लिये काम करना होगा। कम से कम भविष्य या बच्चों के लिये तो ऐसा किया ही जाना चाहिए। निश्चित ही यूनिसेफ की हालिया रिपोर्ट बच्चों के भविष्य की चिंताओं पर मंथन करने तथा उसके अनुरूप नीति-नियंताओं से नीतियां बनाने का सबल आग्रह करती है। तेजी से डिजिटल होती दुनिया में डिजिटल विभाजन भी एक बड़ी चुनौती होगी। तब तक कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग चरम पर होगा। जाहिर है कृत्रिम बुद्धिमत्ता जहां तरक्की का मुख्य साधन होगी, वहीं इसकी विसंगतियों का प्रभाव रोजगार के अवसरों एवं सामाजिक-पारिवारिक संरचना पर भी पड़ेगा। जहां दुनिया के विकसित देशों में अधिकांश आबादी इंटरनेट से जुड़ने के कारण प्रगति की राह में सरपट दौड़ रही है, तो गरीब मुल्कों में यह प्रतिशत विकसित देशों के मुकाबले करीब एक चौथाई ही है। ऐसे में समतामूलक आदर्श समाज की स्थापना के लिये डिजिटल डिवाइड को खत्म करना प्राथमिकता होनी चाहिए। इसके मद्देनजर हमारी कोशिश हो कि आधुनिक प्रौद्योगिकी का स्वरूप समावेशी हो। ताकि आधुनिक तकनीक तक बच्चों की समान व सुरक्षित पहुंच हो सके। निर्विवाद रूप से बच्चे आने वाले कल के लिये देश का भविष्य निर्धारक होते हैं। ऐसे में हर लोक कल्याणकारी सरकार का नैतिक दायित्व है कि अपनी रीतियों-नीतियों में बच्चों के हितों व अधिकारों को प्राथमिकता दे। तभी हम उनके सुखद भविष्य की उम्मीद कर सकते हैं। – ललित गर्ग

आलोचना पर दमनात्मक रवैया लोकतंत्र के लिए खतरा

योगेंद्र योगी

सत्तारुढ़ राजनीतिक दलों के नेताओं को आलोचना जरा भी बर्दाश्त नहीं है। मीडिया और सोशल मीडिया पर यदि सत्तारुढ़ दलों के नेताओं के खिलाफ कुछ लिखा या बोला जाता है तो उन पर सरकारें दमनात्मक कार्रवाई करने पर उतारू हो जाती हैं। राजनीतिक दल चाहे राष्ट्रीय हो या क्षेत्रीय, किसी को आलोचना बर्दाश्त नहीं है। उनका निशाना विपक्ष और मीडिया रहता है। सत्तारुढ़ दलों को आलोचना तभी तक सुहाती है जब वह विपक्षी दलों की हो। ऐसे में सच्चाई पर पर्दा डालने के लिए राजनीतिक दलों के नेता सरकारी मशीनरी का इस्तेमाल करने में कसर बाकी नहीं रखते। एक फिल्म साबरमती रिपोर्ट को लेकर भाजपा और केंद्र सरकार के मंत्री गदगद नजर आ रहे हैं। वहीं दूसरी तरफ बीबीसी ने जब गोधराकांड के बाद गुजरात में हुए दंगों को लेकर एक डॉक्यूमेंट्री बनाई तो न सिर्फ उस प्रतिबंध कर दिया गया, बल्कि आयकर विभाग ने बीबीसी पर छापे की कार्रवाई की। विक्रांत मैसी की द साबरमती रिपोर्ट को हरियाणा, छत्तीसगढ़ के साथ ही अब मध्य प्रदेश में भी टैक्स फ्री कर दिया गया है। इन तीनों राज्यों में भाजपा की सरकारें हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह की तारीफ के बाद राजनीतिक महकमों में भी इसकी चर्चा बढ़ गई है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा फिल्म को देखने के बाद इसकी सराहना की गई। विक्रांत मैसी की फिल्म द साबरमती रिपोर्ट की केंद्रीय भूमिका वाली यह फिल्म 27 फरवरी, 2002 के गोधरा ट्रेन अग्निकांड पर आधारित है। गोधरा स्टेशन के पास खड़ी साबरमती एक्सप्रेस की बोगी नंबर एस6 में आग लगा दी गई थी। अयोध्या से लौट रहे 59 हिंदू कारसेवक जिंदा जल गए थे। मरने वालों में 27 महिलाएं और 10 बच्चे भी शामिल थे। उसके बाद पूरे गुजरात में जो दंगा भड़का, वह आजाद भारत के सबसे भयावह दंगों में से एक था। मोदी उस समय गुजरात के मुख्यमंत्री थे। अब द साबरमती रिपोर्ट के जरिए बड़े पर्दे पर गोधरा कांड का खौफनाक मंजर दिखा है। पीएम मोदी के अलावा केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह समेत तमाम मंत्रियों और बीजेपी नेताओं ने द साबरमती रिपोर्ट की प्रशंसा की है। गोधरा में ट्रेन जलाए जाने की भयानक घटना का परिणाम पूरे राज्य में हिंसक दंगों की शक्ल में सामने आया। पूरा गुजरात जल उठा था। केंद्र सरकार ने 2005 में राज्यसभा को बताया था कि दंगों में 254 हिंदुओं और 790 मुसलमानों की जान गई थी। कुल 223 लोग लापता बताए गए थे। हजारों लोग बेघर भी हो गए थे। तत्कालीन मोदी सरकार ने एक जांच आयोग का गठन किया था। उस आयोग में जस्टिस जी टी नानावटी और जस्टिस के जी शाह शामिल थे। आयोग ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि मारे गए 59 लोगों में से अधिकतर कारसेवक थे। कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए सरकार ने जस्टिस यूसी बनर्जी की अध्यक्षता में एक अलग जांच आयोग का गठन किया। इस आयोग ने मार्च 2006 में सौंपी अपनी रिपोर्ट में इस घटना को एक दुर्घटना बताया। सुप्रीम कोर्ट ने रिपोर्ट को असंवैधानिक और अमान्य करार देते हुए खारिज कर दिया। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने एक विशेष जांच दल का गठन किया। गोधरा कांड और उसके बाद भड़के दंगों ने भारत की राजनीति को हमेशा-हमेशा के लिए बदल दिया। इस मामले में अदालती कार्रवाई जून 2009 से, घटना के आठ साल बाद शुरू हुई। स्पेशल एसआईटी कोर्ट ने 1 मार्च, 2011 को 31 लोगों को दोषी ठहराया, जिनमें से 11 को मौत की सजा और 20 को आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। अदालत ने इस मामले में 63 लोगों को बरी भी किया। एसआईटी कोर्ट ने उन आरोपों से सहमति जताई कि यह अनियोजित भीड़ द्वारा की गई घटना नहीं थी, बल्कि इसमें साजिश शामिल थी। 31 दोषियों को भारतीय दंड संहिता की आपराधिक साजिश, हत्या और हत्या के प्रयास से संबंधित धाराओं के तहत दोषी ठहराया गया था। गुजरात सरकार ने बाद में आरोपियों को बरी किए जाने पर सवाल उठाए। जिन्हें दोषी ठहराया गया, उन्होंने भी गुजरात हाई कोर्ट में अपील की। हाई कोर्ट ने मामले में कुल 31 दोषियों को दोषी ठहराया था और 11 दोषियों की मौत की सजा को आजीवन कारावास में बदल दिया था। अब मामला सुप्रीम कोर्ट के सामने है। गुजरात सरकार ने 11 दोषियों की मौत की सजा को आजीवन कारावास में बदलने के खिलाफ अपील की है, कई दोषियों ने मामले में उनकी दोषसिद्धि को बरकरार रखने के उच्च न्यायालय के फैसले को चुनौती दी।

सेहत मंत्र

रामबाण हैं सर्दियों में काली गाजर का सेवन

सर्दियों के दौरान बाजारों में हरी सब्जियों से भरे हुए है। ठंड के मौसम में मेथी, बथुआ, सरसों का साग और चने के साग खाने का एक अलग ही स्वाद मिलता है और शरीर को भी गर्म रखता है। इसके साथ ही बाजारों में गाजर और मूली भी मिल रही है, इसे कच्ची खाओ या फिर पकाकर खाएं, यह अलग स्वाद ही देती है। कम लोग ही जानते हैं काली गाजर, जिसे अक्सर 'देसी गाजर' कहा जाता है। जबकि लाल गाजर आम हैं। काली गाजर में फाइबर, पोटेशियम, विटामिन ए और विटामिन जैसे आवश्यक पोषक तत्वों से भरपूर होती हैं, काली गाजर पाचन, हृदय स्वास्थ्य और समग्र कल्याण के लिए अत्यधिक फायदेमंद बनाता है। काली गाजर में एंथोसायनिन होता है, एक शक्तिशाली एंटीऑक्सीडेंट जो उम्र बढ़ने और कैंसर के लिए जिम्मेदार मुक्त कणों से लड़ता है। ये फाइटोन्यूट्रिएंट्स कैंसर कोशिकाओं के विकास को रोकने में मदद करते हैं। फाइबर से भरपूर, काली गाजर स्वस्थ पाचन को बढ़ावा देती है और कब्ज और पेट की अन्य समस्याओं को कम करने में मदद करती है। काली गाजर रक्तचाप को नियंत्रित करने और कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने में मदद कर सकती है, जिससे हृदय रोगों का खतरा कम हो जाता है। काली गाजर का हलवा भी आपके दिल को फायदा पहुंचा सकता है। लाल गाजर की तरह, काली गाजर में विटामिन ए और बीटा-कैरोटीन उच्च मात्रा में होता है, जो आंखों के स्वास्थ्य में सहायता करता है और रेटिना को अच्छी स्थिति में रखकर दृष्टि में सुधार करता है। कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स के साथ, काली गाजर ब्लड शुगर के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करती है, जिससे यह मधुमेह के रोगियों के लिए उपयुक्त हो जाती है। काली गाजर के सेवन से झुर्रियां कम होती और सूजन-रोधी लाभ प्रदान करके त्वचा के स्वास्थ्य को बढ़ाती है, जो त्वचा की समस्याओं को हल करने में मदद कर सकती है। विटामिन सी और अन्य पोषक तत्वों से भरपूर, काली गाजर प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देती है, सर्दी और संक्रमण से बचाती है।

धर्म मंत्र

ब्रह्मपुराण में कहा गया है कि गोदावरी के तट पर हर चार अंगुल पर तीर्थ हैं

ब्रह्मपुराण में गोदावरी की महिमा के बारे में बताया गया है। महर्षि गौतम ने शंकर जी की कृपा से पृथ्वी पर इन्हें अवतरित किया। एक पुराण के अनुसार एक ब्राह्मणी योगाभ्यास करते?करते गोदावरी बन गई। गोदावरी पश्चिम घाट त्र्यम्बक पर्वत से निकल कर बंगाल की खाड़ी में मिल जाती है। आयुर्वेद के अनुसार इसका जल औषधि है। ब्रह्मपुराण में कहा गया है कि गोदावरी के तट पर हर चार अंगुल पर तीर्थ हैं। गोदावरी की सात धाराएं निकलती हैं जिनके नाम हैं? वशिष्ठा, कौषिकी, बृद्ध, गौतमी, भारतद्वाजी, आत्रेयी और तुल्या। गोदावरी के प्रमुख तीर्थों में नासिक की महिमा बहुत मानी जाती है। यहां पर त्र्यम्बकेश्वर की गणना द्वादश?ज्योतिर्लिंग में की जाती है। भगवान राम ने यहीं पंचवटी में वनवास के कई साल बिताये थे। यहीं से सीता का हरण हुआ था। प्रत्येक बारह वर्ष पर जब बृहस्पति सिंह राशि में होते हैं तो नासिक में कुम्भ पर्व होता है। मुंबई से दिल्ली जाने वाले मार्ग पर नासिक रोड़ प्रसिद्ध स्टेशन है। नासिक और पंचवटी वास्तव में दोनों एक नगर हैं। गोदावरी दोनों के बीच से बहती है। दोनों ही तटों पर तीर्थों की भरमार है। गोदावरी त्र्यम्बक के पास से निकलती है। वर्षा के बाद यहां बहुत अधिक जल नहीं रहता। गोदावरी पर कई पुल बने हैं। गोदवरी में रामकुण्ड, सीताकुण्ड, लक्ष्मणकुण्ड, धनुषकुण्ड आदि अनेक तीर्थ हैं। स्नान का मुख्य स्थान रामकुण्ड है। रामकुण्ड में कुछ दूरी पर अरुणा की धारा गोदावरी में गिरती है। इसे अरुणा संगम कहते हैं।

पर्यटन

सांस्कृतिक धरोहर, ऐतिहासिक मंदिरों और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है श्रीशैलम

श्रीशैलम, आंध्र प्रदेश का एक प्रमुख धार्मिक और पर्यटन स्थल है, जो अपनी सांस्कृतिक धरोहर, ऐतिहासिक मंदिरों और प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। यह शहर भगवान शिव और देवी पार्वती के मंदिर के लिए जाना जाता है, जो भारतीय तीर्थयात्रियों के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। श्रीशैलम मंदिर भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में से एक है। यह मंदिर शैव और शक्ति भक्तों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थल है। यहाँ का वास्तुकला अद्भुत है और मंदिर के चारों ओर का वातावरण भक्तों को आध्यात्मिक अनुभव प्रदान करता है। बाणगंगा जलाशय मंदिर के निकट स्थित है और यहाँ के पानी की पवित्रता को लेकर मान्यता है। श्रद्धालु यहाँ स्नान करके अपने पापों का नाश करते हैं। यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य और शांति पर्यटकों को आकर्षित करता है। श्रीशैलम डेम कृष्णा नदी पर बना एक विशाल बांध है। यह पर्यटकों के लिए एक अद्भुत दृश्य प्रस्तुत करता है। यहाँ से नदी और आसपास के पहाड़ों का दृश्य मनमोहक होता है। पर्यटक यहाँ बोटिंग का आनंद भी ले सकते हैं। यह आश्रम संत राघवेंद्र स्वामी को समर्पित है और यहाँ भक्तों की एक बड़ी संख्या आती है। आश्रम का शांत वातावरण और साधना का स्थान भक्तों के लिए विशेष है। श्रीशैलम का किला ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। यहाँ की दीवारें और मीनारें एक समय की भव्यता को दर्शाती हैं। किले की चोटी से चारों ओर का दृश्य अद्भुत होता है और यहाँ से सूर्यास्त का दृश्य देखने लायक होता है। यह मंदिर श्रीशैलम के निकट स्थित है और यहाँ की भव्यता और आस्था भक्तों को आकर्षित करती है। यह मंदिर भी भगवान शिव को समर्पित है और यहाँ विशेष उत्सव और मेले आयोजित होते हैं। श्रीशैलम तक पहुँचने के लिए सड़क और रेल दोनों सुविधाएँ उपलब्ध हैं। निकटतम रेलवे स्टेशन मल्लिकार्जुनपुरम है, जबकि सबसे नजदीकी एयरपोर्ट हैदराबाद में है। यहाँ का मौसम पूरे साल यात्रा के लिए उपयुक्त होता है, लेकिन सर्दियों में यहाँ आना विशेष रूप से सुखद होता है। देखा जाये तो श्रीशैलम एक ऐसा स्थान है जहाँ आप धार्मिकता, संस्कृति और प्राकृतिक सौंदर्य का अद्भुत अनुभव कर सकते हैं।

सीसीटीवी कैमरों से होगी मेला परिसर की निगरानी

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ आज होगा महादेवा महोत्सव का भव्य आगाज

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। सुप्रसिद्ध पौराणिक महादेवा महोत्सव का शुक्रवार 29 नवम्बर 2024 से आगाज हो रहा है। महादेव महोत्सव को भव्य एवं दिव्य बनाने के लिये महादेवा परिसर में प्रशासन की सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गयी है। इस बार महादेवा महोत्सव में आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। इसके साथ ही महोत्सव में प्रतिदिन अलग-अलग कार्यक्रम लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करेंगे। जिलाधिकारी श्री सत्येंद्र कुमार द्वारा महादेवा महोत्सव का शुभारंभ किया जाएगा। बाराबंकी जिले के रामनगर तहसील क्षेत्र में स्थित पौराणिक लोधेश्वर महादेव मंदिर परिसर में शुक्रवार 29 नवम्बर 2024 से पारंपरिक रूप से लगने वाला अगहनी मेंला जिसे महादेवा महोत्सव के नाम से जाना जाता है उसकी भव्य एवं दिव्य से शुरुआत होगी। इस बार महादेवा महोत्सव में होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम आकर्षण का केंद्र रहेंगे। इसके साथ ही महादेवा महोत्सव में पशु बाजार, खेल प्रतियोगिताएं व अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जा रहा है। रामनगर संवाददाता अनिल शुक्ला के अनुसार महादेवा महोत्सव की तैयारिया

अंतिम चरणों में हैं सांस्कृतिक मंच सज्जा व साफ सफाई सहित सभी तैयारिया जोरो से चल रही है। आज बुधवार को मेला सचिव उप जिलाधिकारी पवन कुमार एवं तहसीलदार भूपेंद्र विक्रम सिंह ने मौके पर जाकर कार्य कर रहे लोगों से और अधिक तेजी से कार्य करने को निर्देशित करते हुए अति शीघ्र सभी कार्य पूरा करने के निर्देश दिए। सात दिवसीय महादेवा महोत्सव के प्रारंभ होने में शेष दो ही दिन बचे हैं। 29 नवंबर अपराह्न 2 बजे मुख्य अतिथि जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार के द्वारा महादेवा के मुख्य द्वार पर फीता काट कर उद्घाटन करने के बाद रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम भजन संध्या कवि सम्मेलन सहित तमाम मनोहारी कार्यक्रम 7 दिनों तक चलेंगे इसके अलावा वॉलीबॉल व कुश्ती प्रतियोगिता भी होगी। जिसमें प्रदेश व देश के नाम चीन खिलाड़ी व पहलवान अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करेंगे। स्कूली बच्चों के रंगारंग कार्यक्रम जादू सहित तमाम मनमोहक कार्यक्रम होंगे। अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में देश व प्रदेश के नाम चीन कवियों का भी जमावड़ा होगा। महोत्सव की तैयारी बहुत तेजी के साथ चल रही हैं सांस्कृतिक मंच की साज सज्जा भी तेजी से चल रही है महोत्सव में बच्चों के मनोरंजन के लिए झूले सहित सभी मनोरंजन के संसाधन लग गए हैं प्रदर्शनी लगाने का कार्य तेजी से चल रहा है खंड विकास अधिकारी रामनगर जितेंद्र कुमार पूरी तन्मयता के साथ महोत्सव में दी गई जिम्मेदारियां को बेहतर अंजाम देने में लगे हुए हैं। प्रधान महादेवा राजन तिवारी भी अपने सहयोगियों के साथ तैयारियों को चाक चौबंद बनाने में लगे हुए हैं आज बुधवार को जिलाधिकारी को महादेवा महोत्सव की तैयारियों का जायजा लेने आना था लेकिन अपरिहार्य कारणों से नहीं आ पाए संभवत गुरुवार को वह महादेवा जरूर आएंगे।

मेला परिसर में होंगे सांस्कृतिक कार्यक्रम महादेवा महोत्सव की धूम प्रदेश में ही नहीं बल्कि देश भर में रहती है। दूर-दूर से लोग इस महोत्सव में शामिल होने के लिए पहुंचते हैं। प्रशासन के द्वारा महोत्सव का आयोजन प्रतिवर्ष कराया जाता रहा है। महादेवा महोत्सव को भव्य व दिव्य बनाने के लिये बाराबंकी के जिलाधिकारी श्री सत्येंद्र कुमार और पुलिस अधीक्षक श्री दिनेश कुमार सिंह ने अधिकारियों और कर्मचारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए हैं। महादेवा महोत्सव में आयोजित होने वाले सांस्कृतिक कार्यक्रम महादेवा मेला परिसर में संपन्न होंगे। मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं के लिए चाक-चौबंद व्यवस्था रहेगी।

महादेवा महोत्सव 2024 '' प्रस्तावित कार्यक्रमों की समय-सारिणी,

आज दोपहर 12 बजे से 4 बजे तक, उद्घाटन समारोह स्थानीय स्कूली बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम, सायं 4 बजे से 7 बजे तक, बहार सुगम संगीत एवं लोकगीत, सायं 7 बजे से कार्यक्रम की समाप्ति तक, भजन संध्या प्रस्तुति (स्वाती मिश्रा), 30.11.2024 शनिवार, दोपहर 12 बजे से 4 बजे तक
स्थानीय स्कूली बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्याक्रम, सायं 4 बजे से 7 बजे तक,जमुना प्रसाद कनौजिया लोकगायक एवं कठपुतली नृत्य, सायं 7 बजे से कार्यक्रम की समाप्ति तक, राई नृत्य, आल्हा-ऊदल (फोक डांस नाइट) इंडियन आइडल म्यूजिक कंसर्ट, 01.12.2024 रविवार, दोपहर 12 बजे से 4 बजे तक, स्थानीय कवि सम्मेलन, सायं 4 बजे से 7 बजे तक सुर संगीत संध्या, सायं 7 बजे से कार्यक्रम की समाप्ति तक, मानस कार्यक्रम, 02.12.2024 सोमवार, दोपहर 12 बजे से 4 बजे तक, वालीबाल प्रतियोगिता, सायं 4 बजे से 7 बजे तक, अवधी गीत/भजन, सायं 7 बजे से कार्यक्रम की समाप्ति तक, अखिल भारतीय कवि सम्मेलन, 03.12.2024 मंगलवार, दोपहर 12 बजे से 4 बजे तक, वालीबाल प्रतियोगिता, सायं 4 बजे से 7 बजे तक, नाटक/जादू, सायं 7 बजे से कार्यक्रम की समाप्ति तक, म्यूजिकल नाइट, 04.12.2024 बुधवार, दोपहर 12 बजे से 4 बजे तक, दंगल, सायं 4 बजे से 7 बजे तक, सांस्कृतिक कार्यक्रम कारवां फाउंडेशन द्वारा प्रस्तुति, सायं 7 बजे से कार्यक्रम की समाप्ति तक, भोजपुरी नाइट प्रस्तुति (रितेश पाण्डेय और निशा उपाध्याय), 05.12.2024 गुरूवार, दोपहर 12 बजे से 4 बजे तक, दंगल, सायं 4 बजे से 7 बजे तक, लोक नृत्य/झाँकी, सायं 7 बजे से कार्यक्रम की समाप्ति तक, ब्रज की होली / मशाने की होली एवं समापन।

प्रशिक्षण में जल संरक्षण को लेकर दी गई जानकारी

कैनविज टाइम्स संवाददाता

हैदरगढ़ बाराबंकी । बैच वार चल रहे ग्राम प्रधान, पंचायत सहायक एवं समूह के सक्रिय सदस्यों को पेयजल आपूर्ति योजना के अंतर्गत आज प्रशिक्षण के अंतिम बैच के प्रतिभागियों को जल जीवन मिशन के अंतर्गत ग्राम पंचायत स्तर पर पूर्व से स्थापित एवं वर्तमान में निर्मित होने वाली परियोजनाओं को नियमानुसार ग्राम पंचायत को हैंडोवर एवं टेकओवर कैसे करना है एवं सुचारु रूप से कैसे संचालित किया जाना है तथा शुद्ध पेयजल की उपलब्धता कैसे बनाए रखना है आये मास्टर ट्रेनर द्वारा प्रतिभागियों को जानकारी दी गई । परियोजना में तकनीकी रूप से कैसे प्रबंध करना है इसके बारे में प्रतिभागियों को विस्तृत रूप से पवन कुमार कंसलटिंग इंजीनियर द्वारा प्रशिक्षित किया गया एवं विकासखंड मैं तैनात सहायक विकास अधिकारी पंचायत श्री कौशल कुमार प्रतिभागियों को वर्तमान में गिरते जल स्तर को कैसे रोका जाए एवं शुद्ध पेयजल स्रोतों की निरंतर कमी के चलते उसके उपलब्धता किस तरह सुनिश्चित की जा सकती है पर सभी को का जल संरक्षण का संकल्प दिलाया गया और माननीय न्यायलय के दिनांक 23/10/2024 के आदेश का अनुपालन करते हुये महिला ग्राम प्रधानों को उनके अधिकार और कर्तव्यों के बारे में विशेष रूप से बताया गया जिससे प्रधान पति की अवधारणा को समाप्त किया जा सके।

ओवरलोड डंफर चीर रहे हैं धरती का सीना, निगरानीकर्ता मौन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

निंदूरा बाराबंकी। कुर्सी थाना क्षेत्र में लखनऊ सीतापुर मार्ग पर तेज रफ्तार ओवरलोड डम्फर जान जोखिम बड़ी समस्या बने हैं। विगत दिनों इन डंफरों के अनियंत्रित संचालन से कई हादसे हो चुके है। परिवहन प्रशासन व पुलिस इन्हें नियंत्रण में सफल नहीं हुए या फिर जानबूझकर रोकथाम नहीं कर रहे हैं। लखनऊ महमूदाबाद मार्ग पर मौरंग-बालू लदे ओवरलोड ट्रक और डंफर पूरी रातों दिन फर्राटा भरते हैं। जिससे राहगीरों का सड़क पर चलना दुश्वार है। क्षमता से अधिक भार वाहन से सड़के धंस व फट जाती है । फिर भी इन ओवर लोड वाहनों को नियंत्रित करने जिम्मेदार आगे नहीं आ रहे हैं।

आग का गोला बनी कार बाल-बाल बचे सवार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

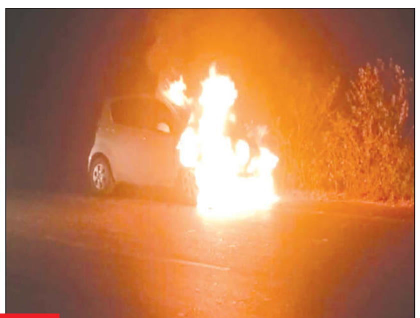

बाराबंकी। श्रावस्ती से लखनऊ जा रही रिडस कार में शॉर्ट सर्किट से गुरुवार की देर शाम लगी आग से कार जलकर खाक हुई। कार चालक एवं साथी ने कार से निकलकर जान बचायी।

बाधित रहा आवागमन

सूचना पर पहुँची फायर ब्रिगेड की गाड़ी ने आग को बुझाया। गोमतीनगर लखनऊ निवासी डा. विनय कुमार गुरुवार की देर शाम अपनी रिड्स कार से अपने एक साथी के साथ श्रावस्ती से लखनऊ वापस लौट रहे थे कि गोंडा बहराइच राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित बड़ागांव मोड के निकट महराजा ढाबे के निकट अचानक कार आगे इंजन से आग की लपटें निकलने लगी जिस पर चला रहे डा. विनय कुमार कार को हाईवे के किनारे खड़ी कर बाहर निकल आए। आग थमने के बाद यातायात व्यवस्था सुचारू रूप से संचालित हुई ।

यूथ विंग कार्यालय का शुभारंभ करने आए थे किसान नेता

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। भारतीय किसान यूनियन (भाकियू) के राष्ट्रीय अध्यक्ष राकेश टिकैत गुरुवार को जनपद में संगठन की यूथ विंग के जिला कार्यालय का शुभारंभ करने पहुंचे। इस

बोले अब आंदोलन पर जिंदा रहेगा किसान : राकेश टिकैत

दौरान उनका पर भारतीय किसान यूनियन के पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। इसके बाद पत्रकारों से बात करते हुए बारी-बारी प्रश्नों के उत्तर दिए। मोदी सरकार के दूसरे सत्र के शीतकालीन सत्र की शुरुआत हो गई है। लेकिन एमएसपी व स्वामीनाथन की रिपोर्ट के अनुसार कानून अब तक लागू नहीं किए गए हैं। जबकि उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र में भाजपा की तत्कालीन चुनाव में पूर्ण बहुमत से सरकार बनी है। इस सवाल पर उन्होंने कहा कि अब किसान आंदोलन पर जिंदा रहेगा। संसद का नया सत्र किसान से शुरू होता है। किसी भी राजनीतिक पार्टी का काम बगैर किसान का नाम लिए नहीं चलता है। सरकार की जो योजनाएं हैं उन पर अमल किया जाए तो बहुत से कम हो सकते हैं। लेकिन ज्यादातर आम कागजों पर ही रह जाते हैं। उन्होंने अपनी बातों में आंदोलन पर जोर देते हुए कहा बड़े-बड़े आंदोलनों ने किसानों की आवाज को राष्ट्रीय स्तर पर मजबूती दी है। अब जरूरत है कि सरकार केवल घोषणा तक सीमित ना रहे बल्कि धरातल पर किसानों के लिए ठोस कदम उठाए। किसान जिंदा है तो देश जिंदा है। इस दौरान संगठन के युवा प्रदेश अध्यक्ष अनुज सिंह, मंडल प्रभारी अयोध्या फैसल मलिक, मध्यांचल प्रवक्ता बलराम यादव,लालजी यादव, सुनीता देवी व आदर्श सिंह उर्फ बॉबी ठाकुर सहित सैकड़ो की संख्या में किसान नेता उपस्थित रहे।

महादेवा महोत्सव का भव्य आगाज आज

बाराबंकी कैनविज टाइम्स संवाददाता। सुप्रसिद्ध पौराणिक महादेवा महोत्सव का शुक्रवार 29 नवम्बर 2024 से आगाज हो रहा है। महादेवा महोत्सव को भव्य एवं दिव्य बनाने के लिये महादेवा परिसर में प्रशासन की सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गयी है। इस बार महादेवा महोत्सव में आकर्षक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाएंगे। इसके साथ ही महोत्सव में प्रतिदिन अलग-अलग कार्यक्रम लोगों को अपनी तरफ आकर्षित करेंगे। जिलाधिकारी सत्येंद्र कुमार द्वारा महादेवा महोत्सव का शुभारंभ आज दोपहर दो बजे शुभ मुहूर्त में किया जाएगा।

क्षय रोग पीड़ितों को मिले मेडिकल किट

निंदूरा बाराबंकी कैनविज टाइम्स संवाददाता। क्षेत्र के प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र कुर्सी में गुरुवार को प्रधानमन्त्री टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत क्षयरोग पीड़ितों के लिये पोषण आहार पोटली का वितरण किया गया।प्रभारी डॉ अर्जुन चौधरी एवं एसटीएस सैयद इकबाल जैदी ने रोगियों को पोटली प्रदान की। इस मौके पर अश्वनी त्रिवेदी,फार्मासिस्ट जगमोहन, समाज सेवी मो फुरकान इत्यादि लोग मौजूद रहे।

पुलिस की सराहनीय पहल, परिणय सूत्र में बंधे प्रेमी युगल

निंदूरा बाराबंकी कैनविज टाइम्स संवाददाता। बड्डूपुर थाना क्षेत्र के एक प्रेमी युगल बिना किसी को बताए घर भाग गए थे। पुलिस की सराहनीय पहल की दोनों परिवारों को विवाह के लिए राजी कर युगल की शादी कर दी। बताते हैं कि प्रेमी युवक युवती को लेकर फरार हो गया था।लड़की के परिजनों ने स्थानीय थाने में पुलिस को तहरीर दी थी। पुलिस ने थाने पर मौजूद लड़की व लड़के के परिजनों से बात की और उन्हें समझाया बुझाया। जिस पर परिवार के दोनों लोग रजामंद हो गए। प्रभारी मनोज कुमार ने बताया दोनों एक ही बिरादरी के है। काफी दिनों से प्रेम प्रसंग चल रहा था। दोनों ने मंदिर में परिजनों की सहमति से शादी रचाई है।

तेज रफ्तार ने ली वृद्ध की जान

मसौली बाराबंकी कैनविज टाइम्स संवाददाता। बाराबंकी- गोंडा बहराइच राष्ट्रीय राजमार्ग पर वाहनों की तेज रफ्तार जनसाधारण के लिए काल साबित हो रहा है।हाइवे पर सावधानी हटी कि दुर्घटना घटी की कहावत चरितार्थ हो रही है। लखनऊ से गोंडा बहराइच, श्रावस्ती, बलरामपुर सहित पड़ोसी देश नेपाल को जोड़ने वाले इस राष्ट्रीय राजमार्ग पर अत्यधिक वाहनो का आवगमन रहता है। बुधवार की देर शाम नयागाँव निवासी 65 वर्षीय नारायन पुत्र बेचु लाल सड़क पार कर रहा था कि अज्ञात वाहन ने जोरदार टक्कर मार दी।परिजनों ने घायल वृद्ध को जिला अस्पताल मे भर्ती कराया जिनकी इलाज के दौरान मृत्यु हो गयी।

डेढ़ सौ बकाएदारों के कनेक्शन काटे, बकाया जमा कराया

निंदूरा बाराबंकी। विकास खण्ड क्षेत्र के कस्बा टिकैतगंज में गुरुवार को विद्युत उपकेंद्र कुर्सी के अधिकारियों द्वारा चेकिंग अभियान चलाया तथा कैंप आयोजित कर उपभोक्ताओं के बिल जमा कराया गया। अभियान के दौरान करीब 510 कनेक्शन चेक किए गए और 142 बकायेदारों के कनेक्शन काटे गए। सैकड़ों उपभोक्ताओं द्वारा द्वारा बैंक ऑफ इंडिया के निकट लगाए गए कैंप में बिजली का बिल जमा किया गया।कैंप के माध्यम से बहुत से लोगों की समस्याओं का निस्तारण भी किया गया । इस मौके पर लोगों से अपील की गई कि प्रत्येक माह विद्युत बिल अवश्य जमा कर दें। कैंप के माध्यम से सात लाख पचास हजार बकाया जमा कराया गया।

सड़क हादसे में दो की मौत, आधा दर्जन घायल

बस्ती। पुरानी बस्ती थाना क्षेत्र के शब देईया के पास नेशनल हाईवे पर दो ट्रकों की आमने-सामने हुई भिड़ंत में दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि कार सवार चार लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। बताया जा रहा है कि यह हादसा एक कार को बचाने के चक्कर में हुआ। दो ट्रक तेज गति में आमने-सामने टकरा गए। सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची। टक्कर इतनी भीषण थी कि एक ट्रक में फंसे व्यक्ति को निकालने के लिए पुलिस और स्थानीय लोगों को काफी मशक्कत करनी पड़ी। घायलों को तुरंत जिला अस्पताल भेजा

निवेशकों का 250 करोड़ लेकर फरार एलयूसीसी का जिला संचालक पांच साथियों समेत धरा गया

कैनविज टाइम्स संवाददाता

बाराबंकी। चिटफंड के माध्यम से बगैर कोई सरकारी वित्तीय जानकारी दिए 84 दिनों में धन दुगना करने का दावा कर 250 करोड़ से अधिक धन हड़पने के आरोपी एलयूसीसी सोसाइटी के जनपद हेड सहित पांच आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है। जिन्हे शुक्रवार को न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया जाएगा। जिनपर आरोप है कि उन्होंने सोसाइटी के फाउंडर समीर अग्रवाल जोकि दुबई में है। उसकी मद्त से कई 250 करोड़ से ऊपर की ठगी की है। जबकि इस फर्जी सोसाइटी ने कृषि मंत्रालय से किसानों को बढ़ावा देने सहित अन्य स्कीमों में अपना रजिस्ट्रेशन कर रखा था लेकिन इसका आरबीआई में कोई रजिस्ट्रेशन नहीं था। कृषि मंत्रालय के रजिस्ट्रेशन के तहत यह कंपनी मात्र यूपी और दिल्ली में काम कर सकती थी।

दुबई में मौज फरमा रहा है, कंपनी का फाउंडर समीर अग्रवाल

लेकिन कंपनी नियमों को दरकिनार कर उत्तराखंड, राजस्थान व मध्य प्रदेश में काम कर रही थी। मात्र जिले व आस पास के जनपदों में पुलिस ने अबतक 56 ब्रांच को बंद कराया है। साथ आरोपी फर्जी कंपनी के विरुद्ध पांच मुकदमे बदोसराय, दो देवा, एक मोहम्मदपुर खाला व एक रामनगर समेत 10 मुकदमें दर्ज किए जा चुके हैं। पुलिस ने आरोपियों के पास 33 पासबुक, पांच बॉन्ड पेपर, ए एमजी हेक्टर व एक फॉर्च्यूनर कार बरामद की है। जिसके संबंध में गुरुवार को अपर पुलिस अधीक्षक उत्तरी चिरंजीव नाथ सिन्हा ने बताया कि थाना बदोसराय पर किरन वर्मा ने द लोनी अर्बन मल्टीस्टेट क्रेडिट एंड थिप्ट कोआपरेटिव सोसाइटी लिमिटेड (एलयूसीसी) के विरुद्ध एजेंट रामनरेश वर्मा पुत्र स्वर्गीय जगदीश प्रसाद निवासी ग्राम बरोलिया द्वारा एक लाख 25 हजार रुपए की धोखाधड़ी करने के बाद कंपनी बंद कर भाग जाने का आरोप लगाते हुए कंपनी के विरुद्ध मुकदमा दर्ज कराया। जिसकी जांच पड़ताल में की गई तो कई 100 करोड़ की धोखाधड़ी का मामला सामने आया है। कंपनी वर्ष 2012 से यहां काम कर रही थी। पुलिस द्वारा गिरफ्तार किए गए जनपद के हेड संजीव कुमार वर्मा पुत्र कमलेश चंद्र निवासी इब्राहिमपुर मजरे साढेमऊ थाना फतेहपुर ने बताया कि इससे पहले वह सभी ऑप्शन वन, सौरभ अग्रवाल एडवांटेज समेत छह कंपनी बनाकर लोगों से चित फंड के माध्यम से पैसा एकत्रित कर चुके है। एलयूसीसी कंपनी में तीन मैनेजर स्वामी दयाल मिश्रा पुत्र तुलसीराम निवासी भवानी पूर्व मजरे केवलापुर थाना सफदरगंज व रामशरण वर्मा पुत्र सुंदरलाल निवासी घिसियावन पूरवा मजरे मुरलीगंज थाना जैदपुर और एक कलेक्शन कर्ता रामनरेश वर्मा पुत्र स्वर्गीय जगदीश प्रसाद निवासी बरौलिया काम करता था। जिन्हें भी पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। वही इस संबंध में अपर पुलिस अधीक्षक उत्तरी ने यह भी बताया कि मामले में संजीव से की गई पूछताछ में पता चला है शहर में जमुरिया नाला के निकट रहने वाले उत्तम सिंह राजपूत बाराबंकी आसपास जिले में कंपनी का काम देखते थे। जिसकी पत्नी माया सिंह इस कंपनी की कोषाध्यक्ष बताई गई। जबकि दिनेश कुमार सिंह निवासी आलापुर, अखिलेश मिश्रा निवासी भवानीपुर व संतोष कुमार मिश्रा निवासी अहमदनगर थाना जैदपुर को दोषी पाए जाने पर वांछित किया गया है। जिन्हे गिरफ्तार करने के लिए पुलिस लगातार दबिश दे रही है।

परमट मंदिर के गर्भगृह में लगी चांदी की चादर चोरी करते पकड़ा गया चोर

कानपुर। ग्वालटोली थाना क्षेत्र में स्थित शहर के प्रसिद्ध धामआनंदेश्वर मंदिर के गर्भगृह में लगी चांदी की चादर चोरी करते हुए गुरुवार को एक चोर पकड़ा गया। मंदिर के महंत ने उसे पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस उसके खिलाफ विधिक कार्रवाई करते हुए जेल भेज दिया। अपर पुलिस उपायुक्त महेश कुमार ने बताया कि पकड़ा गया आरोपित कोतवाली थाना क्षेत्र के बंगाली मार्केट शिवाला निवासी रुपेन्द्र वर्मा पुत्र जितेन्द्र वर्मा है। इसके खिलाफ आनंदेश्वर मंदिर परमट परिसर निवासी महंत अरुण भारती गुरू उमाशंकर भारती की तहरीर पर चोरी का मुकदमा दर्ज किया गया है। महंत अरुण भारती ने आरोप लगाया है कि गुरुवार को मंदिर के गर्भगृह में लगे चांदी के चादर को रुपेन्द्र वर्मा एक पेचकस से तोड़ रहा था कि इस दौरान मेरी नजर पड़ गई तो वह भागने का प्रयास किया। लेकिन मैंने उसे रंगे हाथ पकड़ लिया। उसे लेकर थाने पर पहुंचे और उसके खिलाफ तहरीर दी। पुलिस उसके खिलाफ विधिक कार्रवाई करते हुए न्यायालय में पेश करने के बाद जेल भेज दिया।

ऋषभ पंत और हमारी विचारधारा में अंतर था रुपए से इसका कोई लेना देना नहीं: जिंदल

एजेंसी

नई दिल्ली। दिल्ली कैपिटल्स के सह-मालिक पार्थ जिंदल ने खुलासा किया कि इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) मेगा नीलामी से पहले ऋषभ पंत को बनाए रखने के लिए फ्रेंचाइजी ने हर संभव कोशिश की लेकिन इस दिग्गज विकेटकीपर बल्लेबाज के साथ टीम संचालन को लेकर प्रबंधन के विचार एक जैसे नहीं थे।

कैपिटल्स ने पंत को टीम में बरकरार नहीं रखा और बाएं हाथ के इस खिलाड़ी को हाल ही में मेगा नीलामी में लखनऊ सुपर जायंट्स ने 27 करोड़ रुपये में खरीदा। वह आईपीएल इतिहास में सबसे महंगे खिलाड़ी बन गए। जिंदल ने 'ईएसपीएनक्रिकइन्फो' से कहा, '' फ्रेंचाइजी के संचालन पर हमारी सोच अलग-अलग थी। यही कारण है कि यह (पंत का टीम से अलग होना) हुआ। इसका पैसे से इसका कोई लेना-देना नहीं है। उन्होंने कहा, '' ऋषभ के लिए पैसा कभी कोई मुद्दा नहीं रहा। हमारे लिए भी पैसा कभी कोई मुद्दा नहीं था। मुझे लगता है कि हम तीनों (किरण ग्रांधी, जिंदल और पंत) की सोच एक जैसी नहीं थी।'' जिंदल ने कहा, ''उन्होंने (पंत) अंत में एक फैसला किया। हमने सब कुछ करने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने आगे बढ़ने का मन बना लिया था। जिंदल ने मतभेद के मुद्दों पर पूछे जाने पर कहा, '' यह फ्रेंचाइजी के संचालन से जुड़ा हुआ है। हमें उनसे कुछ उम्मीदें थी और उन्हें हम से कुछ उम्मीदें थी। मैं बस इतना कह सकता हूं कि हम कुछ चीजों पर एकमत नहीं हो पाए।'' जिंदल ने कहा कि टीम प्रबंधन को एहसास हो गया था कि नीलामी से पंत को वापस खरीदना असंभव जैसा काम था। उन्होंने कहा, ''जिस क्षण हमने उसे रिटेन नहीं किया, मुझे पता था कि अब उसे वापस लाना मुश्किल भरा फैसला होगा। हमने उसके लिए 20.25 (करोड़) रुपये में 'राइट-टू-मैच' का इस्तेमाल किया, लेकिन फिर बजट बहुत अधिक हो गया। हम 22-23 (करोड़) रुपये तक बढ़ाने के लिए तैयार थे।

गुकेश ने तीसरी बाजी जीत कर लिरेन पर बनायी मानसिक बढ़त

एजेंसी

सिंगापुर। भारत के युवा शतरंज खिलाड़ी डी गुकेश ने विश्व शतरंज चैम्पियनशिप में एक दिन के विश्राम के बार शुक्रवार को चौथी बाजी के लिए जब चीन के डिंग लिरेन के खिलाफ चुनौती पेश करेंगे तो 14 बाजियों वाले इस मुकाबले की तीसरी बाजी में मिली जीत से उनका मनोबल बड़ा हुआ होगा। अठारह साल के गुकेश ने तीसरे दौर में शानदार प्रदर्शन करते हुए इस चैम्पियनशिप की अपनी पहली जीत दर्ज की। क्लासिक टाइम कंट्रोल के तहत खेली जा रही चैम्पियनशिप में अभी 11 मुकाबले बचे हुए हैं। इससे पहले गुकेश को शुरुआती मुकाबले में हार का सामना करना पड़ा था जबकि दूसरा मुकाबला ड्रॉ रहा था। तीन बाजियों के बाद दोनों दोनों खिलाड़ियों के अब एक समान डेढ-डेढ अंक हैं। पहली बाजी में शिकस्त का सामना करने वाले गुकेश ने स्पष्ट रूप से अपने खेल के स्तर को ऊंचा किया और बेहतर तैयारी दिखाई है। लिरेन को तीसरी बाजी में चालों की गणना करने में गलती का खामियाजा उठाना पड़ा। उन्होंने इस दौरान बहुत अधिक समय लिये जिससे उनके लिए चीजें जटिल होती चली गयी। तेरहवीं चाल तक गुकेश के पास एक घंटे की बढ़त थी और उन्होंने सिर्फ चार मिनट खर्च किये थे। लिरेन ने दूसरी तरफ एक घंटा और छह मिनट लगा दिये थे। खेल के पहले 120 मिनट में से 40 चालों तक समय में कोई इजाफा नहीं किया जाता। बीच में मुकाबला जटिल होने से लिरेन पर असर पड़ा और गुकेश ने सटीक चालों से उन पर दबाव बढा दिया। गुकेश ने वही रणनीति अपनाई जो पूर्व विश्व चैम्पियन रूस के व्लादिमीर क्रामनिक ने एक रैपिड मुकाबले में भारत के अर्जुन एरिगेसी के खिलाफ अपनाई थी। एरिगेसी ने हार से बाल बाल बचते हुए वह मुकाबला ड्रॉ कराया था जबकि गुकेश ने लिरेन की सहज गलतियों का फायदा उठाकर जीत दर्ज की। लिरेन के पास आखिरी नौ चाल के लिये सिर्फ दो मिनट और आखिरी छह चाल के लिये सिर्फ दस सेकंड बचे थे । आखिर में उनके पास समय ही बाकी नहीं रह गया । सफ़ेद मोहरों से खेलते हुए जीत दर्ज करने के बाद गुकेश ने प्रेस कंफ्रेंस में कहा,'' बहुत अच्छा लग रहा है। पिछले दो दिन मैं अपने खेल से खुश था। आज मैने और अच्छा खेला। बोर्ड पर अच्छा लग रहा था और मैं अपने प्रतिद्वंद्वी को हराने में कामयाब रहा। इससे पहले शुरुआती मुकाबले में गुकेश को बाजी के बीच में गैर जरूरी ढंग से जटिल बनाना भारी पड़ा जिससे चीन के मौजूदा चैम्पियन को जीत से आगाज करने का मौका दिया। गुकेश ने दूसरी बाजी में अच्छी वापसी करते हुए लिरेन को बराबरी पर रोका। यह मुकाबला केवल 23 चालों तक चला। अठारह वर्षीय गुकेश विश्व खिताब के लिए सबसे कम उम्र के दावेदार हैं और वह विश्वनाथन आनंद के बाद यह खिताब जीतने वाले पहले भारतीय बनने की कोशिश कर रहे हैं। आनंद ने अपने शानदार करियर में पांच बार यह खिताब अपने नाम किया है। इस बात की संभावना अधिक है कि स्कोर बराबर होने के लिरेन आक्रामक की जगह अधिक सतर्क रवैया अपनाएं और तीसरी बाजी में की गयी गलतियों से सबक लेंगे।

कैनबरा में अभ्यास मैच से पहले भारतीय क्रिकेट टीम ने ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री से मुलाकात की

एजेंसी

कैनबरा। ऑस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री एंथोनी अल्बानीज ने 30 नवंबर से प्रधानमंत्री एकादश के खिलाफ दो दिवसीय गुलाबी गेंद (दिन-रात्रि टेस्ट) अभ्यास मैच से पहले गुरुवार को यहां भारतीय क्रिकेट टीम की एक स्वागत समारोह में मेजबानी की। यह मैच मनुका ओवल में खेला जाएगा जो छह दिसंबर से एडिलेड में होने वाले दिन-रात्रि टेस्ट के लिए अच्छी तैयारी के तौर पर काम करेगा। भारत ने पांच मैचों की बॉर्डर-गावस्कर श्रृंखला के पर्थ में खेले गये शुरुआती टेस्ट को 295 रन से जीता था। यह ऑस्ट्रेलिया की धरती पर रनों से टीम की सबसे बड़ी जीत है। प्रधानमंत्री से मुलाकात के दौरान भारत के कप्तान रोहित शर्मा ने प्रोटोकॉल का पालन करते हुए अपने सभी साथियों को उनसे मिलवाया। अल्बानीज ने इस दौरान पर्थ टेस्ट में टीम की जीत के नायक रहे जसप्रीत बुमराह और विराट कोहली की प्रशंसा की। ऑस्ट्रेलिया की संसद में बैठक के बाद प्रधानमंत्री ने एक्स पर लिखा, '' इस सप्ताह मनुका ओवल में प्रधानमंत्री एकादश के सामने एक शानदार भारतीय टीम के खिलाफ बड़ी चुनौती होगी। जैक एडवर्ड्स के नेतृत्व में प्रधानमंत्री एकादश ने भी अल्बानीज से भी मुलाकात की। क्रिकेट कूटनीति भारत-ऑस्ट्रेलिया संबंधों का एक हिस्सा है। अल्बानीज ने पिछले साल भारत की आधिकारिक यात्रा के दौरान अपने भारतीय समकक्ष नरेंद्र मोदी के साथ अहमदाबाद में टेस्ट मैच के दौरान दोनों टीमों के खिलाड़ियों से मुलाकात की थी।

विलियमसन शतक से चूके, न्यूजीलैंड ने इंग्लैंड के खिलाफ आठ विकेट पर 319 रन बनाये

एजेंसी

क्राइस्टचर्च। केन विलियमसन ने चोट से वापस पर 93 रन की शानदार पारी खेली जिससे न्यूजीलैंड ने तीन मैचों की श्रृंखला के शुरुआती टेस्ट के पहले दिन गुरुवार को यहां इंग्लैंड के खिलाफ आठ विकेट पर 319 रन बनाये। दिन का खेल जब 83 ओवर के बाद खत्म हुआ उस समय ग्लेन फिलिप्स 41 और टिम साउथी 10 रन बनाकर खेल रहे थे। साउथी इस श्रृंखला के बाद संन्यास लेने की घोषणा कर चुके हैं। विलियमसन चोट के कारण पिछले महीने भारत में न्यूजीलैंड की 3-0 की ऐतिहासिक जीत के दौरान टीम का हिस्सा नहीं थे। उन्होंने इस साल जून के बाद सिर्फ दो टेस्ट और प्रथम श्रेणी का एक मैच खेला है। न्यूजीलैंड की टीम चाय के विश्राम से पहले तीन विकेट पर 193 रन बनाकर अच्छी स्थिति में लेकिन इंग्लैंड ने दिन के आखिरी सत्र में विलियमसन सहित पांच विकेट झटक कर अच्छी वापसी की। इंग्लैंड के स्पिनर शोएब बशीर ने 20 ओवर में 69 रन देकर चार विकेट लिये। अपने 33वें शतक से सात रन से चूकने वाले विलियमसन ने इस दौरान कप्तान टॉम लाथम (47) के साथ 58, रचिन रविंद्र (34) के साथ 68 और डेरिल मिचेल (34) के साथ 69 रन की साझेदारी के साथ न्यूजीलैंड को मजबूत स्थिति में रखा। विलियमसन को टीम में विल यंग की जगह शामिल गया जो भारत में न्यूजीलैंड की श्रृंखला जीत के नायक रहे थे। यंग बल्लेबाजी के लिए मुश्किल भारतीय परिस्थितियों में 48.8 की औसत से 244 रन बनाकर 'प्लेयर ऑफ द सीरीज' चुने गये थे। न्यूजीलैंड के पूर्व कप्तान ने हालांकि धैर्य और एकाग्रता का शानदार नमूना पेश करते हुए अपनी वापसी को यादगार बनाया। उन्होंने 15वीं गेंद पर खाता खोला और सलामी बल्लेबाज लाथम के साथ साझेदारी के 50 रन पूरे होने पर उनका योगदान सिर्फ सात रन का था। नये गेंद का डट कर सामना करने के बाद उन्होंने पारी के 22वें ओवर में लगातार दो चौके लगाये जिससे न्यूजीलैंड के रनों का शतक पूरा हुआ। टॉस जीतकर गेंदबाजी करने के फैसले के बाद इंग्लैंड के तेज गेंदबाज अनुकूल परिस्थितियों का फायदा नहीं उठा सके। गस एटकिंसन ने पारी के दूसरे ओवर में डेवोन कोन्वे (दो) को चलता किया लेकिन इसके बाद विलियमसन ने एक छोर संभाले रखा जबकि दूसरे छोर से अन्य बल्लेबाजों ने तेजी से रन बनाये। ब्रायडन कार्स ने विकेटकीपर ऑली पोप के हाथों कैच कराकर लाथम को पवेलियन की राह दिखायी। उन्होंने 54 गेंद की आक्रामक पारी में छह चौके लगाये। विलियमसन ने 97 गेंद की पारी में 10 चौके लगाये। वह एटकिंसन का दूसरा शिकार बने। वह जब आउट हुए तब न्यूजीलैंड का स्कोर पांच विकेट पर 227 रन था। टॉम ब्लंडेल (17) और नाथन स्मिथ (तीन) भी इसके बाद जल्दी-जल्दी पवेलियन लौट गये। प्लिप्स और मैट हेनरी (18) ने आठवें विकेट के लिए 46 रन की साझेदारी के साथ न्यूजीलैंड के स्कोर को 300 रन के करीब पहुंचाया।

दक्षिण अफ्रीका दौरे के लिए बाबर आजम और अन्य सीनियर खिलाड़ियों की हो सकती है वापसी

कराची। पूर्व कप्तान बाबर आजम के अलावा फखर जमां, शाहीन शाह अफरीदी और नसीम शाह के दक्षिण अफ्रीका दौरे के लिए राष्ट्रीय एकदिवसीय टीम में वापसी करने की उम्मीद है।

पाकिस्तान के चयनकर्ताओं के दक्षिण अफ्रीका दौरे के लिए जल्द ही टीमों की घोषणा करने की उम्मीद है जहां राष्ट्रीय टीम को तीन एकदिवसीय, तीन टी20 अंतरराष्ट्रीय और दो टेस्ट खेलने हैं। एक सूत्र ने बताया, ''फखर को फिटनेस टेस्ट में असफल होने और घुटने की समस्या के कारण ऑस्ट्रेलिया और जिंबाब्वे में सीमित ओवरों की श्रृंखला के लिए बाहर कर दिया गया था। उन्होंने अपनी फिटनेस पर काम किया है और दक्षिण अफ्रीका में सीमित ओवरों की श्रृंखला के लिए उनके नाम पर विचार किया जा सकता है।

ऑलराउंडर बो वेबस्टर ऑस्ट्रेलियाई टेस्ट टीम में शामिल

एजेंसी

ऐडिलेड। ऑस्ट्रेलिया ने तस्मानिया के बो वेबस्टर को मिच मार्श के कवर के रूप में भारत के खिलाफ आगामी टेस्ट के लिए टीम में जगह दी है। ऑस्ट्रेलिया ने दूसरे टेस्ट मैच के लिए टीम की घोषणा कर दी है। टीम में मध्यम तेज गेंदबाजी के साथ-साथ जरूरत पड़ने पर ऑफ स्पिन भी कराने वाले वेबस्टर को शामिल किया गया हैं। वेबस्टर ने भारत ए के खिलाफ दो अनौपचारिक 'टेस्ट' श्रृंखला में वेबस्टर 72.50 की औसत से 145 रन बनाकर ऑस्ट्रेलिया ए के लिए दूसरे सबसे ज्यादा रन बनाने वाले खिलाड़ी थे। उन्होंने 20 से कम औसत से सात विकेट भी लिए। इसके अलावा उन्होंने हाल में शेफील्ड शील्ड मैच में न्यू साउथ वेल्स के खिलाफ 61 और 49 का स्कोर बनाने के साथ-साथ पांच विकेट भी लिए। वह ऑस्ट्रेलिया के सर्वश्रेष्ठ स्लिप क्षेत्ररक्षकों में से भी एक हैं। इससे पहले ऑस्ट्रेलिया के मुख्य कोच और चयनकर्ता एंड्रयू मक्डॉनल्ड ने ऐडिलेड टेस्ट के लिए बिना किसी बदलाव की टीम घोषणा करते हुए यह भी कहा था कि ऑलराउंडर मिचेल मार्श की फिटनेस पर थोड़ा संदेह है। मार्श के फिटनेस के बारे में ऑस्ट्रेलिया के कप्तान पैट कमिंस ने भी चिंता जताई थी। हालांकि 13-सदस्यीय दल में जॉश इंग्लिस के रूप में अतिरिक्त बल्लेबाज हैं, लेकिन अपनी ऑलराउंड क्षमताओं के कारण वेबस्टर टेस्ट पर्दापण के दावेदार बन गए हैं। 30 वर्षीय वेबस्टर ने अपने करियर में प्रथम श्रेणी करियर में 5000 से अधिक रन और 150 विकेट लिए हैं। दूसरा टेस्ट ऐडिलेड में छह दिसंबर से शुरू होगा। पर्थ टेस्ट जीतकर भारतीय टीम ने पांच मैचों की टेस्ट सीरीज़ में 1-0 की बढ़त बना ली है। ऐडिलेड टेस्ट के लिए ऑस्ट्रेलियाई टीम : पैट कमिंस (कप्तान), स्कॉट बोलंड, ऐलेक्स कैरी, जॉश हेजलवुड, ट्रैविस हेड, जॉश इंग्लिस, उस्मान ख्वाजा, मार्नस लाबुशेन, नेथन लायन, मिचेल मार्श, नेथन मैकस्वीनी, स्टीव स्मिथ, मिचेल स्टार्क और बो वेबस्टर।

पाकिस्तान के लिए भारत में खेलना संभव नहीं है, क्योंकि वे यहां अपनी टीम नहीं भेज रहे हैं: नकवी

एजेंसी

लाहौर। पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के अध्यक्ष मोहसिन नकवी ने भारतीय टीम के पाकिस्तान यात्रा करने से इनकार करने का हवाला देते हुए कहा कि भविष्य में टूर्नामेंट के लिए पाकिस्तान के भारत जाने की संभावना नहीं होगी। चैंपियंस ट्रॉफी का भविष्य अधर में लटका है क्योंकि बीसीसीआई ने आईसीसी को टीम पाकिस्तान भेजने में असमर्थता जताई है और वैश्विक संस्था ने अंतिम निर्णय लेने के लिए शुक्रवार को अपने कार्यकारी बोर्ड के सदस्यों की वर्चुअल बैठक बुलाई है। नकवी ने गद्दाफी स्टेडियम में कल रात निर्माण कार्य का निरीक्षण करने के बाद कहा, ''यह संभव ही नहीं है कि पाकिस्तान भारत में जाकर सभी टूर्नामेंट खेलता रहे और भारतीय अधिकारी अपनी टीम पाकिस्तान में खेलने के लिए भेजने को तैयार नहीं हों। हम ऐसी विषम स्थिति नहीं होने दे सकते। नकवी ने चैंपियंस ट्रॉफी के लिए 'हाइब्रिड' मॉडल के बारे में पूछे जाने पर हालांकि नरम रवैया अपनाया। उन्होंने इससे पहले उन्होंने कहा था कि पीसीबी इस तरह के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं करेगा। उन्होंने कहा, ''मैं केवल इतना आश्वासन दे सकता हूं कि बैठक में जो भी होगा, हम अच्छी खबर और निर्णय लेकर आएंगे, जिसे हमारे लोग स्वीकार करेंगे। नकवी ने उम्मीद जताई कि पांच दिसंबर को आईसीसी के चेयरमैन का पद संभालने वाले जय शाह विश्व क्रिकेट और सभी सदस्य बोर्डों के हित में निर्णय लेंगे। उन्होंने कहा, जय शाह दिसंबर में कार्यभार संभालेंगे और मुझे यकीन है कि जब वह बीसीसीआई से आईसीसी में जाएंगे तो वह आईसीसी के लाभ के बारे में सोचेंगे और उन्हें यही करना चाहिए।

अबू धाबी की आईएचसी, श्रीलंका बंदरगाह प्राधिकरण तंजानिया ने अदाणी समूह का किया समर्थन

एजेंसी

नयी दिल्ली। अबू धाबी की इंटरनेशनल होल्डिंग कंपनी (आईएचसी) ने अदाणी समूह को अपना समर्थन दोहराते हुए कहा कि समूह के संस्थापक चेयरमैन गौतम अदाणी पर अमेरिका में अभियोग के बावजूद समूह में निवेश को लेकर उसका नजरिया बदला नहीं है। इस बीच, श्रीलंका बंदरगाह प्राधिकरण और तंजानिया सरकार ने भी अदाणी समूह को पूरा समर्थन देने की बात कही है।

अदाणी समूह के प्रमुख विदेशी निवेशकों में से एक आईएचसी ने एक बयान में कहा कि अदाणी समूह के साथ हमारी साझेदारी हरित ऊर्जा और टिकाऊ क्षेत्रों में उनके योगदान में हमारे विश्वास को दर्शाती है। अईएचसी 100 अरब अमेरिकी डॉलर के करीब परिसंपत्तियों का प्रबंधन करने वाली सबसे बड़े सरकारी कोष में से एक है। बयान में कहा गया, '' हमारे सभी निवेशों की तरह हमारा दल प्रासंगिक जानकारी और घटनाक्रम का मूल्यांकन करना जारी रखे हुए है। इस समय इन निवेशों पर हमारा नजरिया यथावत है। आईएचसी ने अप्रैल 2022 में समूह की नवीकरणीय ऊर्जा कंपनी अदाणी ग्रीन एनर्जी लि. (एजीईएल) और बिजली कंपनी अदाणी ट्रांसमिशन में करीब 50 करोड़ अमेरिकी डॉलर का निवेश किया था। उसने समूह की प्रमुख कंपनी अदाणी एंटरप्राइजेज में एक अरब डॉलर का निवेश किया था। हालांकि बाद में, उसने एजीईएल में अपनी 1.26 प्रतिशत हिस्सेदारी और एटीएल (जिसे अब अदाणी एनर्जी सॉल्यूशंस लिमिटेड कहा जाता है) में 1.41 प्रतिशत हिस्सेदारी बेच दी थी लेकिन अदाणी एंटरप्राइजेज लिमिटेड में अपनी हिस्सेदारी बढ़ाकर पांच प्रतिशत की थी। इस बीच, अन्य अंतरराष्ट्रीय भागीदारों ने भी अदाणी समूह के प्रति अपना समर्थन दोहराया है।

सर्राफा बाजार में चमका सोना, चांदी में कोई बदलाव नहीं

एजेंसी

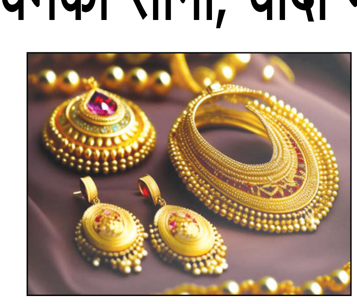

नई दिल्ली। लगातार दो दिनों की बड़ी गिरावट के बाद घरेलू सर्राफा बाजार में आज सोने की कीमत में तेजी का रुख है। देश के अलग-अलग सर्राफा बाजारों में सोने की कीमत में 250 रुपये से लेकर 270 रुपये प्रति 10 ग्राम तक की मजबूती दर्ज की गई है। इस तेजी के कारण देश के ज्यादातर सर्राफा बाजारों में 24 कैरेट सोना आज 77,660 रुपये से लेकर 77,510 रुपये प्रति 10 ग्राम के दायरे में कारोबार कर रहा है। इसी तरह 22 कैरेट सोना 71,200 रुपये से लेकर 71,050 रुपये प्रति 10 ग्राम के बीच बना हुआ है। चांदी के भाव में आज कोई बदलाव नहीं हुआ है, जिसके कारण दिल्ली सर्राफा बाजार में इसकी कीमत 89,500 रुपये प्रति किलोग्राम के स्तर पर बनी हुई है। देश की राजधानी दिल्ली में 24 कैरेट सोना आज 77,660 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है, जबकि 22 कैरेट सोने की कीमत 71,200 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। वहीं, देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में 24 कैरेट सोना 77,510 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 70,050 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह अहमदाबाद में 24 कैरेट सोने की रिटेल कीमत 77,560 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोने की कीमत 71,100 रुपये प्रति 10 ग्राम दर्ज की गई है। इन प्रमुख शहरों के अलावा चेन्नई में 24 कैरेट सोना आज 77,510 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर और 22 कैरेट सोना 70,050 रुपये प्रति 10 ग्राम की कीमत पर बिक रहा है। इसी तरह कोलकाता में भी 24 कैरेट सोना 77,510 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 70,050 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। लखनऊ के सर्राफा बाजार में 24 कैरेट सोना आज 77,660 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर और 22 कैरेट सोना 71,200 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। वहीं, पटना में 24 कैरेट सोने की कीमत 77,560 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गई है, जबकि 22 कैरेट सोना 71,100 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। इसी तरह जयपुर में 24 कैरेट सोना 77,660 रुपये प्रति 10 ग्राम और 22 कैरेट सोना 71,200 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है। देश के अन्य राज्यों की तरह कर्नाटक, तेलंगाना और ओडिशा के सर्राफा बाजार में भी तेजी आने के कारण आज सोना महंगा हुआ है। इन तीनों राज्यों की राजधानियों बेंगलुरु, हैदराबाद और भुवनेश्वर में 24 कैरेट सोना आज 77,510 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर कारोबार कर रहा है। इसी तरह इन तीनों शहरों के सर्राफा बाजारों में 22 कैरेट सोना 70,050 रुपये प्रति 10 ग्राम के स्तर पर बिक रहा है।

संक्षिप्त समाचार

हेली मैथ्यूज सीमित ओवरों के भारत दौरे पर वेस्टइंडीज महिला टीम की कप्तानी करेंगी

सेंट जोंस (एंटीगा)। ऑलराउंडर हेली मैथ्यूज अगले महीने भारत दौरे के दौरान 15 सदस्यीय वेस्टइंडीज महिला टीम की अगुवाई करेंगी। वेस्टइंडीज की महिला टीम इस दौरे पर तीन टी20 अंतरराष्ट्रीय और तीन वनडे मैचों की श्रृंखला खेलेगी। टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला 15 दिसंबर को नवी मुंबई के डीवाई पाटिल स्पोर्ट्स अकादमी में शुरू होगी और इसके बाद 22 दिसंबर से वडोदरा के वडोदरा अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में एकदिवसीय श्रृंखला खेली जाएगी। इस एकदिवसीय श्रृंखला से दोनों टीमों के पास आईसीसी महिला चैंपियनशिप के महत्वपूर्ण अंक हासिल करने का मौका होगा। वेस्टइंडीज की महिला टीम ने 2016 में सीमित ओवरों की श्रृंखला के लिए भारत का दौरा किया था। वेस्टइंडीज ने तक टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला को 3-0 से अपने नाम किया था जबकि भारत ने इसी अंतर से एकदिवसीय श्रृंखला को जीता था। टीम की दिग्गज खिलाड़ी स्टेफनी टेलर फिलहाल चोट से उबर रही हैं और वह इस दौरे से बाहर रहेंगी। भारत दौरे के लिए वेस्टइंडीज महिला टीमः हेली मैथ्यूज (कप्तान), शेमाइन कैंपबेल (उप-कप्तान), आलिया एलेने, शमिलिया कॉनेल, नेरिसा क्राफ्टन, डिएंड्रा डॉटिन, एफी फ्लेचर, शबिका गजनबी, चिनेले हेनरी, जाएदा जेम्स, कियाना जोसेफ, मैंडी मुंगसर, अश्मिनि मुनिसर, करिश्मा रामहरैक, राशदा विलियम्स।

मेल्विन मोसेस बोरोसिल रिन्यूएबल्स के सीईओ नियुक्त

नयी दिल्ली। बोरोसिल रिन्यूएबल्स के निदेशक मंडल ने मेल्विन मोसेस को कंपनी का मुख्य कार्यपालक अधिकारी (सीईओ) नियुक्त किया है। यह नियुक्ति दो दिसंबर, 2024 से प्रभावी होगी। बोरोसिल रिन्यूएबल्स ने बृहस्पतिवार को शेयर बाजार को दी सूचना में कहा कि मोसेस इससे पहले यूपीएल कॉरपोरेशन में कार्यरत थे। कंपनी ने कहा कि वह इससे पहले मेरिसेंट, जेनेका और सिंजेन्टा, पेप्सिको इंडिया होल्डिंग्स से भी जुड़े रहे हैं। शेयर बाजार को दी सूचना के अनुसार, निदेशक मंडल ने आज यानी 28 नवंबर, 2024 को आयोजित बैठक में मेल्विन मोसेस को कंपनी के मुख्य कार्यपालक अधिकारी (मुख्य प्रबंधकीय कार्मिक) के रूप में नियुक्त करने को मंजूरी दे दी है, जो दो दिसंबर, 2024 से प्रभावी होगा। मोसेस एके कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग से मेकेनिकल इंजीनियरिंग स्नातक हैं और उन्होंने हार्वर्ड बिजनेस स्कूल में सीनियर एग्जीक्यूटिव लीडरशिप प्रोग्राम भी पूरा किया है।

एनएचपीसी प्रमुख को एसजेवीएनएल के चेयरमैन प्रबंधन निदेशक का अतिरिक्त कार्यभार

नयी दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की पनबिजली कंपनी एनएचपीसी लिमिटेड के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक (सीएमडी) राज कुमार चौधरी को बिजली उत्पादन कंपनी एसजेवीएन लिमिटेड के सीएमडी पद का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है। सार्वजनिक क्षेत्र की बिजली कंपनी ने बृहस्पतिवार को एक बयान में कहा कि चौधरी वर्तमान में एनएचपीसी के चेयरमैन और प्रबंध निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। एक अनुभवी पेशेवर चौधरी के पास बिजली क्षेत्र और जलविद्युत क्षेत्र के विकास में 35 साल से अधिक का अनुभव है। चौधरी बीआईटी सिंदरी से सिविल इंजीनियरिंग में स्नातक हैं और उन्होंने प्रबंधन में 'एडवांस डिप्लोमा' किया है। वह 1989 में झारखंड के कोयल कारो जलविद्युत परियोजना से जुड़कर एनएचपीसी में शामिल हुए थे।

बीईएमएल को चेन्नई मेट्रो से मिला 3,658 करोड़ रुपये का अनुबंध

नयी दिल्ली। सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनी बीईएमएल ने बृहस्पतिवार को कहा कि उसे चेन्नई मेट्रो रेल लिमिटेड से 3,658 करोड़ रुपये का एक अनुबंध मिला है। बीईएमएल इस अनुबंध के तहत चेन्नई मेट्रो को 210 मेट्रो कोच से लैस 70 ट्रेन सेट की आपूर्ति करेगी। इन मेट्रो ट्रेन सेट का इस्तेमाल चालक-रहित मेट्रो संचालन में किया जाएगा। रक्षा मंत्रालय के तहत संचालित होने वाली बीईएमएल ने एक बयान में कहा कि ये मेट्रो ट्रेन चेन्नई में तीन प्रमुख मेट्रो गलियारों- माधवरम से सिपकोट, लाइटहाउस से पूनमल्ली और माधवरम से शोलिंगनल्लूर पर संचालित की जाएंगी। चेन्नई में कुल मेट्रो नेटवर्क 118.9 किलोमीटर तक फैला है, जिसमें 76.3 किलोमीटर का खंड एलिवेटेड है जबकि 42.6 किलोमीटर भूमिगत ट्रैक शामिल हैं। इस अनुबंध के तहत पहले ट्रेन सेट की आपूर्ति जनवरी, 2027 में की जाएगी जबकि अंतिम ट्रेन सेट अप्रैल, 2029 तक मिलने की उम्मीद है।

बदलते परिदृश्य में हर स्थिति से निपटने के लिए तैयार रहे सेना : द्रौपदी मुर्मु

एजेंसी

नयी दिल्ली। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने कहा है कि तेजी से बदलती भू-राजनीतिक स्थिति में सेनाओं को किसी भी स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार रहने की जरूरत है।

श्रीमती मुर्मु ने गुरूवार को तमिलनाडु के वेलिंगटन स्थित रक्षा सेवा स्टाफ कॉलेज के छात्र अधिकारियों और शिक्षकों को संबोधित किया। राष्ट्रपति ने इस अवसर पर कहा कि देश विकास के पथ पर आगे बढ रहा है और दुनिया रक्षा सहित विभिन्न क्षेत्रों में हमारे विकास को स्वीकार कर रही है। भारत भविष्य की चुनौतियों का सामना करने के उद्देश्य से सशस्त्र बलों को तैयार रखने के लिए स्वदेशीकरण और आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ रहा है। उन्होंने कहा कि भारत एक प्रमुख रक्षा विनिर्माण

केंद्र के रूप में विकसित हो रहा है और एक विश्वसनीय रक्षा भागीदार और बड़ा रक्षा निर्यातक बनने की ओर अग्रसर है। राष्ट्रपति ने कहा कि तेजी से बदलते भू-राजनीतिक माहौल में हमें किसी भी स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार रहने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि हमें न केवल अपने राष्ट्रीय हितों को सुरक्षित रखना है बल्कि साइबर युद्ध और आतंकवाद जैसी नई राष्ट्रीय सुरक्षा चुनौतियों के लिए भी तैयार रहना है। जलवायु परिवर्तन का मुद्दा नए आयाम हासिल कर रहा है जिसे समझने और प्रबंधित करने की जरूरत है।

गहन शोध पर आधारित अद्यतन ज्ञान और अत्याधुनिक तकनीकों को लागू करने की जरूरत है। श्रीमती मुर्मु ने कहा कि रक्षा सेवा स्टाफ कॉलेज ने भारत और मित्र देशों के सशस्त्र बलों के अधिकारियों और नागरिक अधिकारियों को प्रशिक्षित करने तथा शिक्षित करने में सराहनीय योगदान दिया है। पिछले सात दशकों में इसने मध्यम स्तर के अधिकारियों को पेशेवर रूप से तैयार करने में प्रमुख भूमिका निभाई है। राष्ट्रपति ने कहा कि भारतीय सशस्त्र बलों का सभी सम्मान करते हैं। सशस्त्र बल देश की सीमाओं और क्षेत्रीय अखंडता की रक्षा करने में सबसे आगे हैं। राष्ट्रीय हितों की निरंतर रक्षा करने के लिए राष्ट्र को रक्षा बलों पर गर्व है। श्रीमती मुर्मु ने कहा कि यह अच्छी बात है कि महिला अधिकारी अब तीनों सेनाओं में विभिन्न इकाइयों की कमान संभाल रही हैं।

उन्होंने कहा कि सभी क्षेत्रों में महिलाओं की बढ़ती ताकत और भूमिका सभी के लिए, विशेषकर युवा लड़कियों के लिए उत्साहजनक और प्रेरणादायक है। उन्होंने सशस्त्र बलों में अधिक से अधिक महिलाओं के शामिल होने की उम्मीद जताई, जहां वे असाधारण क्षमताओं का प्रदर्शन कर सकेंगी और अज्ञात क्षेत्रों में नई जमीन हासिल कर सकेंगी। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि यह पाठ्यक्रम छात्र अधिकारियों को जिम्मेदारियों के लिए तैयार करेगा तथा ऐसे रणनीतिकार बनाएगा जो जटिल परिस्थितियों से प्रभावी तरीके से निपट सकें।

देश की सुरक्षा के लिए मजबूत और आत्मनिर्भर रक्षा क्षेत्र जरूरी: जनरल चौहान

एजेंसी

नयी दिल्ली। प्रमुख रक्षा अध्यक्ष जनरल अनिल चौहान ने आज जोर देकर कहा कि भारत प्रगति तथा समृद्धि के पथ पर आगे बढ़ रहा है और देश के सुरक्षा परिदृश्य को एक मजबूत और आत्मनिर्भर रक्षा क्षेत्र की आवश्यकता है। प्रमुख रक्षा अध्यक्ष गुरूवार को यहां सेंटर फॉर जॉइंट वारफ़ेयर स्टडीज और इंडियन मिलिट्री रिव्यू द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित रक्षा साझेदारी दिवस के उद्घाटन सत्र को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर सचिव (रक्षा उत्पादन) संजीव कुमार भी उपस्थित थे। उन्होंने कहा, आज भारत वैश्विक आशावाद के केंद्र में है। हम दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गए हैं। जैसे-जैसे हम प्रगति और समृद्धि के पथ पर आगे बढ़ रहे हैं, हमारा मानना है कि आत्मनिर्भरता और स्वदेशी रक्षा क्षमताएं स्थायी शांति की नींव हैं। भारत के सुरक्षा परिदृश्य को एक मजबूत और आत्मनिर्भर रक्षा क्षेत्र की आवश्यकता है। जनरल अनिल चौहान ने इस बात पर जोर दिया कि सभी हितधारकों को जोड़ने वाला एक सामान्य सूत्र राष्ट्रीय हित है। उन्होंने कहा कि अगर राष्ट्रीय हित का बंधन सभी तत्वों को एक साथ नहीं बांधता है तो स्वदेशीकरण की अवधारणा पूरी नहीं होगी। रक्षा क्षेत्र में सरकार द्वारा किए गए विभिन्न सुधारों और पहलों का उल्लेख करते हुए जनरल चौहान ने कहा, '' भारत ने सुधारों के माध्यम से अपने रक्षा उद्योग को खोल दिया है। इसने इसे निजी उद्योग, संयुक्त उपक्रम, एफडीआई आदि के लिए खोल दिया है। लेकिन, हमें अभी भी अपने दिमाग को पूरी तरह से खोलना है। वास्तव में सफल होने के लिए, हमें '4आई' को आत्मसात करना होगा और अभिनव, आविष्कार, स्वदेशी और कल्पनाशील बनना होगा। उन्होंने कहा कि रक्षा विनिर्माण में निवेश का फायदा मिलने में समय लगता है, और रक्षा अनुसंधान और विकास में समय अंतराल और भी अधिक लंबा है साथ ही परिणाम भी अनिश्चित हो सकते हैं। उन्होंने अंतरिक्ष, एआई, क्वांटम और स्वायत्त प्रणालियों जैसी उभरती प्रौद्योगिकियों में रक्षा नीतियों के निर्माण का भी सुझाव दिया जो उद्योग को दिशा देते है।

तीन सौ कानूनों में आपराधिक सजा के प्रावधान हटाने का विचार: गोयल

एजेंसी

नयी दिल्ली। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने मंत्री ने गुरुवार को कहा कि जन विश्वास 2.0 विधेयक के जरिये सरकार 300 से अधिक कानूनों को आपराधिक दंड संबंधी प्रावधानों से मुक्त करने के लिये सक्रिय रूप से विचार कर रही है।

श्री गोयल यहां उद्योग और आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (डीपीआईआईटी) ऽ भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) के कारोबार की सहजता के विषय पर दूसरे राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन कर रहे थे। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि कि कानूनी खामियों का फायदा उठाकर मुनाफा कमाने की प्रवृत्ति अर्थव्यवस्था और व्यापार करने की आसानी के लिये हानिकारक है। वाणिज्य मंत्री ने इस अवसर पर सीआईआई ईज ऑफ डूइंग बिजनेस (ईओडीबी) और विनियामक मामलों के पोर्टल का शुभारंभ किया। यह पोर्टल पोर्टल सरकार और सीआईआई दोनों द्वारा व्यापार करने में आसानी पर प्रमुख पहलों की स्थिति और अपडेट प्रदान करने का प्रयास है। श्री गोयल ने जन विश्वास 2.0 विधेयक के बारे में सीआईआई से कहा कि वह अपने सदस्यों को कानून की भावना का सम्मान करने के लिए जागरूक करने का आग्रह किया। वाणिज्य मंत्री ने कहा कि सरकार की राष्ट्रीय एकल खिड़की प्रणाली (एनएसडब्लूएस) मार्गदर्शिका को उद्योग जगत की ओर से सुझाव मिलने चाहिये। उन्होंने कहा कि जब तक उद्योग राष्ट्रीय एकल खिड़की प्रणाली से नहीं जुड़ेगा, इसके माध्यम से लाइसेंस प्राप्त नहीं करेगा और इसे बेहतर बनाने के लिए केंद्र और औद्योगिक भूमि बैंक को इनपुट भी नहीं देगा, तब तक यह पहल सफल नहीं होगी। श्री गोयल ने बताया कि राज्य और केंद्र स्तर के सरकारी पोर्टलों में तकनीकी उन्नयन की आवश्यकता है।

मोदी के तीसरे कार्यकाल में 60 हजार से अधिक सरकारी नौकरी के नियुक्ति पत्र जारी: मांडविया

एजेंसी

नयी दिल्ली। केंद्रीय श्रम एवं रोजगार मंत्री मनसुख मांडविया ने कंाग्रेस के बेकाबू बेरोजगारी के आरोप को खारिज करते हुए गुरुवार को कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के तीसरे कार्यकाल में अभी तक 60 हजार से अधिक युवाओं को सरकारी नौकरी के नियुक्ति पत्र जारी किये जा चुके हैं।

श्री मांडविया ने यहां संवाददाताओं से कहा कि मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल में रोजगार के नये अवसर सृजित करने पर विशेष बल दिया जा रहा है। सरकार के गठन के बाद से नवंबर के पहले सप्ताह तक 60 हजार से अधिक युवाओं को सरकारी नौकरी मिली है। युवाओं को ये नौकरियां केंद्रीय मंत्रालयों और विभागों में उपलब्ध करायी गयी हैं। उन्होंने कहा कि

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) और कर्मचारी राज्य बीमा निगम (ईएसआईसी) में सरकारी नौकरियों की नियुक्तियों 4300 युवाओं पर भर्ती किया गया है। इसके अलावा 5000 से अधिक रिक्तियों पर भर्ती प्रक्रिया चल रही है। उन्होंने विभिन्न आंकड़ों और अध्ययनों के हवाले से कहा कि सरकार बुनियादी ढ़ांचा क्षेत्र में भारी निवेश कर रही है जिससे रोजगार के अवसर पैदा हो रहे हैं। उन्होंने एक अध्ययन के हवाले से कहा कि बुनियादी ढ़ांचा क्षेत्र में एक करोड़ रुपए का निवेश होने से लगभग छह लोगों को रोजगार के अवसर मिलते हैं। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि वित्त वर्ष 2024-25 के आम बजट में रोजगार सृजन के लिए दो लाख करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है।

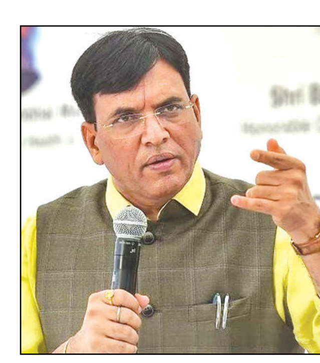

रोजगार से जुड़ी प्रोत्साहन (ईएलआई) योजना के अंतर्गत 3.39 करोड़ लोग लाभार्थी हैं।

सरकार के भविष्य की रोजगार आवश्यकताओं को देखते हुए एक करोड़ युवाओं को शीर्ष कंपनियों में इंटर्नशिप देने का प्रावधान किया। इनको युवाओं को भत्ते और एकमुश्त सहायता देने का प्रावधान किया गया है। श्री मांडविया ने कहा कि आगामी वर्षों में 1,000 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों में 20 लाख युवाओं को कौशल प्रदान किया जाएगा। सरकार ने 4.19 लाख करोड़ रुपये की लागत वाली प्रमुख बुनियादी ढांचा परियोजनाओं को मंजूरी दी है जिससे 1.26 करोड़ से अधिक नौकरियों का सृजन होने का अनुमान है। उन्होंने कहा कि महाराष्ट्र के वधावन में 76,220 करोड़ रुपये के परिव्यय से प्रमुख बंदरगाह का विकास किया जा रहा है जिससे 12 लाख नौकरियों का सृजन होने का अनुमान है। इसके अलावा 12 औद्योगिक स्मार्ट शहरों से 40 लाख नौकरियों का सृजन होगा। केंद्रीय मंत्री ने कहा कि गुजरात में राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर का विकास किया जा रहा है जिससे 22,000 नौकरियों का सृजन होगा। चेन्नई मेट्रो रेल परियोजना चरण- द्वितीय के निर्माण के दौरान 9000 कुशल और 7500 अर्ध-कुशल रोजगार का सृजित होगा। कृषि अवसंरचना निधि के विस्तार से जिससे 8.7 लाख रोजगार सृजित होने का अनुमान है। राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र के सहयोग से 23 लाख प्रत्यक्ष रोजगार सृजित होंगे। उन्होंने कहा कि पीएम इलेक्ट्रिक ड्राइव इन इनोवेटिव व्हीकल एन्हांस (पीएम-ड्राइव) योजना से रोजगार सृजन के क्षेत्र में भारी बदलाव होगा। एक अध्ययन के हवाले से उन्होंने कहा कि प्रत्येक भारी-भरकम वाहन पर कम से कम 13 व्यक्तियों को रोजगार मिलता है। प्रत्येक तिपहिया वाहन पर चार व्यक्ति रोजगार पाते हैं। प्रत्येक दोपहिया वाहन के लिए एक व्यक्ति को नौकरी मिलती है।

रेलवे नेटवर्क में कुल 136 वंदे भारत ट्रेन सेवाएं परिचालन में : सरकार

एजेंसी

नयी दिल्ली। सरकार ने बुधवार को लोकसभा को बताया कि 21 नवंबर तक 136 वंदे भारत ट्रेन सेवाएं बेहतर सुरक्षा और आधुनिक यात्री सुविधाओं के साथ चालू थीं।

रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने एक प्रश्न के लिखित उत्तर में, कहा कि इन सुरक्षा विशेषताओं और आधुनिक यात्री सुविधाओं में स्वचालित ट्रेन सुरक्षा प्रणाली 'कवच', तेज गति, पूरी तरह से सीलबंद गैंगवे, स्वचालित प्लग डोर, बेहतर आरामदेह सवारी, हॉट केस के प्रावधान के साथ मिनी पेंट्री, बोतल कूलर, डीप फ्रीजर और गर्म पानी बॉयलर आदि हैं। मंत्री विभिन्न

राजनीतिक दलों के नौ सांसदों द्वारा उठाए गए सवालों का जवाब दे रहे थे, जो वंदे भारत एक्सप्रेस शुरू करने के पीछे के तर्क, उनकी व्यस्तता, सुविधाएं, यात्री प्रतिक्रिया और महाराष्ट्र के साथ-साथ नई दिल्ली-काठगोदाम मार्ग पर सेवाओं के बारे में जानना चाहते थे। वैष्णव ने कहा, ''वर्तमान में, 22 वंदे भारत सेवाएं, मूल या समाप्ति के आधार पर, महाराष्ट्र राज्य में स्थित स्टेशनों की जरूरतों को पूरा कर रही हैं। उन्होंने कहा, ''...दिल्ली-काठगोदाम सेक्टर में तीन जोड़ी मेल/एक्सप्रेस सेवाएं संचालित होती हैं, जिनमें 12039/40 काठगोदाम-नई दिल्ली शताब्दी एक्सप्रेस भी शामिल है। वैष्णव ने कहा कि वंदे भारत सेवाओं को मार्ग में सेक्शन की अधिकतम स्वीकार्य गति से संचालित किया जा रहा है ताकि गति क्षमता का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित किया जा सके और गति को कम करने का कोई प्रस्ताव नहीं है।

प्रियंका संसद में बनेंगी महिलाओं की सशक्त आवाज : खरगे

नयी दिल्ली। कंाग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने पार्टी नेता प्रियंका गांधी वाड्रा के लोकसभा की सदस्यता की शपथ लेने पर खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि उन्हें पूरा भरोसा है कि श्रीमती गांधी संसद में देश की जनता और खासकर महिलाओं की सशक्त आवाज बनेंगी।

श्री खरगे ने कहा मुझे पूरा विश्वास है कि श्रीमती प्रियंका गांधी वाड्रा संसद में देश के लोगों की, ख़ासकर महिलाओं की सशक्त आवाज बनेंगी। उनका कुशल नेतृत्व, करुणा, साहस, शालीनता और दृढ़ संकल्प तथा संविधान के सिद्धांतों के प्रति उनकी दृढ़ प्रतिबद्धता देश की जनता को लाभ पहुँचाएगी। गौरतलब है कि श्रीमती वाड्रा केरल की वायनाड संसदीय सीट पर हुए उपचुनाव में भारी मतों से जीतकर आई हैं और वह पहली बार संसद सदस्य बनीं हैं।

भारत- रूस ने सैन्य सहयोग और रणनीतिक साझेदारी बढ़ाने पर चर्चा की

एजेंसी

नयी दिल्ली। भारत और रूस के बीच सैन्य तकनीकी सहयोग पर चौथी बैठक में दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी को बढाने के बारे में गहन चर्चा की गयी।

रक्षा मंत्रालय ने गुरूवार को बताया कि भारत-रूस अंतर सरकारी आयोग के तहत सैन्य सहयोग पर कार्य समूह की चौथी बैठक रूस के मॉस्को में सफलतापूर्वक संपन्न हुई। यह बैठक दोनों देशों के बीच दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी को निरंतरता देने में अत्यंत महत्वपूर्ण साबित हुई है।

बैठक की सह-अध्यक्षता भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे एकीकृत रक्षा स्टाफ के प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल जे पी मैथ्यू और रूसी सशस्त्र बलों के जनरल स्टाफ के मुख्य परिचालन निदेशालय के उप-प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल डाइलेव्स्की इगोर निकोलाविच ने की। कार्य समूह ने रणनीतिक हित के क्षेत्रों में निरंतर रूप से ज्ञान-साझा करने और सहयोग के महत्व पर बल दिया। दोनों सेनाओं के बीच परिचालन तालमेल को और मजबूत करने के लिए संयुक्त अभ्यासों का विस्तार करने पर भी सहमति व्यक्त की गई। दोनों देशों की तीनों सेनाओं ने कई संयुक्त अभ्यास किए हैं। 'इंद्र', 'एविया इंद्र' और 'इंद्र नेवी' जैसे अभ्यासों ने सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने, संयुक्त रणनीति अभ्यास और प्रक्रियाओं में सुधार लाने तथा आपसी समझ को गहरा करने के लिए महत्वपूर्ण मंच के रूप में काम किया है। भारत-रूस सामरिक साझेदारी से जुड़े घोषणापत्र पर वर्ष 2000 में हस्ताक्षर किए गए थे जिसे वर्ष 2010 में विशेष और विशेषाधिकार प्राप्त सामरिक साझेदारी के स्तर तक बढ़ा दिया गया था। यह कार्य समूह, भारत-रूस रक्षा सहयोग के लिए एक महत्वपूर्ण मंच है जो मौजूदा सैन्य संलग्नताओं का आकलन करने और उभरती सुरक्षा चुनौतियों से निपटने के लिए सहयोग के नए क्षेत्रों की पहचान करने के लिए एक मंच के रूप में कार्य करता है।

पेज एक का शेष

स्कूल संबंधी उपायों...

रिपोर्ट से पता चलता है कि अधिकारी 'जीआरएपी-चार' के तहत पाबंदियों को अक्षरशः लागू करने में ''पूरी तरह विफल'' रहे हैं। पीठ ने कहा, ''हम यह स्पष्ट करना चाहते हैं कि स्कूलों के संबंध में संशोधित उपायों को छोड़कर 'जीआरएपी-चार' के तहत सभी पाबंदियां सोमवार तक लागू रहेंगी। इस बीच, वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग एक बैठक आयोजित करेगा और 'जीआरएपी-चार' से 'जीआरएपी-तीन' या 'जीआरएपी-दो' की ओर जाने के बारे में सुझाव देगा। हम यह भी स्पष्ट करना चाहते हैं कि यह आवश्यक नहीं है कि 'जीआरएपी-चार' में दिए गए सभी उपाय लागू किए जाएं। इसने कहा कि 'जीआरएपी-चार' की पाबंदियों को सुनिश्चित करने में 'गंभीर चूक' करने वाले अधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई में तेजी लानी चाहिए। पीठ ने पंजाब से संबंधित उस खबर का संज्ञान लिया, जिसमें एक भूमि अभिलेख अधिकारी और संगरूर ब्लॉक पटवारी यूनियन के अध्यक्ष ने खुले तौर पर किसानों को उपग्रह की नजर से बचने के लिए शाम चार बजे के बाद पराली जलाने की सलाह देने की बात स्वीकार की थी। पीठ ने कहा, ''हम इस खबर की सत्यता के बारे में नहीं जानते लेकिन यदि यह सही है तो यह बहुत गंभीर बात है। (पंजाब) राज्य के अधिकारी किसी भी किसान को इस तथ्य का फायदा उठाने की अनुमति नहीं दे सकते कि वर्तमान में दिन के कुछ घंटों के दौरान होने वाली गतिविधियों की निगरानी की जा रही है। पंजाब सरकार को तुरंत सभी अधिकारियों को निर्देश जारी करना चाहिए कि वे ऐसी किसी भी गतिविधि में शामिल न हों। 'जीआरएपी-चार' पाबंदियां विशेष रूप से राष्ट्रीय राजधानी में गैर-आवश्यक सामान ले जाने वाले ट्रकों के प्रवेश को प्रतिबंधित करने से संबंधित हैं।

निजीकरण के लिए...

सेवानिवृत्ति का लाभ ले लें। निजी क्षेत्र के साथ साझेदारी की जाएगी न कि निजीकरण। व्यवस्था में चेयरमैन शासन का ही कोई वरिष्ठ अधिकारी होगा, जिससे कर्मचारियों, किसानों तथा उपभोक्ताओं का हित सुरक्षित रहे। यदि अधिकारी, कर्मचारी रिफार्म प्रक्रिया में सहयोग करते हैं तो प्रदेश सरकार नई कंपनी में उनको हिस्सेदारी देने पर विचार करेगी। रिफार्म ऐसे क्षेत्र में ही होगा जहां पर स्थितियां अच्छी नहीं हैं। जिन क्षेत्रों में अधिकारियों, कर्मचारियों ने सुधार किया है उन क्षेत्रों को इस प्रक्रिया से बाहर रखा जाएगा।

हेमंत सोरेन ने ...

में इंडी गठबंधन को ऐतिहासिक जीत मिली है। जेएमएम, कंाग्रेस, आरजेडी और भाकपा-माले को 81 में से 56 सीटों पर जीत मिली। इसमें जेएमएम को 34, कंाग्रेस को 16, आरजेडी को 4 और भाकपा-माले को 2 सीटें मिली हैं। इस चुनाव में भाजपा के नेतृत्व वाले राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) को 24 सीट मिली हैं। इस बार के विधानसभा के चुनाव में हेमंत सोरेन के नेतृत्व में इंडिया गठबंधन की यह बड़ी जीत है। जेएमएम का यह अब तक का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन है। हेमंत सोरेन के झारखंड के मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते ही राजनीतिक इतिहास में उनके नाम कई रिकॉर्ड दर्ज हो गए। वह राज्य के 24 वर्षों के अब तक के इतिहास में चार बार मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने वाले पहले राजनेता बन गए। इसके पहले उनके पिता शिबू सोरेन और भारतीय जनता पार्टी के अर्जुन मुंडा तीन-तीन बार मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठ चुके हैं। हेमंत सोरेन ने पहली बार 13 जुलाई 2013 को झामुमो, कंाग्रेस, राजद गठबंधन के सहयोग से बनी सरकार में मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। इस सरकार का कार्यकाल 23 दिसम्बर 2014 तक था। दूसरी बार उन्होंने 29 दिसम्बर 2019 को शपथ ली थी। 31 जनवरी 2024 को ईडी की गिरफ्तारी के बाद उन्हें मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा था। जमानत पर बाहर आने के बाद 4 जुलाई 2024 को उन्होंने तीसरी बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। हेमंत सोरेन का नाम झारखंड के ऐसे पहले मुख्यमंत्री के तौर पर दर्ज हो रहा है, जिन्होंने लगातार दूसरी बार सरकार में वापसी की है। बरहेट सीट से लगातार तीसरी बार जीते हैं हेमंत सोरेन ने विधानसभा चुनाव में हेमंत सोरेन ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के गमलियल हेम्ब्रम को 39,791 मतों के अंतर से हराकर बरहेट सीट पर जीत दर्ज की। इससे पहले सोरेन दो बार इसी सीट से विधानसभा का चुनाव जीत चुके हैं।

मानव तस्करी के खिलाफ...

संदेह है। इससे पहले 5 अक्टूबर को एनआईए ने आतंकवादी गतिविधियों और फंडिंग के सिलसिले में पांच राज्यों में इसी तरह की छापेमारी की थी। इन अभियानों में महाराष्ट्र, जम्मू और कश्मीर, उत्तर प्रदेश, असम और दिल्ली के स्थानों को निशाना बनाया गया और ये आतंकवादी समूह जैश-ए-मोहम्मद से जुड़े थे। एनआईए ने सुरक्षा बलों की मदद से बारामूला और जम्मू-कश्मीर के अन्य इलाकों में भी तलाशी ली थी। इसके अतिरिक्त अक्टूबर में एनआईए ने दक्षिण 24 परगना, आसनसोल, हावड़ा, नादिया और कोलकाता सहित पश्चिम बंगाल के कई जिलों में छापेमारी की।

वक्फ पर जेपीसी...

संसदीय व्यवधान कोई उपाय नहीं है बल्कि यह एक रोग है। यह हमारी नींव को कमजोर करता है और संसद को अप्रासंगिक बना देता है। हमें इसकी प्रासंगिकता सुनिश्चित करते रहना चाहिए। उन्होंने कहा कि जब हम रचनात्मक चर्चा से भटक जाते हैं, तो हम उन लाखों लोगों के विश्वास का सम्मान करने में विफल हो जाते हैं, जो हमें अपनी लोकतांत्रिक आकांक्षाओं के संरक्षक के रूप में देखते हैं।

नौसेना ने पनडुब्बी...

निर्धारित किया जा सके कि मिसाइल अपने मापदंडों पर खरी उतरी या नहीं। बंगाल की खाड़ी में मध्यम दूरी की मिसाइल परीक्षण के लिए भारत ने सार्वजनिक क्षेत्र चेतावनी और एयरमैन को नोटिस (नोटम) जारी किया था। नोटम में कहा था कि भारत 27 से 30 नवंबर के बीच 3,500 किलोमीटर या उससे अधिक की दूरी पर लक्ष्य को मारने वाली मिसाइल का परीक्षण कर सकता है। नोटम एक तरह का नोटिस है, जो विमान के पायलटों को हवाई मिशनों की सूचना देने के लिए जारी किया जाता है, ताकि उड़ान मार्ग या संभावित खतरों के बारे में सचेत किया जा सके। यह मिसाइल परीक्षण भारत के अपने सामरिक रक्षा रुख को बढ़ाने के व्यापक प्रयास का हिस्सा था। आईएनएस अरिघाट भारत के बेड़े में दूसरी परमाणु ऊर्ज़ा से चलने वाली पनडुब्बी है, जो देश की परमाणु प्रतिरोधक क्षमता को काफी मजबूत करती है। यह पनडुब्बी परमाणु-युक्त बैलिस्टिक मिसाइलों को ले जाने में सक्षम है, जिन्हें नौसेना की भाषा में एसएसबीएन के रूप में जाना जाता है। भारत की पहली परमाणु पनडुब्बी अरिहंत 750 किलोमीटर की रेंज वाली के-15 मिसाइलों से लैस है। इसके विपरीत आईएनएस अरिघाट 3,500 किलोमीटर की स्ट्राइक रेंज वाली अधिक उन्नत के-4 मिसाइलों को ले जा सकती है।

चित्रकूट के भौतिक...

करा दिया है। उन्होने कहा कि चित्रकूट के आध्यात्मिक और धार्मिक के साथ ही भौतिक विकास पर भी ध्यान दिया जा रहा है। यहां एयरपोर्ट बनकर तैयार है। इस एयरपोर्ट को और लंबा बनाया जा रहा है, जिससे कि जिससे यहां दिल्ली, लखनऊ, वाराणसी और अयोध्या से आने वाले बड़े विमान भी उतर सकें। उन्होंने कहा कि कभी यहां भगवान श्रीराम पुष्पक विमान से आए होंगे। हजारों साल बाद वो अवसर भी आएगा जब मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश के लोगों को यहां से वायुसेवा प्राप्त होगी। योगी ने अन्य विकास कार्यों की चर्चा करते हुए कहा कि बुंदेलखंड लिंक एक्सप्रेसवे के लिए जमीन अधिग्रहण का कार्य चल रहा है। उन्होंने बताया कि लालापुर स्थित महर्षि वाल्मीकि की पावन जन्मस्थली के सुंदरीकरण का कार्य हो या संत तुलसीदास की पावन जन्मस्थली, इन सभी की सुरक्षा और सुंदरीकरण का कार्य हो रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि पिछले वर्ष हमारी सरकार द्वारा जगद्गुरू रामभद्राचार्य विवि का राजकीयकरण किया गया है। इसमें सरकार के स्तर पर कुछ नये पाठ्यक्रम भी जल्द शुरू किये जाएंगे। यहां दिव्यांग के साथ ही सामान्य बच्चों को उच्च शिक्षा प्राप्त हो सकेगी। उन्होंने डिफेंस कॉरिडोर, इंडस्ट्रियल कॉरीडोर और कामता गिरी परिक्रमा के साथ ही चित्रकूट में ईको टूरिज्म के लिए रानीपुर टाइगर रिजर्व को भी संवर्धित किये जाने की बात दोहराई। मुख्यमंत्री ने कहा कि चित्रकूट में कनेक्टिविटी बढ़ाने के लिए मंदाकिनी नदी पर नया पुल बनाया जाएगा, जिससे कि आवागमन और सुगम हो सकेगा। उन्होने कहा कि यहां सड़कों के कार्यों को प्राथमिकता पर लिया गया है। इस अवसर पर प्रदेश के जल शक्ति मंत्री स्वतंत्रदेव सिंह सहित बड़ी संख्या में साधु-संत, जनप्रतिनिधि और अधिकारी मौजूद रहे।

इजरायल की तरह हिंदुओं को भी बनाना चाहिए सनातन वैदिक राष्ट्र : नरसिंहानंद

- सनातन वैदिक राष्ट्र की रूपरेखा बनाने के लिए 19 से 21 दिसंबर तक हरिद्वार में होगा धर्म संसद
- जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद ने बांग्लादेश में जघन्य हिंदू नरसंहार पर जताया आक्रोश

कैनविज टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। आनंद भैरव घाट श्रीपंचदशनाम जूना अखाड़े से शिवशक्ति धाम डासना के पीठाधीश्वर व श्रीपंचदशनाम जूना अखाड़े के महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद गिरी महाराज ने बांग्लादेश में जघन्य हिंदू नरसंहार पर आक्रोश व्यक्त किया और भारत के हिंदुओं को बांग्लादेश व पाकिस्तान के हिंदुओं के हाल से शिक्षा लेने का आह्वान किया। साथ ही महाराजश्री ने कहा कि इजरायल की तरह हिंदुओं को भी सनातन वैदिक राष्ट्र बनाना चाहिए। जूना अखाड़े के कोठारी श्रीमहंत महाकाल गिरी व अन्य संतों के साथ महामंडलेश्वर यति नरसिंहानंद गिरी महाराज ने कहा कि बांग्लादेश में आर्मी और पुलिस के साथ मिलकर मुस्लिम समुदाय हिंदुओं का भीषण नरसंहार कर रहे हैं। इस्कॉन के निरपराध चिन्मयदास प्रभु को जेल में डालकर बांग्लादेश की सरकार ने संपूर्ण विश्व के हिंदुओं को उनकी औकात बताई है। अगर ऐसा किसी देश ने किसी यहूदी के साथ किया होता तो इजरायल उस देश पर

अब तक आक्रमण कर चुका होता और उस यहूदी को बचाकर ले गया होता। नरसिंहानंद गिरी महाराज ने कहा कि अगर हम हिंदुओं के पास भी अपना कोई राष्ट्र होता तो पाकिस्तान और बांग्लादेश सहित किसी भी देश में हिंदुओं की दुर्गति ना हुई होती। हमने असीमित साधन और बलिदान देकर श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर बनाया परंतु यह श्रीराम मंदिर मुस्लिम जिहादियों की भीड़ के द्वारा उसी दिन तोड़ दिया जाएगा जिस दिन भारत का प्रधानमंत्री कोई मुसलमान बनेगा। उन्होंने कहा कि मुस्लिमों की भयानक रूप से बढ़ती आबादी को देखते हुए यह अब ज्यादा दिन की बात नहीं है। अगर श्रीराम मंदिर के स्थान पर यह आंदोलन अगर सनातन वैदिक राष्ट्र के लिए किया जाता तो हमें लव जिहाद, गौ रक्षा, श्रीकृष्ण जन्मभूमि, काशी विश्वनाथ या संभल के हरिहर मंदिर की चिंता नहीं करनी पड़ती क्योंकि ये तो सब हमें मिल ही जाता, लेकिन हमने छोटी बातों पर तो आंदोलन किए पर असली समस्या पर कभी आवाज ही नहीं उठाई और इस अभूतपूर्व दुर्गति को प्राप्त हुए। नरसिंहानंद गिरी महाराज ने कहा कि हमें समझना चाहिए कि अब हिंदुओं की यह अंतिम शरणस्थली भारतवर्ष बहुत तेजी से शरिया कानून की ओर चल दिया है, जहां न तो कोई मंदिर बचेगा और न ही कोई मंदिरों में पूजा करने वाला। इस विषय को न तो कोई हिंदू नेता उठा रहा है, न ही कोई हिंदू धर्मगुरु और न ही कोई हिंदू संगठन उठा रहा है। इस गंभीर विषय को उठाने के लिए 19 से 21 दिसंबर को आनंद भैरव मंदिर जूना अखाड़े में तीन दिवसीय धर्म संसद का आयोजन किया जाएगा। इस दौरान जूना अखाड़े के सन्यासियों के साथ डॉ. उदिता त्यागी और यति अभयानंद भी उपस्थित थे।

वित्त मंत्री ने विशेष वित्तीय सहायता के लिए पीएम सहित सीएम का जताया आभार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

ऋषिकेश। राज्य के वित्त मंत्री प्रेमचंद अग्रवाल ने उनकी विधानसभा ऋषिकेश को विशेष वित्तीय सहायता के तहत 66 करोड़ रुपये की प्रथम किस्त जारी करने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण सहित मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार व्यक्त किया।

वित्त मंत्री अग्रवाल ने कहा कि केंद्र सरकार की ओर से उत्तराखंड को 'स्पेशल असिस्टेंस टू स्टेट फॉर कैपिटल इनवेस्टमेंट 2024 - 25 योजना' के तहत 66 करोड़ रुपये का विशेष लोन (सहायता) जारी करने पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण सहित मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार व्यक्त करते हुए अग्रवाल ने कहा कि इससे पूर्व भी केएफडब्ल्यू के वित्त पोषण से ऋषिकेश में 1800 करोड़ रुपये की धनराशि से कार्य शुरू होने जा रहा है। इसके लिए केंद्र सरकार का आभार व्यक्त किया है। बता दें कि केंद्रीय वित्त मंत्रालय में तीर्थनगरी ऋषिकेश में पर्यटन विभाग के अधीन विभिन्न परियोजनाओं के लिए योजना के तहत कुल 100 करोड़ रुपए मंजूर किए हैं, जिसमें से प्रथम किश्त के रूप में 66 करोड़ रुपए जारी किए गए हैं। जबकि दूसरी किश्त के 34 करोड़ रुपए, प्रथम चरण की सहायता 75 प्रतिशत तक खर्च करने पर जारी की जाएगी।

प्रोक्योरमेंट प्रक्रिया के तकनीकी जानकारी प्रदान करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

कैनविज टाइम्स संवाददाता

हरिद्वार। जिला मुख्यालय के विकास भवन स्थित सभागार में मुख्य विकास अधिकारी अकंक्षा कोण्डे के निर्देशन में कम्यूनिटी बेस्ड प्रोक्योरमेंट (सीबीपी) का विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम का संचालन जिला परियोजना प्रबंधक, ग्रामोत्थान परियोजना एवं समस्त जिला स्तरीय स्टाफ ने किया। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य सामुदायिक संगठनों और परियोजना कर्मचारियों को प्रोक्योरमेंट प्रक्रिया के तकनीकी और व्यावहारिक पहलुओं की जानकारी प्रदान करना था, ताकि यह प्रक्रिया अधिक पारदर्शी, कुशल और प्रभावी बन सके। प्रशिक्षण में मुख्यमंत्री उद्यमशाला योजना, समस्त विकासखंडों के ब्लॉक एमएंडई और एलसी एवं समस्त सीएलएफ के लेखाकारों ने हिस्सा लिया। इन प्रतिभागियों ने सामुदायिक स्तर पर प्रोक्योरमेंट की प्रक्रिया को बेहतर ढंग से समझने और इसे व्यावहारिक रूप से लागू करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त किया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को प्रोक्योरमेंट प्रक्रिया के विभिन्न चरणों की जानकारी दी गई। इसमें आवश्यकता निर्धारण, बजट योजना, निविदा दस्तावेज तैयार करना, बोली प्रक्रिया संचालित करना और अनुबंध निष्पादन के पहलुओं को विस्तार से समझाया गया। प्रतिभागियों को यह भी बताया गया कि प्रोक्योरमेंट प्रक्रिया में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए किन-किन नियमों और प्रक्रियाओं का पालन करना चाहिए। विशेष रूप से ई-प्रोक्योरमेंट प्रणाली का उपयोग कैसे किया जाए और इससे जुड़े फायदे, जैसे लागत नियंत्रण और त्वरित क्रियान्वयन पर भी चर्चा की गई। कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण पहलू सामुदायिक भागीदारी को बढ़ावा देना था। प्रशिक्षण में

जोर दिया गया कि कैसे क्लस्टर लेवल फ़ेडरेशन (सीएलएफ) जैसी सामुदायिक संस्थाएं प्रोक्योरमेंट प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल हो सकती हैं। महिलाओं और समाज के वंचित वर्गों की भागीदारी को प्रोत्साहित करने पर विशेष ध्यान दिया गया, ताकि यह प्रक्रिया अधिक समावेशी बन सके। प्रशिक्षण के दौरान सजीव उदाहरणों और केस स्टडी का उपयोग किया गया, जिससे प्रतिभागियों को प्रोक्योरमेंट की प्रक्रिया को व्यावहारिक रूप से समझने में मदद मिली। प्रतिभागियों ने समूह अभ्यास में भाग लिया और प्रोक्योरमेंट से संबंधित समस्याओं का समाधान निकालने के लिए अपने विचार प्रस्तुत किए। इस प्रकार, यह कार्यक्रम केवल एक प्रशिक्षण नहीं, बल्कि एक संवादात्मक सत्र भी साबित हुआ, जहां प्रतिभागियों ने आपसी विचारों का आदान-प्रदान किया। इस प्रशिक्षण से प्रतिभागियों को कई लाभ प्राप्त हुए। सबसे पहले, उन्होंने प्रोक्योरमेंट प्रक्रिया के तकनीकी और प्रशासनिक पहलुओं की गहरी समझ प्राप्त की। इसके अलावा, सामुदायिक संगठनों को सशक्त बनाने और वित्तीय पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए उपयोगी रणनीतियां सीखी गईं। प्रशिक्षण ने प्रतिभागियों को यह भी सिखाया कि कैसे वे प्रोक्योरमेंट प्रक्रिया में सुधार करके इसे अधिक कुशल और प्रभावशाली बना सकते हैं।

गंगा संरक्षण समिति की बैठक में गंगा की सहायक नदियों की स्वच्छता की हुई समीक्षा

कैनविज टाइम्स संवाददाता

गोपेश्वर। जिला प्रशासन चमोली की ओर से गुरुवार को जिला गंगा संरक्षण समिति की मासिक बैठक आयोजित की गई। बैठक में जनपद में गंगा संरक्षण के लिए सहायक नदियों की स्वच्छता को लेकर किए जा रहे कार्यों की समीक्षा की गई। बैठक में परियोजना निदेशक आनंद सिंह भाकुनी और बदरीनाथ वन प्रभाग के प्रभागीय वनाधिकारी सर्वेश दुबे ने अधिकारियों को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। बैठक में परियोजना अधिकारी ने कर्णप्रयाग में निर्मित एसटीपी को शीघ्र हस्तांतरित करने की बात कही। इस दौरान उन्होंने नगर क्षेत्रों में किए जा रहे डोर-टू-डोर कलेक्शन को सोर्स सेग्रिगेट करने साथ ही कूड़ा वाहनों में भी जैविक और अजैविक कचरे को अलग-अलग रखने की व्यवस्था करने के निर्देश दिए। इस दौरान एंटी लिटरिंग एंड एंटी स्पिटिंग और प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन के तहत नियमित निरीक्षण करने के बात कही। बदरीनाथ वन प्रभाग के प्रभागीय वनाधिकारी और वन

विभाग के नोडल अधिकारी सर्वेश दूबे ने जिले में प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की ओर से होटलों को एसटीपी निर्माण के लिए दिए नोटिस के क्रम में पत्राचार कर कार्रवाई करने के निर्देश दिए। साथ ही उन्होंने नगर पालिका, पेयजल निगम, जल संस्थान, कृषि, सिंचाई, वन विभाग, मनरेगा और स्वजल के अधिकारियों को जिला गंगा प्लान के तहत आगामी पांच वर्षों में किए जाने वाले कार्यों की प्राथमिकता के आधार पर कार्य योजना तैयार करने के निर्देश दिए। उन्होंने अधिकारियों को एक माह के भीतर कार्य योजना बनाने की बात कही। साथ ही उन्होंने पेयजल निगम के अधिकारियों को हल्दापानी भूस्खलन प्रभावित क्षेत्र में स्थित आवासीय क्षेत्र में सीवर निकासी की कार्य योजना तैयार करने के भी निर्देश दिए। इस मौके पर नमामि गंगे के जिला परियोजना अधिकारी गोविंद सिंह ने बताया कि कर्णप्रयाग में निर्मित एसटीपी के हस्तांतरण को लेकर जल संस्थान की ओर से सहमति प्रदान की जा चुकी है। सभी एसटीपी जल्द जल संस्थान को हस्तांतरित किए जाएंगे, वहीं उन्होंने बताया कि जनपद में एंटी लिटरिंग एंड स्पिंटिंग एक्ट में कुल 54 सामने आए हैं। जिन पर कार्रवाई करते हुए पालिका और पंचायतों की ओर से एक लाख 64 हजार चार सौ रुपये का अर्थदंड वसूला गया है। जबकि प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन के उल्लंघन के 37 मामलों में कार्रवाई की गई है, वहीं जनपद में प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण अधिनियम का उल्लंघन करने वाले 26 होटलों की सूची प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को सौंपी गई है, जिसमें बोर्ड की ओर से कार्रवाई की जा रही है। इस मौके पर एसीएमओ डॉ. एमएस खाती, जल संस्थान के अधिशासी अभियंता एसके श्रीवास्तव, महाप्रबंधक उद्योग विभाग बीएस कुंवर आदि मौजूद थे।

महिलाओं पर एसिड अटैक करने वाले दो इनामी आरोपित गिरफ्तार

हरिद्वार। जनपद की मंगलौर कोतवाली पुलिस ने महिलाओं पर एसिड अटैक करने और जान से मारने की धमकी देने वाले दो इनामी आरोपित को गिरफ्तार किया है। दोनों पर पांच-पांच हजार रुपये इनाम था। दरअसल, गत 26 नवम्बर को कोतवाली मंगलौर में एक व्यक्ति ने अपनी पुत्री पर तेजाब फेंकने व झड़प के दौरान उसकी पत्नी और भाभियों के हाथ-पैर एवं कपड़ों पर भी तेजाब गिरने के संबंध में तहरीर देकर मुकदमा दर्ज कराया था। पीड़ित ने आरोप लगाया था कि आरोपितों ने उसकी पुत्री की लज्जा भंग कर उनके साथ गाली-गलौज कर जान से मारने की धमकी भी दी। तहरीर पर पुलिस ने आरोपितों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर उनकी तलाश शुरू कर दी थी। आरोपित पुलिस से बचने के लिए लगातार ठिकाने बदल रहे थे। एसएसपी प्रमेंद्र डोभाल ने आरोपितों पर पांच-पांच हजार रुपये का इनाम भी घोषित किया था।

दस दिवसीय शिल्प मेला शुक्रवार से

कैनविज टाइम्स संवाददाता

चंडीगढ़। उत्तर क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र और चंडीगढ़ कला एवं संस्कृति विभाग के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित वार्षिक 10-दिवसीय चंडीगढ़ शिल्प मेले की शुरुआत चंडीगढ़ के प्रशासक एवं पंजाब के राज्यपाल गुलाबचंद कटारिया शुक्रवार को करेंगे। कलाग्राम में आयोजित मेले के उद्घाटन समारोह के बाद एक संगीतमय प्रस्तुति 'रिदम ऑफ इंडिया' होंगी, उसके बाद 'कलर ऑफ इंडिया' थीम पर 14 राज्यों के लोक नृत्यों के संयोजन से नृत्य प्रस्तुति होगी, जिसके बाद पंजाबी सूफी गायक कंवर ग्रेवाल की सूफियाना गायकी का कार्यक्रम होगा। दस दिनों तक मेले में लोक कलाओं पर आधारित कार्यक्रम दिनभर चलेंगे तथा शाम को नामचीन गायकों के सुरों की महफिल सजेगी। इस दौरान बॉलीवुड के गायक सुरेश वाडेकर और अमित कुमार भी अपनी प्रस्तुति देंगे। इस अलावा पंजाबी गायक गुरनाम भुल्लर, कुलविंदर बिल्ला, फिरोज़ खान और हरभजन मान के साथ ही हिमाचल प्रदेश की गायिका गीता भारद्वाज और काकू राम ठाकुर, जम्मू से चमन लहरी, कश्मीर से गुलज़ार गनई, उत्तराखंड के गायक इंदर आर्य भी प्रस्तुति देंगे। उद्घाटन समारोह में लोक कला साधक (लाइफटाइम अचीवमेंट) अवॉर्ड भी दिए जाएंगे । इस बार ल्लोक संगीतङ्क और ल्लोक नृत्यङ्क श्रेणी में दो दो लोगों का संयुक्त रूप से अवॉर्ड के लिये चयन किया गया है। ल्लोक नृत्यङ्क के लिये राजस्थान की तेरहताल की कलाकार दुर्गा देवी और हिमाचल प्रदेश के बालक राम ठाकुर और ल्लोक संगीतङ्क के क्षेत्र में पंजाब के देस राज लचकानी और जम्मू और कश्मीर की गूजरी गायक ल्लबेगम जानङ्क को लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड दिया जायेगा। इसके अलावा इसी साल संस्थापित दो युवा अवॉर्ड भी दिये जायेंगे । इस वर्ष चयन समिति ने युवा अवॉर्ड के लिये हरियाणा के मनोज जाले और उत्तराखंड के सुधांशु बिष्ट को चयनित किया है। मेले में एक विरासती स्ट्रीट भी विकसित की गयी है, जिसमें उत्तर क्षेत्र में आने वाले राज्यों की विरासती शिल्प का सीधा प्रदर्शन होगा। उसके साथ ही पंजाब के गांव की झलक भी प्रस्तुत की जा रही है। मेले में सुबह के समय उन स्कूली छात्र छात्राओं के लिये प्रवेश निःशुल्क होगा, जो स्कूल के समूह के साथ आयेंगे। बच्चों के लिये लोक कलाकारों की प्रस्तुतियां के अलावा सांस्कृतिक प्रश्नोत्तरी और कई अन्य गतिविधियां भी होंगी। मेले के दौरान चंडीगढ़ संगीत नाटक अकादमी चंडीगढ़ के स्थानीय युवा प्रतिभाओं के लिये चुनिंदा दिनों में एक घंटे के कार्यक्रम का प्रबंध करेगी। चंडीगढ़ ललित कला अकादमी प्रदर्शनी लगायेगी तथा 'लाइव पेंटिंग' के साथ ही फोटोग्राफी प्रतियोगिता आयोजित कर रही है।

जालन्धर में अंतरराष्ट्रीय ड्रग कार्टेल का भंडाफोड़ तीन किलोग्राम अफीम सहित तीन गिरफ्तार

कैनविज टाइम्स संवाददाता

जालंधर। पंजाब में जालंधर कमिश्नरेट पुलिस ने एक अंतरराष्ट्रीय मादक पदार्थ तस्करी गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए तीन तस्करों को गिरफ्तार कर उनके पास से तीन किलोग्राम अफीम जब्त की है। पुलिस आयुक्त स्वपन शर्मा ने गुरुवार को कहा कि ऑपरेशन से अंतरराष्ट्रीय वितरण के लिए अफीम की तस्करी और पैकेजिंग में शामिल तीन व्यक्तियों को गिरफ्तार किया गया। उन्होंने आगे बताया कि गत 24 नवंबर को सीआईए टीम ने माता रानी चौक पर न्यू संत नगर, भारगो कैंप, जालंधर निवासी चाहत को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से एक किलोग्राम अफीम बरामद की थी। इसके बाद भारगो कैंप पुलिस स्टेशन में एनडीपीएस एक्ट के तहत एफआईआर दर्ज की गई। आयुक्त ने कहा कि पूछताछ में दो साथियों, पवन कुमार और रणबीर सिंह की संलिप्तता का पता चला, जिन्हें बाद में उसी दिन गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने उनके पास से फिर दो किलो अतिरिक्त अफीम बरामद की। इस गिरोह पर ड्रग्स को पार्सल में पैक करके विदेश में तस्करी करने का संदेह है। पुलिस कमिश्नर स्वप्न शर्मा ने यह भी कहा कि मामले में एनडीपीएस अधिनियम की धारा 29 जोड़ी गई है, और गिरोह के आगे और पीछे के संबंधों की पहचान करने के लिए व्यापक जांच चल रही है। इस अवैध संचालन से जुड़े अन्य व्यक्तियों का पता लगाने और आगे की वसूली सुनिश्चित करने के प्रयास किए जा रहे हैं।

सरकारी चिकित्सालयों को रेफरल केन्द्र बनाकर मजाक न बनाएं: डीएम

कैनविज टाइम्स संवाददाता

देहरादून। जिलाधिकारी सविन बंसल ने कहा कि सरकारी अस्पतालों को केवल रेफरल केंद्र बनाकर मजाक न बनाया जाए। सरकारी चिकित्सालयों में मौजूद संसाधन और स्टॉफ का पूर्ण उपयोग हो, जिससे मरीजों को निजी अस्पतालों पर निर्भर न होना पड़े।जिलाधिकारी बंसल गुरुवार को ऋषिपर्णा सभागार में जनपद के सभी उप जिला चिकित्सालयों की प्रबंधन समिति की बैठक को संबोधितकर रहे थे। उन्होंने सरकारी चिकित्सालयों में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं सुनिश्चित करने पर जोर दिया।

बैठक में रेफरल मामलों की समीक्षा में जिलाधिकारी बंसल ने स्पष्ट किया कि अनावश्यक रेफरल स्वीकार नहीं किए जाएंगे। सभी चिकित्सालयों को अप्रैल से अक्टूबर 2024 तक के आईपीडी, सर्जरी, संस्थागत प्रसव और रेफरल का विस्तृत विवरण प्रस्तुत करने का निर्देश दिया गया। जिलाधिकारी ने उप जिला चिकित्सालय विकासनगर के ऑक्सीजन प्लांट की मरम्मत और प्रेमनगर चिकित्सालय के

बच्चों के आईसीयू के संचालन के लिए धनराशि मौके पर स्वीकृत की। मुख्य विकास अधिकारी को सभी चिकित्सालयों का औचक निरीक्षण करने और उपचार में कमी को चिन्हित करने का निर्देश दिया गया। बैठक में मसूरी चिकित्सालय में गायनी चिकित्सक की अनुपलब्धता पर जांच समिति गठित कर रिपोर्ट तलब की गई। साथ ही, ईएनटी चिकित्सक को तीन दिन मसूरी में सेवाएं देने के निर्देश दिए गए। प्रेमनगर चिकित्सालय में आईपीडी में कमी पर जिलाधिकारी ने सवाल उठाए और मरीजों की संख्या बढ़ाने के निर्देश दिए। उन्होंने सर्जरी के कम मामलों पर चिंता व्यक्त करते हुए सभी अस्पतालों से विस्तृत जानकारी मांगी। जिलाधिकारी ने अनुबंधित पैथोलॉजी सेंटर्स के प्रतिनिधियों की 24 घंटे उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। उन्होंने कहा कि सरकारी चिकित्सालयों में उपलब्ध स्टॉफ और संसाधनों का समुचित उपयोग कर आदर्श चिकित्सा व्यवस्था बनाई जा सकती है। उन्होंने इसे न केवल सेवा बल्कि एक पुनीत कार्य बताया। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी अभिनव शाह, मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ. संजय जैन, उप जिलाधिकारी हरिगिरि समेत संबंधित चिकित्सालयों के प्रमुख चिकित्सा अधीक्षक और प्रबन्धन समिति के सदस्य उपस्थित रहे।

भारतीय वायु सेना का एक्सपीडिशन दल हुआ रवाना

गोपेश्वर। भारतीय वायु सेना समय-समय पर एडवेंचर गतिविधियां करती रहती है। एयरफोर्स हेडक्वार्टर एडवेंचर सेल दिल्ली के तत्वावधान में गुरुवार को चमोली अलकनंदा नदी घाट से ऋषिकेश के लिए वायु सेना के विंग कमांडर विजय भट्ट के नेतृत्व में 14 वायु सैनिको और दो गाइडों का एक दल एक्सपीडिशन के लिए रवाना हुआ। यह दल तीन दिसम्बर को ऋषिकेश पहुंचेगा। व्हाइट वाटर राफ्टिंग के लिए गंगा नदी सबसे चुनौतीपूर्ण नदियों में से एक मानी जाती है। विंग कमांडर विजय भट्ट ने बताया कि वायु सेना द्वारा इस तरह के कार्यक्रम समय-समय पर कराए जाते हैं। वायु सैनिकों को एडवेंचर गतिविधियों का प्रशिक्षण दिया जाता है। जहां युवा इससे सेना में आने के लिए प्रेरित होंगे वहीं स्थानीय पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने बताया कि इससे पहले वायु सेना की ओर से लेह में और गंगा नदी में एक्सपीडीशन किए गए हैं। गाईड विवेक नेगी ने बताया कि चमोली घाट से एक्सपीडिशन प्रारम्भ हो रहा है, जिसमें वायु सैनिकों को व्हाइट वॉटर रिवर राफ्टिंग में रेस्क्यू, पैड लिंग, कैसे दूसरों को सेव करना है आदि गतिविधियों के बारे में प्रशिक्षण दिया जाएगा। उन्होंने बताया कि प्रतिदिन 25 किलोमीटर के हिसाब से सैक्शन बनाए गए हैं। एक्सपीडिशन से स्थानीय नौजवान मोटीवेट होंगे और अपने स्थानीय स्तर पर रोजगार प्राप्त कर सकेंगे।

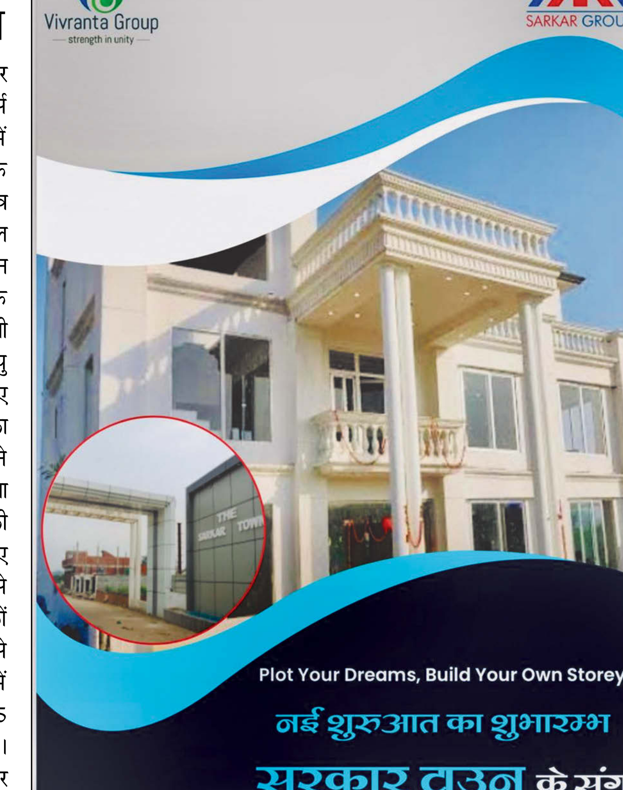

चेयरमैन एवं प्रधान सम्पादक - राकेश कुमार पाण्डेय कार्यकारी सम्पादक* - अरशद सईद खान स्टेट हेड - संदीप मिश्रा
स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक राकेश कुमार पाण्डेय द्वारा सरस्वती प्रिंटर्स वाटर वर्क्स रोड ऐशबाग, लखनऊ से मुद्रित एवं सी-46, कृष टॉवर, विभूति खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ, पिन-226010 से प्रकाशित। * इस अंक में प्रकाशित सभी समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पीआरबी एक्ट के तहत उत्तरदायी।
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय क्षेत्र के ही अधीन होंगे। फोन नं। 0522-4249333 फैक्स नं.- 4249333 e-mail : info@kanwhizztimes.com RNI NO - UPHIN/2012/42063